

## Acts

## Πράξεις Ἀποστόλων

- 1** \*<sup>Top</sup> Τὸν μὲν <sup>Emb Top</sup> πρῶτον <sup>Top</sup> λόγον ἐποίησάμην περὶ πάντων, ὦ Θεόφιλε,  
 3 ὧν ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς ποιεῖν τε καὶ διδάσκειν,  
 4 **2** ἄχρι ἧς ἡμέρας ἐντειλάμενος τοῖς ἀποστόλοις διὰ πνεύματος ἁγίου <sup>Split</sup> οὕς  
 5 ἐξελέξατο <sup>Split</sup>  
 5 ἀνελήμφθη·
- 3** οἷς καὶ παρέστησεν ἑαυτὸν ζῶντα μετὰ τὸ παθεῖν αὐτὸν <sup>Split</sup> ἐν πολλοῖς τεκμηρίοις,  
 3 δι' ἡμερῶν τεσσαράκοντα ὀπτανόμενος αὐτοῖς  
 3 καὶ λέγων τὰ περὶ τῆς βασιλείας τοῦ θεοῦ·
- 4** καὶ συναλιζόμενος  
 2 παρήγγειλεν αὐτοῖς  
 3 \* ἀπὸ Ἱεροσολύμων <sup>Split</sup> μὴ χωρίζεσθαι \*  
 3 ἀλλὰ περιμένειν τὴν ἐπαγγελίαν τοῦ πατρὸς  
 5 ἣν ἠκούσατέ μου,  
 3 **5** ὅτι <sup>Top</sup> Ἰωάννης μὲν ἐβάπτισεν ὕδατι,  
 3 <sup>Top</sup> ὑμεῖς δὲ <sup>Split</sup> ἐν πνεύματι <sup>Split</sup> βαπτισθήσεσθε <sup>Split</sup> ἀγίῳ <sup>Th+</sup> οὐ μετὰ πολλὰς ταύτας  
 3 ἡμέρας. <sup>Th+</sup>
- 6** <sup>Art</sup> Οἱ μὲν οὖν συνελθόντες  
 2 ἠρώτων αὐτὸν  
 3 λέγοντες,  
 Κύριε, εἰ <sup>Split</sup> ἐν τῷ χρόνῳ τούτῳ ἀποκαθιστάνεις τὴν βασιλείαν τῷ Ἰσραὴλ;
- 7** εἶπεν δὲ πρὸς αὐτούς,  
 Οὐχ <sup>Split</sup> ὑμῶν ἐστὶν γινῶναι χρόνους ἢ καιροὺς  
 3 οὓς <sup>Top</sup> ὁ πατὴρ <sup>Top</sup> ἔθετο ἐν τῇ ἰδίᾳ ἐξουσίᾳ,  
 2 **8** ἀλλὰ λήμψεσθε δύναμιν  
 3 ἐπελθόντος τοῦ ἁγίου πνεύματος ἐφ' ὑμᾶς  
 2 καὶ ἔσεσθέ <sup>TopGen</sup> μου μάρτυρες ἕν τε Ἱερουσαλὴμ καὶ [ἐν] πάσῃ τῇ Ἰουδαίᾳ καὶ  
 3 Σαμαρείᾳ  
 3 καὶ ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς.
- 9** καὶ <sup>Top+ T-H</sup> ταῦτα εἰπὼν <sup>T-H</sup>  
 βλεπόντων αὐτῶν  
 2 ἐπήρθη  
 καὶ <sup>Split</sup> νεφέλῃ ὑπέλαβεν αὐτὸν ἀπὸ τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν.
- 10** καὶ <sup>Sit</sup> ὡς <sup>Emb</sup> ἀτενίζοντες ἦσαν εἰς τὸν οὐρανὸν  
 3 πορευομένου αὐτοῦ, <sup>Sit</sup>  
 καὶ <sup>Split</sup> ἰδοὺ <sup>Split</sup> ἄνδρες δύο <sup>Split</sup> παρεστήκεισαν αὐτοῖς ἐν ἑσθήσεσι λευκαῖς,  
 2 **11** οἳ καὶ εἶπαν,  
 Ἄνδρες Γαλιλαῖοι, τί ἐστήκατε [ἐμ]βλέποντες εἰς τὸν οὐρανόν;  
<sup>Top+</sup> οὗτος ὁ Ἰησοῦς ὁ ἀναλημφθεὶς ἀφ' ὑμῶν εἰς τὸν οὐρανὸν <sup>Top+</sup>  
 οὕτως ἐλεύσεται  
 3 | <sup>R-Dis</sup> ὃν τρόπον ἐθεάσασθε αὐτὸν  
 4 πορευόμενον εἰς τὸν οὐρανόν. <sup>R-Dis</sup>
- 12** Τότε ὑπέστρεψαν εἰς Ἱερουσαλὴμ <sup>Split</sup> ἀπὸ ὄρους τοῦ καλουμένου Ἐλαιῶνος,  
 3 ὃ ἐστὶν ἐγγὺς Ἱερουσαλὴμ  
 4 <sup>Split</sup> σαββάτου ἔχον ὁδόν.
- 13** καὶ <sup>Sit</sup> ὅτε εἰσῆλθον, <sup>Sit</sup>  
 εἰς τὸ ὑπερῶν <sup>Split</sup> ἀνέβησαν  
 4 οὗ ἦσαν καταμένοντες,  
 3 ὃ τε Πέτρος καὶ Ἰωάννης καὶ Ἰάκωβος καὶ Ἀνδρέας, Φίλιππος καὶ Θωμᾶς,  
 3 Βαρθολομαῖος καὶ Μαθθαῖος,  
 3 Ἰάκωβος Ἀλφαίου καὶ Σίμων ὁ ζηλωτὴς καὶ Ἰούδας Ἰακώβου.

|  |      |                   |   |  |                                    |                                    |  |
|--|------|-------------------|---|--|------------------------------------|------------------------------------|--|
|  | 14   | Top+              | οἱτοὶ   | Emb  | πάντες                             | Top+                               | ἦσαν προσκαρτεροῦντες ὁμοθυμαδὸν τῇ προσευχῇ |
|  |      | 3                 | σὺν γυναιξίν καὶ Μαριάμ τῇ μητρὶ τοῦ Ἰησοῦ καὶ τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ. |  |                                    |                                    |  |
|  | 15   | Kai               | Sit Th+   | ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις                              | Sit Th+                            | ἀναστὰς                            | Th+  |
|  |      | 2                 | εἶπεν·  |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 2                 | ἦν τε ὄχλος ὀνομάτων ἐπὶ τὸ αὐτὸ                                    |  | ὡσεὶ ἑκατὸν εἴκοσι·                |                                    |  |
|  | 16   | Ἄνδρες ἀδελφοί,   | ThS+  | ἔδει πληρωθῆναι                                      | ThS+                               | τὴν γραφὴν                         |  |
|  |      | 3                 | ἣν προείπεν τὸ πνεῦμα διὰ στόματος Δαυὶδ                            |  | περὶ Ἰούδα                         |                                    |  |
|  |      | 4                 | τοῦ γενομένου ὁδηγοῦ τοῖς συλλαβοῦσιν Ἰησοῦν,                       |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 3                 | 17  | ὅτι  | κατηριθμημένος                     | ἦν ἐν ἡμῖν                         |  |
|  |      | 4                 | καὶ ἔλαχεν τὸν κλῆρον   | Th+  | τῆς διακονίας ταύτης.              | Th+                                |  |
|  | 18   | Top+              | Οὗτος μὲν οὖν ἐκτήσατο χωρίον ἐκ μισθοῦ τῆς ἀδικίας                 |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 2                 | καὶ   | πρηνῆς   | γενόμενος                          |                                    |  |
|  |      | 2                 | ἐλάκησεν μέσος  |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 2                 | καὶ ἐξεχύθη πάντα τὰ σπλάγχνα αὐτοῦ·                                |  |                                    |                                    |  |
|  | 19   | καὶ               | γνωστὸν   | ἐγένετο  | Split                              | πᾶσι τοῖς κατοικοῦσιν Ἱερουσαλὴμ,  | Split  |
|  |      | 3                 | ὥστε κληθῆναι τὸ χωρίον ἐκεῖνο τῇ ἰδίᾳ διαλέκτῳ αὐτῶν               |  | Ἀκελδαμάχ.                         |                                    |  |
|  |      | 4                 | Top+  | τοῦτ' ἔστιν  | Χωρίον Αἵματος.                    |                                    |  |
|  |      | 2                 | 20  | Γέγραπται γὰρ ἐν βίβλῳ ψαλμῶν,                       |                                    |                                    |  |
|  |      | 2                 | Γενήθητι ἡ Ἐπαυλὶς αὐτοῦ ἔρμος                                      |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 2                 | καὶ μὴ ἔστω ὁ κατοικῶν ἐν αὐτῇ.                                     |  |                                    |                                    |  |
|  | καὶ, | Top               | τὴν ἐπισκοπὴν αὐτοῦ   | Top  | λαβέτω Ἰππερός.                    |                                    |  |
|  |      | 2                 | 21  | δεῖ οὖν  |                                    |                                    |  |
|  |      | 3                 | L-Dis   | τῶν  | Emb                                | συνελθόντων ἡμῖν                   | Emb  |
|  |      | 5                 | ἄνδρων  | Emb Split  | ἐν παντὶ χρόνῳ                     |                                    |  |
|  |      | 4                 | ὃ εἰσῆλθεν καὶ ἐξῆλθεν ἐφ' ἡμᾶς ὁ κύριος Ἰησοῦς,                    |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 5                 | 22  | ἄρξάμενος ἀπὸ τοῦ βαπτίσματος Ἰωάννου ἕως τῆς ἡμέρας |                                    |                                    |  |
|  |      | 5                 | ἧς ἀνελήμφθη ἀφ' ἡμῶν,  | Emb L-Dis Split                                      |                                    |                                    |  |
|  |      | 3                 | μάρτυρα τῆς ἀναστάσεως αὐτοῦ  |  | σὺν ἡμῖν γενέσθαι                  | Th+                                | ἓνα τούτων.                                  |
|  |      | 2                 | 23  | καὶ ἔστησαν δύο,                                     |                                    |                                    |  |
|  |      | 3                 | Ἰωσήφ τὸν καλούμενον Βαρσαββᾶν                                      |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 4                 | ὃς ἐπεκλήθη Ἰούστος,  |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 3                 | καὶ Μαθθίαν.  |  |                                    |                                    |  |
|  | 24   | καὶ προσευξάμενοι |   |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 2                 | εἶπαν,  |  |                                    |                                    |  |
|  | Top  | Σὺ κύριε          | καρδιογνώστα  | πάντων,  | ἀνάδειξον                          |                                    |  |
|  |      | 3                 | ὃν  | ἐξελέξω ἐκ τούτων τῶν δύο                            | Split                              | ἓνα                                |  |
|  |      | 4                 | 25  | λαβεῖν τὸν τόπον                                     | Th+                                | τῆς διακονίας ταύτης καὶ ἀποστολῆς | Th+  |
|  |      | 5                 | ἀφ' ἧς παρέβη Ἰούδας  |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 6                 | πορευθῆναι εἰς τὸν τόπον  | Emb  | τὸν ἴδιον.                         | Emb                                |  |
|  |      | 2                 | 26  | καὶ ἔδωκαν κλήρους αὐτοῖς                            |                                    |                                    |  |
|  |      | 2                 | καὶ ἔπεσεν ὁ κλῆρος ἐπὶ Μαθθίαν                                     |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 2                 | καὶ συγκατεψηφίσθη μετὰ τῶν ἕνδεκα ἀποστόλων.                       |  |                                    |                                    |  |
|  | 2    | Καὶ               | Sit   | ἐν τῷ συμπληροῦσθαι τὴν ἡμέραν τῆς πεντηκοστῆς       | Sit                                |                                    |  |
|  |      | 2                 | ἦσαν  | Th+  | πάντες ὁμοῦ ἐπὶ τὸ αὐτό.           |                                    |  |
|  |      | 2                 | 2   | καὶ ἐγένετο ἄφνω ἐκ τοῦ οὐρανοῦ                      | ἦχος ὡσπερ φερομένης πνοῆς βιαίας· |                                    |  |
|  |      | 2                 | καὶ ἐπλήρωσεν ὅλον τὸν οἶκον  |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 3                 | οὓς ἦσαν καθήμενοι  |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 2                 | 3   | καὶ ὠφθησαν αὐτοῖς                                   |                                    |                                    |  |
|  |      | 3                 | διαμεριζόμενα   | Emb  | γλώσσαι                            | ὡσεὶ πυρὸς                         |  |
|  |      | 2                 | καὶ ἐκάθισεν ἐφ' ἓνα ἕκαστον αὐτῶν,                                 |  |                                    |                                    |  |
|  |      | 2                 | 4   | καὶ ἐπλήσθησαν                                       | Th+                                | πάντες πνεύματος ἁγίου             |  |
|  |      | 2                 | καὶ ἤρξαντο λαλεῖν  | Emb  | ἐτέραις                            | γλώσσαις                           |  |
|  |      | 3                 | καθὼς   | Top  | τὸ πνεῦμα                          | Top                                | ἐδίδου ἀποφθέγγεσθαι αὐτοῖς.                 |
|  |      | 2                 | 5   | Ἦσαν δὲ εἰς Ἱερουσαλὴμ                               |                                    |                                    |  |
|  |      | 3                 | κατοικοῦντες Ἰουδαῖοι,  |  |                                    |                                    |  |

- 4 ἄνδρες εὐλαβεῖς ἀπὸ παντὸς ἔθνους τῶν ὑπὸ τὸν οὐρανόν.
- 6 γενομένης δὲ <sup>Th+</sup> τῆς φωνῆς ταύτης <sup>Th+</sup>  
 2 συνήλθεν τὸ πλήθος  
 2 καὶ συνεχύθη,  
 3 ὅτι ἤκουον εἰς ἕκαστος  
 4 τῇ ἰδίᾳ διαλέκτῳ λαλούντων αὐτῶν.
- 7 ἐξίσταντο δὲ  
 2 καὶ ἐθαύμαζον  
 3 λέγοντες,  
 Οὐχ ἰδοὺ <sup>Top+</sup> ἅπαντες οὗτοί <sup>Top+</sup> εἰσιν οἱ λαοῦντες <sup>Γαλιλαῖοι;</sup>
- 8 καὶ πῶς <sup>Top</sup> ἡμεῖς ἀκούομεν ἕκαστος τῇ ἰδίᾳ διαλέκτῳ ἡμῶν  
 4 ἐν ᾗ ἐγεννήθημεν;  
 3 9 Πάρθοι καὶ Μῆδοι καὶ Ἑλαμίται καὶ οἱ κατοικοῦντες τὴν Μεσοποταμίαν,  
 3 Ἰουδαίαν τε καὶ Καππαδοκίαν, Πόντον καὶ τὴν Ἀσίαν,  
 3 10 Φρυγίαν τε καὶ Παμφυλίαν, Αἴγυπτον καὶ τὰ μέρη τῆς Λιβύης τῆς κατὰ  
 Κυρήνην,  
 3 καὶ οἱ ἐπιδημοῦντες Ῥωμαῖοι,  
 3 11 Ἰουδαῖοί τε καὶ προσήλυτοι, Κρήτες καὶ Ἄραβες,  
 2 ἀκούομεν  
 3 λαλούντων αὐτῶν ταῖς ἡμετέραις γλώσσαις <sup>τὰ μεγαλεῖα τοῦ θεοῦ.</sup>
- 12 ἐξίσταντο δὲ <sup>Th+</sup> πάντες  
 2 καὶ διηπόρουν,  
 3 <sup>Top</sup> ἄλλος <sup>πρὸς ἄλλον</sup> λέγοντες,  
 Τί θέλει <sup>Th+</sup> τοῦτο  
 3 εἶναι;
- 13 <sup>Top</sup> ἕτεροι δὲ διαχλευάζοντες  
 2 ἔλεγον  
 ὅτι <sup>Emb</sup> Γλεύκουσ μεμεστωμένοι εἰσίν.
- 14 Σταθεῖς δὲ ὁ Πέτρος σὺν τοῖς ἑνδεκά  
 2 ἐπήρην τὴν φωνὴν αὐτοῦ  
 2 καὶ ἀπεφθέγγετο αὐτοῖς,  
 Ἄνδρες Ἰουδαῖοι καὶ οἱ κατοικοῦντες Ἱερουσαλήμ <sup>Emb</sup> πάντες,  
 Cata Emb τοῦτο ὑμῖν γνωστὸν ἔστω  
 2 καὶ ἐνωτίσασθε τὰ ῥήματά μου.
- 15 οὐ γὰρ ὡς ὑμεῖς <sup>ὑπολαμβάνετε;</sup>  
<sup>Top+</sup> οὗτοι <sup>μεθύουσιν;</sup>  
 2 ἔστιν γὰρ ὥρα τρίτη τῆς ἡμέρας,
- 16 ἀλλὰ <sup>Top+</sup> τοῦτό ἐστιν τὸ εἰρημένον διὰ τοῦ προφήτου Ἰαήλ,  
 2 17 Καὶ ἔσται ἐν ταῖς ἐσχάταις ἡμέραις,  
 2 λέγει ὁ θεός,  
 2 ἔξεω ἀπὸ τοῦ πνεύματός μου ἐπὶ πᾶσιν σάρκα  
 2 καὶ προφητεύσουσιν οἱ υἱοὶ ὑμῶν καὶ αἱ θυγατέρες ὑμῶν  
 καὶ <sup>Top</sup> οἱ νεανίσκοι ὑμῶν <sup>Top</sup> ὄρασεις ὄψονται  
 καὶ <sup>Top</sup> οἱ πρεσβύτεροι ὑμῶν <sup>Top</sup> ἐνυπνίαις ἐνυπνιασθήσονται
- 18 καὶ γὰρ ἐπὶ τοὺς οὐλοὺς μου καὶ ἐπὶ τὰς οὐλάς μου ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἔξεω  
 3 ἀπὸ τοῦ πνεύματός μου,  
 2 καὶ προφητεύουσιν.
- 19 καὶ ὄψω τέρατα ἐν τῷ οὐρανῷ ἄνω  
 3 καὶ σημεῖα ἐπὶ τῆς γῆς κάτω,  
 4 <sup>R-Dis</sup> αἶμα καὶ πῦρ καὶ ἀτμίδα καπνοῦ; <sup>R-Dis</sup>  
 20 <sup>Top</sup> ὁ ἥλιος <sup>Top</sup> μεταστραφήσεται εἰς ἄκρος  
 4 καὶ ἡ σελήνη εἰς αἶμα  
 3 πρὶν ἔλθειν ἡμέραν κυρίου τὴν μεγάλην καὶ ἐπιφανῆ  
 2 21 καὶ ἔσται

- Top **πᾶς ὃς ἂν ἐπικαλέσῃται τὸ ὄνομα κυρίου** Top **σωθήσεται.**
- 22** Ἄνδρες Ἰσραηλίται, ἀκούσατε **τὸς λόγους τούτους.**  
L-Dis Ἰησοῦν τὸν Ναζωραῖον, ἄνδρα ἀποδεδειγμένον ἀπὸ τοῦ θεοῦ εἰς ὑμᾶς δυνάμεσι καὶ  
τέρασι καὶ σημείοις  
3 οἷς ἐποίησεν δι' αὐτοῦ ὁ θεὸς ἐν μέσῳ ὑμῶν  
4 καθὼς Top αὐτοὶ οἶδατε, L-Dis
- 23** Top+ τοῦτον **τῇ ὠρισμένῃ βουλῇ καὶ προγνώσει τοῦ θεοῦ** Emb ἔκδοτον διὰ χειρὸς  
ἀνόμων Top+  
προσπήξαντες  
2 ἀνείλατε,  
**24** ὃν Top ὁ θεὸς Top ἀνέστησεν  
3 λύσας τὰς ὠδύνας τοῦ θανάτου,  
4 καθότι οὐκ ἦν δυνατὸν  
5 κρατεῖσθαι αὐτὸν ὑπ' αὐτοῦ.
- 25** Top Δαυὶδ γὰρ λέγει εἰς αὐτόν,  
2 **Προσώμην τὸν κύριον ἑνώπιόν μου διὰ πιντός.**  
3 **ὅτι ἐν δεξιᾷ μου ἔστιν**  
4 **ἵνα μὴ σαλευθῶ.**
- 26** Th+ **οὐα τοῦτο** Th+ **ἠὲρράνθη ἡ καρδία μου**  
2 **καὶ ἠγαλλιάσατο ἡ γλῶσσά μου,**  
2 **ἵτι δέ** Top **καὶ ἡ σὰρξ μου** Top **κατασκηνώσει ἐπ' ἐλπίδι.**  
3 **27 ὅτι οὐκ ἐγκαταλείψεις τὴν ψυχὴν μου εἰς ἄδην**  
4 **οὐδὲ δώσεις τὸν θρόνόν σου**  
5 **εἶδεν διαφθοράν.**  
2 **28 ἐγνώρισάς μοι δόους ζωῆς**  
2 **πληρώσεις με κῆρσοσύνης μετὰ τοῦ προσώπου σου.**
- 29** Ἄνδρες ἀδελφοί, ἐξὸν  
3 εἰπεῖν μετὰ παρησίας πρὸς ὑμᾶς περὶ τοῦ πατριάρχου Δαυὶδ  
3 ὅτι καὶ ἐτελεύτησεν καὶ ἐτάφη,  
4 καὶ Top τὸ μνήμα αὐτοῦ Top ἔστιν ἐν ἡμῖν ἄχρι τῆς ἡμέρας ταύτης.
- 30** προφήτης οὖν ὑπάρχων,  
καὶ εἰδὼς  
3 ὅτι ὄρκῳ ὤμοσεν αὐτῷ ὁ θεὸς  
4 **ἐκ καρποῦ τῆς δσφύος αὐτοῦ καθίσει ἐπὶ τὸν θρόνον αὐτοῦ,**
- 31** προῖδὼν  
2 ἐλάλησεν περὶ τῆς ἀναστάσεως τοῦ Χριστοῦ  
3 ὅτι **οὔτε ἐγκατελείφθη εἰς ἄδην**  
4 **οὔτε** Top **ἡ σὰρξ αὐτοῦ** Top **εἶδεν διαφθοράν.**
- 32** Top+ τοῦτον τὸν Ἰησοῦν Top+ ἀνέστησεν ὁ θεός,  
οὗ Top πάντες ἡμεῖς Top ἐσμεν μάρτυρες·  
**33** τῇ δεξιᾷ οὖν τοῦ θεοῦ ὑψωθεὶς,  
**τήν τε** ἐπαγγελίαν τοῦ πνεύματος τοῦ ἁγίου λαβὼν παρὰ τοῦ πατρὸς,  
2 ἐξέχεεν Th+ τοῦτο  
3 ὁ Top ὑμεῖς [καὶ] βλέπετε καὶ ἀκούετε. Th+
- 34** οὐ γὰρ Δαυὶδ ἀνέβη εἰς τοὺς οὐρανοὺς,  
2 λέγει δὲ αὐτός,  
2 **Εἶπεν [ὁ] κύριος τῷ κυρίῳ μου,**  
3 **Κάθου ἐν δεξιᾷ μου,**  
4 **35 ἵνα ἂν θῶ τοὺς ἐχθρούς σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου.**
- 36** ἀσφαλῶς οὖν γινωσκέτω πᾶς οἶκος Ἰσραὴλ  
3 ὅτι **καὶ κύριον** αὐτὸν **καὶ Χριστὸν** Split **ἐποίησεν ὁ θεός,**  
4 **τοῦτον τὸν Ἰησοῦν** R-Dis Th+  
5 ὃν Top ὑμεῖς **ἑσταυρώσατε.** R-Dis Th+
- 37** Ἀκούσαντες δὲ

2 κατενύγησαν τὴν καρδίαν  
 2 εἰπόν τε πρὸς τὸν Πέτρον καὶ τοὺς λοιποὺς ἀποστόλους,  
 Τί ποιήσωμεν, ἄνδρες ἀδελφοί;  
 38 <sup>Top+</sup> Πέτρος δὲ πρὸς αὐτούς,  
 2 Μετανοήσατε, [φησίν,]  
 2 καὶ βαπτισθήτω ἕκαστος ὑμῶν ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ εἰς ἄφεσιν τῶν  
 ἁμαρτιῶν ὑμῶν;  
 2 καὶ λήψεσθε τὴν δωρεὰν τοῦ ἁγίου πνεύματος.  
 39 ὑμῖν γάρ ἐστιν ἡ ἐπαγγελία <sup>Split</sup> καὶ τοῖς τέκνοις ὑμῶν καὶ πᾶσιν τοῖς εἰς μακρὰν, <sup>Split</sup>  
 3 ὅσους ἂν προσκαλέσῃται κύριος ὁ θεὸς ἡμῶν.  
 40 ἑτέροις τε λόγους πλείοσιν διεμαρτύρατο  
 2 καὶ παρεκάλει αὐτούς  
 3 λέγων,  
 2 Σώθητε ἀπὸ τῆς γενεᾶς τῆς σκολιᾶς ταύτης.  
 41 <sup>Top</sup> οἱ μὲν οὖν <sup>Top</sup> ἀποδεξάμενοι τὸν λόγον αὐτοῦ <sup>Top</sup> ἐβαπτίσθησαν  
 2 καὶ προσετέθησαν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ψυχὰι ὡσεὶ τρισχίλιαι.  
 2 42 ἦσαν δὲ προσκαρτεροῦντες τῇ διδαχῇ τῶν ἀποστόλων καὶ τῇ κοινωνίᾳ,  
 3 τῇ κλάσει τοῦ ἄρτου καὶ ταῖς προσευχαῖς.  
 2 43 Ἐγένετο δὲ πάση ψυχῇ φόβος,  
 πολλά τε τέρατα καὶ σημεῖα διὰ τῶν ἀποστόλων ἐγένετο.  
 44 <sup>Top</sup> πάντες δὲ <sup>Top</sup> οἱ πιστεύοντες <sup>Top</sup> ἦσαν ἐπὶ τὸ αὐτὸ  
 2 καὶ εἶχον ἅπαντα κοινὰ  
 45 καὶ τὰ κτήματα καὶ τὰς ὑπάρξεις ἐπίπρασκον  
 2 καὶ διεμέριζον <sup>Th+</sup> αὐτὰ πᾶσιν  
 3 καθότι ἂν <sup>Top</sup> τις <sup>Incorp</sup> χρεῖαν εἶχεν·  
 46 <sup>Sit</sup> καθ' ἡμέραν <sup>Sit</sup> τε προσκαρτεροῦντες ὁμοθυμαδὸν ἐν τῷ ἱερῷ,  
 κλῶντές τε κατ' οἶκον ἄρτον,  
 2 μετελάμβανον τροφῆς ἐν ἀγαλλιάσει καὶ ἀφελότητι καρδίας  
 3 47 αἰνοῦντες τὸν θεὸν  
 3 καὶ ἔχοντες χάριν πρὸς ὅλον τὸν λαόν.  
<sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> κύριος προσετίθει τοὺς σωζομένους καθ' ἡμέραν ἐπὶ τὸ αὐτό.  
 3 <sup>Top+</sup> Πέτρος δὲ <sup>Top+</sup> καὶ Ἰωάννης <sup>Top+</sup> ἀνέβαινον εἰς τὸ ἱερόν ἐπὶ τὴν ὥραν τῆς προσευχῆς  
 τὴν ἐνάτην.  
 2 καὶ τις ἀνὴρ <sup>Emb</sup> χωλὸς ἐκ κοιλίας μητρὸς αὐτοῦ <sup>Emb</sup> ὑπάρχων ἐβαστάζετο,  
 3 ὃν ἐτίθουν καθ' ἡμέραν πρὸς τὴν θύραν τοῦ ἱεροῦ τὴν λεγομένην Ὠραίαν  
 4 τοῦ αἰτεῖν ἐλεημοσύνην παρὰ τῶν εἰσπορευομένων εἰς τὸ ἱερόν·  
 3 ὃς ἰδὼν <sup>Th+</sup> Πέτρον καὶ Ἰωάννην <sup>Th+</sup> μέλλοντας εἰσεῖναι εἰς τὸ ἱερόν,  
 2 ἠρώτα  
 3 ἐλεημοσύνην λαβεῖν.  
 4 ἀτενίσας δὲ <sup>Th+</sup> Πέτρος εἰς αὐτὸν σὺν τῷ Ἰωάννῃ  
 2 εἶπεν,  
 2 Βλέψον εἰς ἡμᾶς.  
 5 <sup>Art</sup> ὁ δὲ ἐπέιχεν αὐτοῖς  
 3 προσδοκῶν  
 4 τι παρ' αὐτῶν λαβεῖν.  
 2 6 εἶπεν δὲ <sup>Th+</sup> Πέτρος,  
 Ἄργυριον καὶ χρυσίον οὐχ ὑπάρχει μοι,  
<sup>L-Dis</sup> ὃ δὲ <sup>L-Dis</sup> ἔχω τοῦτό σοι δίδωμι·  
 ἐν τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Ναζωραίου [ἔγειρε καὶ] περιπάτει.  
 7 καὶ πιάσας αὐτὸν τῆς δεξιᾶς χειρὸς  
 2 ἤγειρεν αὐτόν·  
 παραχρῆμα δὲ ἑστερέωθησαν αἱ βάσεις αὐτοῦ καὶ τὰ σφυδρά,  
 8 καὶ ἐξαλλόμενος  
 2 ἔστη

- 2 καὶ περιεπάτει  
2 καὶ εἰσῆλθεν σὺν αὐτοῖς εἰς τὸ ἱερὸν  
3 περιπατῶν καὶ ἀλλόμενος καὶ αἰνῶν τὸν θεόν.  
2 **9** καὶ εἶδεν πᾶς ὁ λαὸς αὐτὸν  
3 **περιπατοῦντα καὶ αἰνοῦντα τὸν θεόν·**  
2 **10** ἐπεγίνωσκον δὲ αὐτὸν  
3 ὅτι <sup>Top</sup> αὐτὸς ἦν ὁ <sup>Emb</sup> πρὸς τὴν ἐλεημοσύνην <sup>Emb</sup> καθήμενος ἐπὶ τῇ Ὠραία Πύλῃ  
τοῦ ἱεροῦ  
2 καὶ ἐπλήσθησαν θάμβους καὶ ἐκστάσεως ἐπὶ τῷ συμβεβηκότι αὐτῷ.  
**11** Κρατοῦντος δὲ αὐτοῦ τὸν Πέτρον καὶ τὸν Ἰωάννην  
2 συνέδραμεν πᾶς ὁ λαὸς πρὸς αὐτοὺς ἐπὶ τῇ στοᾷ τῇ καλουμένῃ Σολομώντος  
3 ἔκθαμβοι.  
**12** ἰδὼν δὲ ὁ Πέτρος  
2 ἀπεκρίνατο πρὸς τὸν λαόν,  
**Ἄνδρες Ἰσραηλῖται, τί θαυμάζετε** <sup>Th+</sup> ἐπὶ τούτῳ <sup>Th+</sup>  
**ἢ ἡμῖν** τί ἀπενίζετε  
3 ὡς <sup>Emb</sup> ἰδίᾳ δυνάμει ἢ εὐσεβείᾳ <sup>Emb</sup> πεποιηκόσιν τοῦ περιπατεῖν αὐτόν;  
**13** <sup>Top</sup> **ὁ θεὸς Ἀβραὰμ καὶ [ὁ θεός] Ἰσαὰκ καὶ [ὁ θεός] Ἰακώβ,**  
**ὁ θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν,** <sup>Top</sup> ἐδόξασεν τὸν παῖδα αὐτοῦ Ἰησοῦν  
3 ὃν <sup>Top</sup> ὑμεῖς μὲν παρεδώκατε καὶ ἠρνήσασθε κατὰ πρόσωπον Πιλάτου,  
4 κρίναντος ἐκείνου  
5 ἀπολύειν·  
**14** <sup>Top</sup> ὑμεῖς δὲ **τὸν ἅγιον καὶ δίκαιον** ἠρνήσασθε  
2 καὶ ἠτήσασθε  
3 **ἄνδρα φονέα** χαρισθῆναι ὑμῖν,  
**15** **τὸν δὲ ἀρχηγὸν τῆς ζωῆς** ἀπεκτείνετε  
ὃν <sup>Top</sup> ὁ θεὸς <sup>Top</sup> ἠγείρεν ἐκ νεκρῶν,  
οὗ <sup>Top</sup> ἡμεῖς **μάρτυρες** ἐσμεν.  
**16** καὶ **ἐπὶ τῇ πίστει τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ** <sup>Th+</sup> τοῦτον  
3 ὃν θεωρεῖτε καὶ οἴδατε, <sup>Th+</sup> ἑστερέωσεν τὸ ὄνομα αὐτοῦ,  
καὶ <sup>Top</sup> ἡ πίστις ἢ δι' αὐτοῦ <sup>Top</sup> ἔδωκεν αὐτῷ <sup>Th+</sup> τὴν ὀλοκληρίαν ταύτην <sup>Th+</sup> ἀπέναντι πάντων  
ὑμῶν.  
**17** καὶ <sup>Sit</sup> νῦν, ἀδελφοί, οἶδα  
3 ὅτι **κατὰ ἄγνοιαν** ἐπράξατε <sup>R-Dis</sup> ὡπερ καὶ οἱ ἄρχοντες ὑμῶν <sup>R-Dis</sup>  
**18** <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> θεός, **ἃ προκατήγγειλεν διὰ στόματος πάντων τῶν προφητῶν**  
3 **παθεῖν τὸν Χριστὸν αὐτοῦ,** ἐπλήρωσεν οὕτως.  
2 **19** μετανοήσατε οὖν  
2 καὶ ἐπιστρέψατε  
4 εἰς τὸ ἐξαλειφθῆναι <sup>TopGen</sup> ὑμῶν τὰς ἁμαρτίας,  
3 **20** ὅπως ἂν ἔλθωσιν καιροὶ ἀναψύξεως ἀπὸ προσώπου τοῦ κυρίου  
4 καὶ ἀποστείλῃ τὸν προκεχειρισμένον ὑμῖν <sup>App</sup> Χριστὸν Ἰησοῦν, <sup>App</sup>  
2 **21** ὃν δεῖ οὐρανὸν μὲν δέξασθαι ἄχρι χρόνων ἀποκαταστάσεως πάντων  
3 ὧν ἐλάλησεν ὁ θεὸς διὰ στόματος τῶν ἁγίων ἀπ' αἰῶνος <sup>Split</sup> αὐτοῦ <sup>Split</sup> προφητῶν.  
**22** <sup>Top</sup> Μωϋσῆς μὲν εἶπεν  
ὅτι **Προφήτην ἡμῖν ἀναστήσει κύριος ὁ θεὸς ὑμῶν ἐκ τῶν ἀδελφῶν ὑμῶν** <sup>Split</sup> **ὡς ἐγώ** <sup>Split</sup>  
<sup>Top</sup> **αὐτοῦ ἀκούσεσθε κατὰ πάντα**  
3 **ὅσα ἐγὼ κλήσῃ πρὸς ὑμᾶς.**  
2 **23** **ἔσται δὲ**  
<sup>Top</sup> **πᾶσα ψυχή ἧτις ἂν μὴ ἀκούσῃ τοῦ προφήτου ἐκείνου** <sup>Top</sup> **ἐξολοθρευθήσεται ἐκ τοῦ λαοῦ.**  
**24** καὶ πάντες δὲ **οἱ προφῆται ἀπὸ Σαμουὴλ καὶ τῶν καθεξῆς ὅσοι ἐλάλησαν** καὶ  
κατήγγειλαν  
3 <sup>Th+</sup> τὰς ἡμέρας ταύτας. <sup>Th+</sup>  
**25** <sup>Top</sup> ὑμεῖς ἐστε οἱ υἱοὶ τῶν προφητῶν καὶ τῆς διαθήκης  
3 ἧς διέθετο ὁ θεὸς πρὸς τοὺς πατέρας ὑμῶν

|            |         |  |
|------------|---------|--|
|            | 4       | λέγων πρὸς Ἀβραάμ,   |
| <b>Καὶ</b> | Top     | <b>ἐν τῷ σπέρματί σου</b>  |
|            | Top     | <b>ἐνευλογηθήσονται πλοῦσι αἱ πατριά τῆς γῆς.</b>                                    |
| <b>26</b>  | Top     | <b>ὑμῖν</b> <b>πρῶτον</b> ἀναστήσας ὁ θεὸς τὸν παῖδα αὐτοῦ                           |
| 2          |         | ἀπέστειλεν αὐτὸν   |
| 3          |         | εὐλογούντα ὑμᾶς  |
| 4          |         | ἐν τῷ ἀποστρέφειν ἕκαστον ἀπὸ τῶν πονηριῶν ὑμῶν.                                     |
| <b>4</b>   | T-H     | <b>Λαλούντων</b> δὲ <b>αὐτῶν πρὸς τὸν λαόν</b>                                       |
| 2          |         | ἐπέστησαν αὐτοῖς οἱ ἱερεῖς καὶ ὁ στρατηγὸς τοῦ ἱεροῦ καὶ οἱ Σαδδουκαῖοι,             |
| 3          | 2       | διαπονούμενοι διὰ τὸ διδάσκειν αὐτοὺς τὸν λαόν                                       |
| 4          |         | καὶ καταγγέλλειν ἐν τῷ Ἰησοῦ <b>τὴν ἀνάστασιν τὴν ἐκ νεκρῶν,</b>                     |
| 2          | 3       | καὶ ἐπέβαλον αὐτοῖς τὰς χεῖρας   |
| 2          |         | καὶ ἔθεντο εἰς τήρησιν εἰς τὴν αὔριον·   |
| 2          |         | ἦν γὰρ ἑσπέρα <b>ἤδη.</b>  |
| <b>4</b>   | Top     | <b>πολλοὶ</b> δὲ <b>τῶν ἀκουσάντων τὸν λόγον</b>                                     |
| 2          | Top     | ἐπίστευσαν,  |
| 2          |         | καὶ ἐγενήθη [ὁ] ἀριθμὸς τῶν ἀνδρῶν [ὡς] χιλιάδες πέντε.                              |
| 2          | 5       | <b>Ἐγένετο</b> δὲ  |
| 3          | Sit     | ἐπὶ τὴν αὔριον <b>συναχθῆναι</b>   |
|            | TopGen  | <b>αὐτῶν</b> τοὺς ἄρχοντας καὶ τοὺς πρεσβυτέρους                                     |
|            |         | καὶ τοὺς γραμματεῖς ἐν Ἱερουσαλῆμ,   |
| 4          | 6       | καὶ Ἄννας ὁ ἀρχιερεὺς καὶ Καϊάφας καὶ Ἰωάννης καὶ Ἀλέξανδρος                         |
| 4          |         | καὶ ὅσοι ἦσαν ἐκ γένους ἀρχιερατικοῦ,  |
| <b>7</b>   |         | καὶ στήσαντες αὐτοὺς ἐν τῷ μέσῳ  |
| 2          |         | ἐπυνθάνοντο,   |
|            |         | <b>Ἐν ποίᾳ δυνάμει ἢ ἐν ποίῳ ὀνόματι ἐποιήσατε</b>                                   |
|            | Th+     | <b>τοῦτο ὑμεῖς;</b>  |
| <b>8</b>   | Top+    | <b>τότε</b> Πέτρος πλησθεὶς πνεύματος ἁγίου  |
| 2          |         | εἶπεν πρὸς αὐτούς,   |
|            |         | <b>Ἄρχοντες τοῦ λαοῦ καὶ πρεσβύτεροι,</b>  |
| <b>9</b>   | Sit     | <b>εἰ</b> ἡμεῖς σήμερον ἀνακρινόμεθα ἐπὶ εὐεργεσίᾳ ἀνθρώπου ἀσθενοῦς                 |
| 3          | Emb     | <b>ἐν τίνι</b>   |
|            | Th+     | <b>οὗτος σέσεται,</b>  |
|            | Sit     |  |
| <b>10</b>  |         | <b>γνωστὸν</b> ἔστω πᾶσιν ὑμῖν καὶ παντὶ τῷ λαῷ Ἰσραὴλ                               |
| 3          | L-Dis   | <b>ὅτι</b> ἐν τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Ναζωραίου                                 |
| 4          | Top     | <b>ὃν</b> ὑμεῖς ἐσταυρώσατε,   |
| 4          | Top     | <b>ὃν</b> ὁ θεὸς ἤγειρεν ἐκ νεκρῶν,  |
| 4          | L-Dis   | <b>ἐν τούτῳ</b> οὗτος παρέστηκεν ἐνώπιον ὑμῶν ὑγιής.                                 |
| <b>11</b>  | Top+    | <b>οὗτός</b> ἐστὶν ὁ λίθος, ὃ ἐξουθενήθητε ὑφ' ὑμῶν <b>τῶν οἰκοδόμων,</b>            |
| 3          |         | <b>ὃ γενόμενος εἰς κεφαλὴν γωνίας.</b>   |
| 2          | 12      | καὶ οὐκ ἔστιν ἐν ἄλλῳ οὐδενὶ <b>ἢ</b> σωτηρία,                                       |
|            | ThS+    |  |
|            | ThS+    | <b>οὐδὲ γὰρ ὄνομα</b> ἐστὶν ἕτερον ὑπὸ τὸν οὐρανὸν τὸ δεδομένον ἐν ἀνθρώποις         |
|            | Split   |  |
| 3          |         | <b>ἐν ᾧ</b> δεῖ σωθῆναι <b>ἡμᾶς.</b>   |
|            | ThS+    |  |
| <b>13</b>  |         | Θεωροῦντες δὲ τὴν τοῦ Πέτρου <b>παρρησίαν</b> καὶ Ἰωάννου                            |
|            | R-Dis   |  |
|            | R-Dis   | καὶ καταλαβόμενοι  |
| 3          |         | ὅτι <b>ἄνθρωποι ἀγράμματοί</b> εἰσιν <b>καὶ ἰδιῶται,</b>                             |
|            | Split   |  |
| 2          |         | ἐθαύμαζον  |
| 2          |         | ἐπεγίνωσκόν τε αὐτοὺς  |
| 3          |         | ὅτι <b>σὺν τῷ Ἰησοῦ</b> ἦσαν,  |
| <b>14</b>  |         | <b>τόν</b> τε <b>ἄνθρωπον</b> βλέποντες σὺν αὐτοῖς <b>ἐστῶτα τὸν τεθεραπευμένον</b>  |
|            | Split   |  |
|            | Split   | <b>οὐδὲν</b> εἶχον ἀντειπεῖν.  |
|            | Constit |  |
| <b>15</b>  |         | κελεύσαντες δὲ αὐτοὺς  |
| 3          |         | <b>ἔξω</b> τοῦ συνεδρίου ἀπελθεῖν  |
| 2          |         | συνέβαλλον πρὸς ἀλλήλους   |
| 3          | 16      | λέγοντες,  |
|            |         | <b>Τί ποιήσωμεν</b> τοῖς ἀνθρώποις τούτοις;  |
|            | Th+     |  |
|            | Th+     | <b>ὅτι</b> μὲν γὰρ <b>γνωστὸν σημεῖον</b> <b>γένεγον δι' αὐτῶν</b>                   |
|            | Top     |  |
|            | Emb     | <b>ἐγένετον</b> <b>ἐν</b> <b>τῷ</b> <b>πᾶσιν τοῖς κατοικοῦσιν Ἱερουσαλῆμ</b> φανερόν |
|            | Emb     |  |
| 3          |         | <b>καὶ οὐ</b> δυνάμεθα ἀρνεῖσθαι·  |
| 2          |         |  |



- 17 <sup>Sit</sup> ἀλλ' ἵνα μὴ <sup>Emb</sup> ἐπὶ πλείον <sup>Emb</sup> διανεμηθῆ εἰς τὸν λαὸν <sup>Sit</sup>  
 2 ἀπειλησώμεθα αὐτοῖς  
 3 μηκέτι λαλεῖν <sup>Th+</sup> ἐπὶ τῷ ὀνόματι τούτῳ <sup>Th+</sup> μηδενὶ ἀνθρώπων.
- 18 καὶ καλέσαντες αὐτούς  
 2 παρήγγειλαν τὸ καθόλου  
 3 μὴ φθέγγεσθαι μηδὲ διδάσκειν ἐπὶ τῷ ὀνόματι τοῦ Ἰησοῦ.
- 19 <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Πέτρος καὶ Ἰωάννης <sup>Top</sup> ἀποκριθέντες  
 2 εἶπον πρὸς αὐτούς,  
Εἰ <sup>Emb</sup> δίκαιόν ἐστιν ἐνώπιον τοῦ θεοῦ  
 3 <sup>Emb</sup> ὑμῶν ἀκούειν <sup>Split</sup> μᾶλλον ἢ τοῦ θεοῦ, <sup>Split</sup> κρίνατε·  
 2 **20** οὐ δυνάμεθα γὰρ ἡμεῖς  
 3 ἅ εἶδαμεν καὶ ἠκούσαμεν μὴ λαλεῖν.
- 21 <sup>Art</sup> οἱ δὲ προσαπειλησάμενοι  
 2 ἀπέλυσαν αὐτούς,  
 3 Constit μηδὲν εὐρίσκοντες τὸ πῶς κολάσωνται αὐτούς, διὰ τὸν λαόν,  
 4 ὅτι <sup>Top</sup> πάντες ἐδόξαζον τὸν θεὸν ἐπὶ τῷ γεγονότι·
- 22 ἐτῶν γὰρ ἦν Split πλείονων τεσσαράκοντα Split ὁ ἄνθρωπος  
 3 ἐφ' ὃν γέγονει <sup>Th+</sup> τὸ σημεῖον τοῦτο τῆς ἰάσεως. <sup>Th+</sup>
- 23 <sup>T-H</sup> Ἀπολυθέντες δὲ  
 2 ἦλθον πρὸς τοὺς ἰδίους  
 2 καὶ ἀπήγγειλαν  
 3 ὅσα <sup>Top</sup> πρὸς αὐτούς <sup>Top</sup> οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι εἶπαν.
- 24 <sup>Art</sup> οἱ δὲ ἀκούσαντες  
ὁμοθυμαδὸν ἦραν φωνὴν πρὸς τὸν θεὸν  
 2 καὶ εἶπαν,  
 Δέσποτα, <sup>Top</sup> σὺ ὁ ποιήσας τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν καὶ τὴν θάλασσαν καὶ πάντα τὰ ἐν  
 αὐτοῖς,  
 25 ὁ Emb τοῦ πατρὸς ἡμῶν Emb διὰ πνεύματος ἁγίου  
 3 Emb Split στόματος Δαυὶδ παιδὸς σου Emb Split εἰπών,  
Ἰνατί ἐπαύραξαν ἔθνη  
 3 καὶ <sup>Top</sup> λαοὶ ἐμελέτησαν κενά·  
 2 **26** παρέστησαν οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς  
καὶ <sup>Top</sup> οἱ ἄρχοντες <sup>Top</sup> συνήχθησαν ἐπὶ τὸ ποῦ κατὰ τοῦ κυρίου καὶ κατὰ τοῦ Χριστοῦ  
αὐτοῦ.  
 2 **27** συνήχθησαν γὰρ ἐπ' ἀληθείας ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἐπὶ τὸν ἅγιον παῖδά σου Ἰησοῦν  
 4 ὃν ἔχρισας,  
 3 Ἡρώδης τε καὶ Πόντιος Πιλάτος σὺν ἔθνεσιν καὶ λαοῖς Ἰσραήλ,  
 4 **28** ποιῆσαι  
 5 ὅσα ἡ χεὶρ σου καὶ ἡ βουλή [σου] προώρισεν γενέσθαι.
- 29 καὶ <sup>Sit</sup> τὰ νῦν, <sup>Sit</sup> κύριε, ἔπιδε ἐπὶ τὰς ἀπειλάς αὐτῶν  
 2 καὶ δὸς τοῖς δούλοις σου  
 3 μετὰ παρρησίας <sup>Emb</sup> πάσης λαλεῖν τὸν λόγον σου,  
 4 **30** ἐν τῷ τὴν χεῖρά [σου] ἐκτείνειν σε  
 5 εἰς ἵασις καὶ σημεῖα καὶ τέρατα γίνεσθαι διὰ τοῦ ὀνόματος τοῦ ἁγίου  
 παιδὸς σου Ἰησοῦ.
- 31 καὶ δεηθέντων αὐτῶν  
 2 ἐσαλεύθη ὁ τόπος  
 3 ἐν ᾧ ἦσαν συνηγμένοι,  
 2 καὶ ἐπλήσθησαν ἅπαντες τοῦ ἁγίου πνεύματος  
 2 καὶ ἐλάλουν τὸν λόγον τοῦ θεοῦ μετὰ παρρησίας.
- 32 <sup>Top</sup> Τοῦ δὲ <sup>Top</sup> πλήθους τῶν πιστευσάντων <sup>Top</sup> ἦν καρδία καὶ ψυχὴ μία,  
 καὶ <sup>Top</sup> οὐδὲ εἷς <sup>Top</sup> <sup>Top</sup> τι τῶν ὑπαρχόντων αὐτῷ <sup>Top</sup> ἔλεγεν  
 3 ἴδιον εἶναι  
 2 ἀλλ' ἦν αὐτοῖς ἅπαντα κοινά.



**33** καὶ **δυνάμει** **μεγάλη** ἀπεδίδουν τὸ μαρτύριον οἱ ἀπόστολοι **τῆς ἀναστάσεως τοῦ κυρίου Ἰησοῦ**,<sup>Split</sup>

**χάρις** **τε** **μεγάλη** ἦν ἐπὶ πάντας αὐτούς.

**34** οὐδὲ γὰρ **ἐνδεής** **τις** ἦν ἐν αὐτοῖς·

<sup>Top</sup> ὅσοι γὰρ **κτιήτορες χωρίων ἢ οἰκιῶν** <sup>Emb</sup> **ὑπῆρχον**, <sup>Top</sup> πωλοῦντες

<sup>2</sup> ἔφερον τὰς τιμὰς τῶν πιπρασκομένων

<sup>2</sup> **35** καὶ ἐτίθουν παρὰ τοὺς πόδας τῶν ἀποστόλων,

<sup>2</sup> διεδίδετο δὲ ἑκάστῳ

<sup>3</sup> καθότι ἂν <sup>Top</sup> **τις** <sup>Incorp</sup> **χρείαν** εἶχεν.

**36** <sup>L-Dis</sup> Ἰωσήφ δὲ <sup>L-Dis</sup> ὁ ἐπικληθεὶς Βαρναβᾶς ἀπὸ τῶν ἀποστόλων,

<sup>4</sup> ὃ ἐστὶν μεθερμηνευόμενον υἱὸς παρακλήσεως,

<sup>3</sup> **Λευίτης, Κύπριος τῷ γένει**, <sup>L-Dis</sup>

**37** ὑπάρχοντος αὐτῷ ἀγροῦ

πωλήσας

<sup>2</sup> ἤνεγκεν τὸ χρῆμα

<sup>2</sup> καὶ ἔθηκεν πρὸς τοὺς πόδας τῶν ἀποστόλων.

**5** Ἄνηρ δὲ **τις** **Ἀνανίας** ὀνόματι σὺν **Σαπφίρη** **τῇ** **γυναικὶ** αὐτοῦ ἐπώλησεν κτῆμα

<sup>2</sup> **2** καὶ ἐνοσφίσατο ἀπὸ τῆς τιμῆς,

<sup>3</sup> συνειδυίης καὶ τῆς γυναικός,

καὶ ἐνέγκας μέρος τι

**παρὰ** **τοὺς πόδας τῶν ἀποστόλων** ἔθηκεν.

<sup>2</sup> **3** εἶπεν δὲ ὁ Πέτρος,

**Ἀνανία**, **διὰ** **τί** ἐπλήρωσεν ὁ Σατανᾶς τὴν καρδίαν σου,

<sup>3</sup> ψεύσασθαί σε τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον

<sup>3</sup> καὶ νοσφίσασθαί ἀπὸ τῆς τιμῆς τοῦ χωρίου;

**4** οὐχὶ μένον

**σοὶ** ἔμενεν

καὶ **πραθὲν**

**ἐν τῇ σῇ** <sup>Emb</sup> **ἐξουσίᾳ** ὑπῆρχεν;

**τί** ὅτι ἔθου ἐν τῇ καρδίᾳ σου <sup>ThS+</sup> **τὸ πρᾶγμα** **τούτου**; <sup>ThS+</sup>

<sup>2</sup> οὐκ ἐψεύσω ἀνθρώποις ἀλλὰ τῷ θεῷ.

**5** ἀκούων δὲ ὁ **Ἀνανίας** <sup>Th+</sup> τοὺς λόγους τούτους <sup>Th+</sup>

πεσὼν

<sup>2</sup> ἐξέψυξεν,

<sup>2</sup> καὶ ἐγένετο φόβος μέγας ἐπὶ πάντας τοὺς ἀκούοντας.

**6** ἀναστάντες δὲ οἱ νεώτεροι

<sup>2</sup> συνέστειλαν αὐτὸν

καὶ ἐξενέγκαντες

<sup>2</sup> ἔθαψαν.

<sup>2</sup> **7** Ἐγένετο δὲ ὡς ὥρων τριῶν διάστημα

καὶ <sup>Top</sup> ἡ γυνὴ αὐτοῦ <sup>Top</sup> **μη** εἰδυῖα τὸ γεγονός

<sup>2</sup> εἰσῆλθεν.

<sup>2</sup> **8** ἀπεκρίθη δὲ πρὸς αὐτήν <sup>Th+</sup> Πέτρος,

<sup>2</sup> **Εἰπέ μοι**,

<sup>3</sup> **εἰ τοσοῦτου** **τὸ χωρίον** ἀπέδοσθε;

<sup>Art</sup> ἡ δὲ εἶπεν,

<sup>3</sup> **Ναί, τοσοῦτου.**

**9** <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> **Πέτρος** πρὸς αὐτήν,

**Τί** ὅτι **συνεφωνήθη** ὑμῖν

<sup>3</sup> **πειράσαι** τὸ πνεῦμα κυρίου;

**ἰδοὺ** **οἱ πόδες τῶν θαψάντων τὸν ἄνδρα σου** ἐπὶ τῇ θύρᾳ

<sup>2</sup> καὶ ἐξοίσουσίν σε.

<sup>2</sup> **10** ἔπεσεν δὲ παραχρῆμα πρὸς τοὺς πόδας αὐτοῦ

<sup>2</sup> καὶ ἐξέψυξεν·

- εἰσελθόντες δὲ οἱ νεανίσκοι  
 2 εὔρον αὐτὴν νεκρὰν  
 καὶ ἐξενέγκαντες  
 2 ἔθαψαν πρὸς τὸν ἄνδρα αὐτῆς,  
 2 **11** καὶ ἐγένετο φόβος μέγας ἐφ' ὅλην τὴν ἐκκλησίαν καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς ἀκούοντας  
 Th+ ταῦτα.
- 12** Top Διὰ δὲ Top τῶν χειρῶν τῶν ἀποστόλων Top ἐγένετο σημεῖα καὶ τέρατα πολλὰ ἐν τῷ  
 λαῷ.  
 2 καὶ ἦσαν ὁμοθυμαδὸν ἅπαντες ἐν τῇ Στοᾷ Σολομώντος,  
**13** Top τῶν δὲ Top λοιπῶν Constit οὐδεὶς ἐτόλμα κολλᾶσθαι αὐτοῖς,  
 2 ἀλλ' ἐμεγάλυνεν αὐτοὺς ὁ λαός.  
**14** μᾶλλον δὲ προσετίθεντο πιστεύοντες τῷ κυρίῳ, App πλήθη ἀνδρῶν τε καὶ γυναικῶν, App |  
 3 **15** ὥστε καὶ εἰς τὰς πλατείας ἐκφέρειν τοὺς ἀσθενεῖς  
 3 καὶ τιθέναι ἐπὶ κλιναρίων καὶ κραβάτων,  
 4 ἵνα ἐρχομένου Πέτρου  
 5 \* κἂν ἡ σκιά \* ἐπισκιάσῃ τινὲς αὐτῶν.  
 2 **16** συνήροχοτο δὲ καὶ τὸ πλῆθος τῶν πέριξ πόλεων Ἱερουσαλήμ  
 3 φέροντες ἀσθενεῖς καὶ ὀχλουμένους ὑπὸ πνευμάτων ἀκαθάρτων,  
 2 οἵτινες ἐθεραπεύοντο ἅπαντες.  
**17** Ἀναστάς δὲ ὁ ἀρχιερεὺς καὶ πάντες οἱ σὺν αὐτῷ, ἡ οὖσα αἵρεσις τῶν Σαδδουκαίων,  
 2 ἐπλήσθησαν ζήλου  
 2 **18** καὶ ἐπέβαλον τὰς χεῖρας ἐπὶ τοὺς ἀποστόλους  
 2 καὶ ἔθεντο αὐτοὺς ἐν τηρήσει δημοσίᾳ.  
**19** Top ἄγγελος δὲ Top κυρίου Sit διὰ νυκτὸς Sit ἀνοίξας τὰς θύρας τῆς φυλακῆς  
 ἐξαγαγὼν τε αὐτοὺς  
 2 εἶπεν,  
 2 **20** Πορεύεσθε  
 καὶ σταθέντες  
 2 λαλεῖτε ἐν τῷ ἱερῷ τῷ λαῷ πάντα τὰ ῥήματα τῆς ζωῆς ταύτης.  
**21** ἀκούσαντες δὲ  
 2 εἰσήλθον ὑπὸ τὸν ὄρθρον εἰς τὸ ἱερόν  
 2 καὶ ἐδίδασκον.  
 Παραγενόμενος δὲ ὁ ἀρχιερεὺς καὶ οἱ σὺν αὐτῷ  
 2 συνεκάλεσαν τὸ συνέδριον καὶ πᾶσαν τὴν γερουσίαν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ  
 2 καὶ ἀπέστειλαν εἰς τὸ δεσμοτήριον  
 3 ἀχθῆναι αὐτούς.  
**22** Top οἱ δὲ Top παραγενόμενοι ὑπηρετᾶται Top οὐχ εὔρον αὐτοὺς ἐν τῇ φυλακῇ·  
 ἀναστρέψαντες δὲ  
 2 ἀπήγγειλαν  
 3 **23** λέγοντες  
 ὅτι Top Τὸ δεσμοτήριον Top εὔρομεν κεκλεισμένον ἐν πάσῃ ἀσφαλείᾳ  
 3 καὶ Top τοὺς φύλακας Top ἐστῶτας ἐπὶ τῶν θυρῶν,  
 ἀνοίξαντες δὲ  
 Sit ἔσω Constit οὐδένα εὔρομεν.
- 24** Sit ὡς δὲ Sit ἤκουσαν Th+ τοὺς λόγους τούτους Th+ ὁ τε στρατηγὸς τοῦ ἱεροῦ καὶ οἱ  
 Sit ἀρχιερεῖς,  
 2 διηπόρουν περὶ αὐτῶν  
 3 τί ἂν γένοιτο Th+ τοῦτο.  
**25** παραγενόμενος δέ τις  
 2 ἀπήγγειλεν αὐτοῖς  
 ὅτι **Ἰδοὺ** Top οἱ ἄνδρες οὓς ἔθεσθε ἐν τῇ φυλακῇ Top εἰσὶν  
 3 Emb ἐν τῷ ἱερῷ Emb ἐστῶτες  
 3 καὶ διδάσκοντες τὸν λαόν.  
**26** τότε ἀπελθὼν ὁ στρατηγὸς σὺν τοῖς ὑπηρέταις

2 ἦγεν αὐτοὺς οὐ μετὰ βίας,  
 2 ἐφοβοῦντο γὰρ τὸν λαὸν  
 3 μὴ λιθασθῶσιν.  
**27** Ἀγαγόντες δὲ αὐτοὺς  
 2 ἔστησαν ἐν τῷ συνεδρίῳ.  
 2 καὶ ἐπηρώτησεν αὐτοὺς ὁ ἀρχιερεὺς  
 3 **28** λέγων,  
 [Οὐ] παραγγελία παρηγγείλαμεν ὑμῖν  
 3 μὴ διδάσκειν <sup>Th+</sup> ἐπὶ τῷ ὀνόματι τούτῳ, <sup>Th+</sup>  
 καὶ **ἰδοὺ** πεπληρώκατε τὴν Ἱερουσαλήμ τῆς διδαχῆς ὑμῶν  
 2 καὶ βούλεσθε ἐπαγαγεῖν ἐφ' ἡμᾶς τὸ αἷμα <sup>Th+</sup> τοῦ ἀνθρώπου τούτου. <sup>Th+</sup>  
**29** ἀποκριθεὶς δὲ <sup>Th+</sup> Πέτρος καὶ οἱ ἀπόστολοι  
 2 εἶπαν,  
 Πειθαρχεῖν δεῖ <sup>Split</sup> θεῷ μᾶλλον ἢ ἀνθρώποις. <sup>Split</sup>  
**30** <sup>Top</sup> ὁ θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν <sup>Top</sup> ἠγειρεν Ἰησοῦν  
 3 ὃν <sup>Top</sup> ὑμεῖς διεχειρίσασθε  
 4 κρεμάσαντες ἐπὶ ξύλου·  
**31** <sup>Top+</sup> τούτον <sup>Top</sup> ὁ θεὸς <sup>Top</sup> ἀρχηγὸν καὶ σωτήρα ὑψωσεν τῇ δεξιᾷ αὐτοῦ  
 3 [τοῦ] δοῦναι μετάνοιαν τῷ Ἰσραὴλ <sup>Split</sup> καὶ ἄφεσιν ἁμαρτιῶν. <sup>Split</sup>  
**32** καὶ <sup>Top</sup> ἡμεῖς ἐσμεν μάρτυρες <sup>Th+</sup> τῶν ῥημάτων τούτων <sup>Th+</sup>  
 3 <sup>R-Dis</sup> καὶ τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον  
 4 ὃ ἔδωκεν ὁ θεὸς τοῖς πειθαρχοῦσιν αὐτῷ. <sup>R-Dis</sup>  
**33** <sup>Art</sup> Οἱ δὲ ἀκούσαντες  
 2 διεπρίοντο  
 2 καὶ ἐβούλοντο ἀνελεῖν αὐτούς.  
**34** ἀναστὰς δὲ τις ἐν τῷ συνεδρίῳ Φαρισαῖος ὀνόματι Γαμαλιήλ,  
 3 νομοδιδάσκαλος τίμιος παντὶ τῷ λαῷ,  
 2 ἐκέλευσεν  
 3 ἔξω βραχὺ τοὺς ἀνθρώπους ποιῆσαι  
 2 **35** εἶπέν τε πρὸς αὐτούς,  
 Ἄνδρες Ἰσραηλίται, προσέχετε ἑαυτοῖς <sup>Th+</sup> ἐπὶ τοῖς ἀνθρώποις τούτοις <sup>Th+</sup>  
 3 τί μέλλετε πράσσειν.  
**36** <sup>Sit</sup> πρὸ γὰρ <sup>Sit Th+</sup> τούτων τῶν ἡμερῶν <sup>Sit Th+</sup> ἀνέστη Θεοδᾶς  
 3 λέγων εἶναί τινα ἑαυτόν,  
 2 ᾧ προσεκλίθη ἀνδρῶν ἀριθμὸς ὡς τετρακοσίων·  
 2 ὃς ἀνηρέθη,  
 καὶ <sup>Top</sup> πάντες ὅσοι ἐπέιθοντο αὐτῷ <sup>Top</sup> διελύθησαν  
 2 καὶ ἐγένοντο εἰς οὐδέν.  
**37** <sup>Sit Th+</sup> μετὰ τούτον <sup>Sit Th+</sup> ἀνέστη Ἰούδας ὁ Γαλιλαῖος ἐν ταῖς ἡμέραις τῆς ἀπογραφῆς  
 2 καὶ ἀπέστησεν λαὸν ὀπίσω αὐτοῦ·  
<sup>Top</sup> **κἀκεῖνος ἀπώλετο**  
 καὶ <sup>Top</sup> πάντες ὅσοι ἐπέιθοντο αὐτῷ <sup>Top</sup> **διεσκορπίσθησαν.**  
**38** καὶ <sup>Sit</sup> τὰ νῦν <sup>Sit</sup> λέγω ὑμῖν,  
 2 ἀπόσπυτε <sup>Th+</sup> ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων τούτων <sup>Th+</sup>  
 2 καὶ ἄφετε αὐτούς·  
 3 ὅτι <sup>Sit</sup> ἐὰν ᾗ ἕξ ἀνθρώπων <sup>ThS+</sup> ἡ βουλή αὕτη ἢ τὸ ἔργον τοῦτο, <sup>ThS+ Sit</sup>  
 5 καταλυθήσεται,  
 4 **39** <sup>Sit</sup> εἰ δὲ <sup>Emb Sit</sup> ἐκ θεοῦ <sup>Emb</sup> ἐστίν, <sup>Sit</sup>  
 5 οὐ δυνήσεσθε καταλῦσαι αὐτούς,  
 6 μήποτε καὶ **θεομάχοι** εὐρεθῆτε.  
 2 ἐπέισθησαν δὲ αὐτῷ  
**40** καὶ προσκαλεσάμενοι τοὺς ἀποστόλους  
 δείραντες  
 2 παρήγγειλαν

<sup>3</sup> μὴ λαλεῖν ἐπὶ τῷ ὀνόματι τοῦ Ἰησοῦ  
<sup>2</sup> καὶ ἀπέλυσαν.  
**41** <sup>Art</sup> Οἱ μὲν οὖν ἐπορεύοντο χαίροντες ἀπὸ προσώπου τοῦ συνεδρίου,  
<sup>3</sup> ὅτι κατηξιώθησαν  
<sup>4</sup> ὑπὲρ τοῦ ὀνόματος ἀτιμασθῆναι,  
**42** <sup>Sit</sup> πᾶσάν τε <sup>Sit</sup> ἡμέραν <sup>\*Sit</sup> ἐν τῷ ἱερῷ καὶ κατ' οἶκον <sup>\*Sit</sup> οὐκ ἐπαύοντο  
<sup>3</sup> διδάσκοντες καὶ εὐαγγελιζόμενοι τὸν Χριστὸν Ἰησοῦν.  
**6** <sup>Sit</sup> Ἐν δὲ <sup>Sit Th+</sup> ταῖς ἡμέραις ταύταις <sup>Sit Th+</sup> πληθυνόντων τῶν μαθητῶν  
<sup>2</sup> ἐγένετο γογγυσμὸς τῶν Ἑλληνιστῶν πρὸς τοὺς Ἑβραίους,  
<sup>3</sup> ὅτι παρεθεωροῦντο ἐν τῇ διακονίᾳ τῇ καθημερινῇ αἱ χήραι αὐτῶν.  
**2** προσκαλεσάμενοι δὲ οἱ δώδεκα τὸ πλῆθος τῶν μαθητῶν  
<sup>2</sup> εἶπαν,  
**Οὐκ ἀρεστόν** ἐστὶν ἡμᾶς  
<sup>3</sup> καταλείψαντας τὸν λόγον τοῦ θεοῦ  
<sup>4</sup> διακονεῖν τραπέζαις.  
<sup>2</sup> **3** ἐπισκέψασθε δέ, ἀδελφοί, ἄνδρας ἐξ ὑμῶν μαρτυρούμενους ἐπτά,  
<sup>4</sup> πλήρεις πνεύματος καὶ σοφίας,  
<sup>2</sup> οὓς καταστήσομεν <sup>Th+</sup> ἐπὶ τῆς χρείας ταύτης, <sup>Th+</sup>  
**4** <sup>Top</sup> ἡμεῖς δὲ τῇ προσευχῇ καὶ τῇ διακονίᾳ τοῦ λόγου προσκαρτερήσομεν.  
<sup>2</sup> **5** καὶ ἤρεσεν ὁ λόγος ἐνώπιον παντὸς τοῦ πλήθους  
<sup>2</sup> καὶ ἐξελέξαντο Στέφανον, <sup>App</sup> ἄνδρα πλήρης πίστεως καὶ πνεύματος ἁγίου, <sup>App</sup>  
<sup>3</sup> καὶ Φίλιππον καὶ Πρόχορον καὶ Νικάνορα καὶ Τίμωνα καὶ Παρμενᾶν  
<sup>3</sup> καὶ Νικόλαον προσήλυτον Ἀντιοχέα,  
<sup>2</sup> **6** οὓς ἔστησαν ἐνώπιον τῶν ἀποστόλων,  
καὶ προσευξάμενοι  
<sup>2</sup> ἐπέθηκαν αὐτοῖς τὰς χεῖρας.  
**7** Καὶ <sup>Top</sup> ὁ λόγος τοῦ θεοῦ <sup>Top</sup> ηὔξανεν  
<sup>2</sup> καὶ ἐπληθύνετο ὁ ἀριθμὸς τῶν μαθητῶν ἐν Ἱερουσαλὴμ σφόδρα,  
πολύς τε ὄχλος τῶν ἱερέων ὑπήκουον τῇ πίστει.  
**8** <sup>Top+</sup> Στέφανος δὲ πλήρης χάριτος καὶ δυνάμεως  
<sup>2</sup> ἐποίει τέρατα καὶ σημεῖα μεγάλα ἐν τῷ λαῷ.  
<sup>2</sup> **9** ἀνέστησαν δέ τινες τῶν ἐκ τῆς συναγωγῆς τῆς λεγομένης Λιβερτίνων  
<sup>4</sup> καὶ Κυρηναίων καὶ Ἀλεξανδρέων καὶ τῶν ἀπὸ Κιλικίας καὶ Ἀσίας  
<sup>3</sup> συζητοῦντες τῷ Στεφάνῳ,  
<sup>2</sup> **10** καὶ οὐκ ἴσχυον ἀντιστῆναι τῇ σοφίᾳ καὶ τῷ πνεύματι  
<sup>3</sup> ᾧ ἐλάλει.  
<sup>2</sup> **11** τότε ὑπέβαλον ἄνδρας  
<sup>3</sup> λέγοντας  
<sup>2</sup> ὅτι **Ἀκηκόαμεν αὐτοῦ**  
<sup>3</sup> λαλοῦντος ῥήματα βλάσφημα εἰς Μωϋσῆν καὶ τὸν θεόν·  
<sup>2</sup> **12** συνεκίνησάν τε τὸν λαὸν καὶ τοὺς πρεσβυτέρους καὶ τοὺς γραμματεῖς  
καὶ ἐπιστάντες  
<sup>2</sup> συνήρπασαν αὐτὸν  
<sup>2</sup> καὶ ἤγαγον εἰς τὸ συνέδριον,  
<sup>2</sup> **13** ἔστησάν τε μάρτυρας ψευδεῖς  
<sup>3</sup> λέγοντας,  
<sup>Top+</sup> **Ὁ ἄνθρωπος οὗτος** <sup>Top+</sup> οὐ παύεται  
<sup>3</sup> λαλῶν ῥήματα κατὰ τοῦ τόπου τοῦ ἁγίου [τούτου] καὶ τοῦ νόμου·  
<sup>2</sup> **14** ἀκηκόαμεν γὰρ αὐτοῦ  
<sup>4</sup> λέγοντος  
**ὅτι** <sup>Top+</sup> Ἰησοῦς ὁ Ναζωραῖος οὗτος <sup>Top+</sup> καταλύσει τὸν τόπον τούτον  
<sup>2</sup> καὶ ἀλλάξει τὰ ἔθνη  
<sup>3</sup> ἃ παρέδωκεν ἡμῖν Μωϋσῆς.  
**15** καὶ ἀτενίσαντες εἰς αὐτὸν πάντες οἱ καθεζόμενοι ἐν τῷ συνεδρίῳ

2 εἶδον τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ὡσεὶ πρόσωπον ἀγγέλου.  
 2 **7** Εἶπεν δὲ ὁ ἀρχιερεὺς,  
 Εἰ <sup>Top+</sup> ταῦτα οὕτως ἔχει;  
 2 <sup>Art</sup> ὁ δὲ ἔφη,  
 Ἄνδρες ἀδελφοὶ καὶ πατέρες, ἀκούσατε.  
<sup>Top</sup> Ὁ θεὸς τῆς δόξης <sup>Top</sup> ὤφθη τῷ πατρὶ ἡμῶν Ἀβραάμ  
 3 ὄντι ἐν τῇ Μεσοποταμίᾳ  
 3 πρὶν ἢ κατοικῆσαι αὐτὸν ἐν Χαρρὰν  
 2 **3** καὶ εἶπεν πρὸς αὐτόν,  
 2 Ἐξέλθε ἐκ τῆς γῆς σου καὶ [ἐκ] τῆς συγγενείας σου,  
 2 καὶ θεύρου εἰς τὴν γῆν  
 3 ἣν ἂν σοὶ δείξω.  
 4 τότε ἐξελθὼν ἐκ γῆς Χαλδαίων  
 2 κατῴκησεν ἐν Χαρρὰν.  
<sup>Sit</sup> κάκειθεν <sup>Sit</sup> μετὰ τὸ ἀποθανεῖν τὸν πατέρα αὐτοῦ <sup>Sit</sup>  
 2 μετόπισθεν αὐτὸν εἰς τὴν γῆν ταύτην  
 3 εἰς ἣν <sup>Top</sup> ὑμεῖς νῦν κατοικεῖτε,  
 2 **5** καὶ οὐκ ἔδωκεν αὐτῷ κληρονομίαν ἐν αὐτῇ  
 3 | <sup>R-Dis</sup> οὐδὲ βῆμα ποδός <sup>R-Dis</sup> |  
 2 καὶ ἐπηγγείλατο δοῦναι αὐτῷ εἰς κατάσχεσιν αὐτῆν  
 3 <sup>Split</sup> καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ μετ' αὐτόν, <sup>Split</sup>  
 4 οὐκ ὄντος αὐτῷ τέκνου.  
 2 **6** ἐλάλησεν δὲ <sup>Cata</sup> οὕτως <sup>ThS+</sup> ὁ θεὸς <sup>ThS+</sup>  
 2 ὅτι <sup>Cata</sup> εἶπα τῷ σπέρματι αὐτοῦ πάροικον ἐν γῇ ἀλλοτρίᾳ  
 2 καὶ δουλώσουσιν αὐτὸ  
 2 καὶ κακώσουσιν ἔτη τετρακόσια  
 7 <sup>Top</sup> καὶ <sup>Top</sup> τὸ ἔθνος ᾧ ἂν δουλεύουσιν <sup>Top</sup> κρινῶ <sup>Th+</sup> ἐγώ.  
<sup>Top</sup> ὁ θεὸς <sup>Top</sup> εἶπεν,  
 καὶ <sup>Sit Th+</sup> μετὰ ταῦτα <sup>Sit Th+</sup> ἐξελεύσονται  
 2 καὶ λατρεύσουσίν μοι ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ.  
 2 **8** καὶ ἔδωκεν αὐτῷ διαθήκην περιτομῆς·  
 καὶ <sup>Sit</sup> οὕτως ἐγέννησεν τὸν Ἰσαὰκ  
 2 καὶ περιέτεμεν αὐτὸν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ὀγδόῃ,  
 3 καὶ <sup>Top</sup> Ἰσαὰκ τὸν Ἰακώβ,  
 3 καὶ <sup>Top</sup> Ἰακώβ τοὺς δώδεκα πατριάρχας.  
 9 Καὶ <sup>Top</sup> οἱ πατριάρχαι <sup>Top</sup> ζηλώσαντες τὸν Ἰωσήφ  
 2 ἀπέδοντο εἰς Αἴγυπτον.  
 2 καὶ ἦν ὁ θεὸς μετ' αὐτοῦ  
 2 **10** καὶ ἐξείλατο αὐτὸν ἐκ πασῶν τῶν θλίψεων αὐτοῦ  
 2 καὶ ἔδωκεν αὐτῷ χάριν καὶ σοφίαν ἐναντίον Φαραὼ βασιλέως Αἰγύπτου  
 2 καὶ κατέστησεν αὐτὸν ἡγούμενον ἐπ' Αἴγυπτον καὶ [ἐφ'] ὅλον τὸν οἶκον αὐτοῦ.  
 2 **11** ἦλθεν δὲ λιμὸς ἐφ' ὅλην τὴν Αἴγυπτον καὶ Χανάαν <sup>Split</sup> καὶ θλίψις μεγάλη, <sup>Split</sup>  
 2 καὶ οὐχ ἠύρισκον χορτάσματα <sup>ThS+</sup> οἱ πατέρες ἡμῶν. <sup>ThS+</sup>  
 12 ἀκούσας δὲ Ἰακώβ  
 3 ὄντα σιτία εἰς Αἴγυπτον  
 2 ἐξαπέστειλεν τοὺς πατέρας ἡμῶν πρώτον.  
 13 καὶ <sup>Sit</sup> ἐν τῷ δευτέρῳ <sup>Sit</sup> ἀνεγνωρίσθη <sup>Th+</sup> Ἰωσήφ τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ  
 καὶ <sup>Sit</sup> φανερόν ἐγένετο <sup>Split</sup> τῷ Φαραὼ <sup>Split</sup> τὸ γένος [τοῦ] Ἰωσήφ.  
 14 ἀποστείλας δὲ <sup>Th+</sup> Ἰωσήφ  
 2 μετεκαλέσατο Ἰακώβ <sup>Th+</sup> τὸν πατέρα αὐτοῦ <sup>Th+</sup> καὶ πᾶσαν τὴν συγγένειαν  
 3 | <sup>App</sup> ἐν ψυχαῖς <sup>Emb</sup> ἑβδομήκοντα πέντε. <sup>App Emb</sup> |  
 2 **15** καὶ κατέβη Ἰακώβ εἰς Αἴγυπτον  
 2 καὶ ἐτελεύτησεν αὐτὸς καὶ οἱ πατέρες ἡμῶν,  
 2 **16** καὶ μετετέθησαν εἰς Συχέμ

2 καὶ ἐτέθησαν ἐν τῷ μηνίματι  
3 ᾧ ὤνησατο Ἀβραάμ τιμῆς ἀργυρίου παρὰ τῶν υἱῶν Ἑμμώρ ἐν Συχέμ.  
**17** <sup>Sit</sup> Καθὼς δὲ <sup>Sit</sup> ἤγγιζεν ὁ χρόνος τῆς ἐπαγγελίας  
3 ἧς ὡμολόγησεν ὁ θεὸς τῷ Ἀβραάμ, <sup>Sit</sup>  
2 ἠΰξησεν ὁ λαὸς  
2 καὶ ἐπληθύνθη ἐν Αἰγύπτῳ  
3 **18** ἄχρι οὗ ἀνέστη βασιλεὺς ἕτερος [ἐπ' Αἴγυπτον]  
4 ὃς οὐκ ᾔδει τὸν Ἰωσήφ.  
**19** <sup>Top+</sup> οὗτος κατασοφισάμενος τὸ γένος ἡμῶν  
2 ἐκάκωσεν τοὺς πατέρας [ἡμῶν]  
3 τοῦ ποιεῖν τὰ βρέφη ἔκθετα <sup>Split</sup> αὐτῶν  
4 εἰς τὸ μὴ ζυγογονεῖσθαι.  
2 **20** ἐν ᾧ καιρῷ ἐγεννήθη Μωϋσῆς  
2 καὶ ἦν ἀστείος τῷ θεῷ·  
2 ὃς ἀνετράφη μῆνας τρεῖς ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς,  
**21** ἐκτεθέντος δὲ αὐτοῦ  
2 ἀνείλατο αὐτὸν ἡ θυγάτηρ Φαραὼ  
2 καὶ ἀνεθρέψατο αὐτὸν ἑαυτῇ εἰς υἱόν.  
2 **22** καὶ ἐπαιδεύθη <sup>Th+</sup> Μωϋσῆς [ἐν] πάσῃ σοφίᾳ Αἰγυπτίων,  
2 ἦν δὲ δυνατὸς ἐν λόγοις καὶ ἔργοις αὐτοῦ.  
**23** <sup>Sit</sup> Ὡς δὲ <sup>Sit</sup> ἐπληροῦτο αὐτῷ τεσσαρακονταετῆς χρόνος, <sup>Sit</sup>  
2 ἀνέβη ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτοῦ  
3 ἐπισκέψασθαι τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ **τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ.**  
**24** καὶ ἰδὼν τινα ἀδικούμενον  
2 ἡμύνατο  
2 καὶ ἐποίησεν ἐκδίκησιν τῷ καταπονουμένῳ  
3 πατάξας τὸν Αἰγύπτιον.  
2 **25** ἐνόμιζεν δὲ  
3 συνιέναι τοὺς ἀδελφοὺς [αὐτοῦ]  
4 ὅτι <sup>Top</sup> ὁ θεὸς <sup>Top</sup> διὰ χειρὸς αὐτοῦ δίδωσιν σωτηρίαν αὐτοῖς·  
<sup>Art</sup> οἱ δὲ οὐ συνήκαν.  
**26** <sup>Sit</sup> τῇ τε <sup>Sit</sup> ἐπιούσῃ <sup>Sit</sup> ἡμέρᾳ <sup>Sit</sup> ὤφθη αὐτοῖς  
3 μαχομένοις  
2 καὶ συνήλασεν αὐτοὺς εἰς εἰρήνην  
3 εἰπών,  
**Ἄνδρες, ἀδελφοί, ἔστε·**  
**ἵνατί ἀδικεῖτε ἀλλήλους;**  
**27** <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> ἀδικῶν τὸν πλησίον <sup>Top</sup> ἀπόσωτο αὐτὸν  
3 εἰπών,  
**τίς σὺ ἐπίστησεν ἄρχοντα καὶ δικαστὴν ἐπ' ἡμῶν;**  
**28** **οὐκ ἐπαλεῖν ἔμελλε αὐθιγῶς**  
3 **ὅν τρόπον ἐπαλεῖς ἐχθὲς τὸν Αἰγύπτιον;**  
2 **29** ἔφυγεν δὲ <sup>Th+</sup> Μωϋσῆς <sup>Th+</sup> ἐν τῷ λόγῳ τούτῳ <sup>Th+</sup>  
2 καὶ ἐγένετο πάροικος ἐν γῇ Μαδιάμ,  
2 οὗ ἐγέννησεν υἱοὺς δύο.  
**30** Καὶ πληρωθέντων ἐτῶν τεσσαράκοντα  
2 ὤφθη αὐτῷ ἐν τῇ ἐρήμῳ τοῦ ὄρους Σινᾶ **ἄγγελος ἐν φλογὶ πυρὸς βάτου.**  
**31** <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Μωϋσῆς <sup>Top</sup> ἰδὼν  
2 ἐθαύμαζεν τὸ ὄραμα,  
προσερχομένου δὲ αὐτοῦ  
3 κατανοῆσαι  
2 ἐγένετο φωνὴ κυρίου,  
**32** <sup>Top</sup> **Ἐγὼ ὁ θεὸς τῶν πατέρων σου,**  
3 <sup>App</sup> **ὁ θεὸς Ἀβραάμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακώβ.** <sup>App</sup>

|       |     |                  |              |                |                |              |            |
|-------|-----|------------------|--------------|----------------|----------------|--------------|------------|
|       |     | ἔντρομος         | δὲ           | γενόμενος      | Th+            | Μωϋσῆς       |            |
|       | 2   | οὐκ              | ἐτόλμα       | κατανοῆσαι.    |                |              |            |
|       | 2   | <b>33</b>        | εἶπεν        | δὲ             | αὐτῷ           | ὁ            | κύριος,    |
|       | 2   | ἄβυσσον          | τὸ           | ὑπόδημα        | τῶν            | ποδῶν        | σου.       |
| Top   |     | ὁ                | γὰρ          | τόπος          | ἐστὶ           | ἡ            | Ἰσθμὸς     |
|       |     | Top              | τῆ           | ἐπιπέδου       | ἑστίν.         |              |            |
|       |     | <b>34</b>        | ἰδὼν         | ἰδὼν           | τὴν            | ἐκκλίσην     | τοῦ        |
|       |     |                  | λαοῦ         | σου            | τοῦ            | ἐν           | Αἰγύπτῳ    |
|       |     |                  | καὶ          | τοῦ            | στενωγίου      | αὐτῶν        | ἤκουσα,    |
|       | 2   |                  | καὶ          | κατέβην        | ἐξελθεῖν       | αὐτούς       |            |
|       |     | καὶ              | τὸν          | δεῦρο          |                |              |            |
|       | 3   |                  | ἀποστείλας   | σε             | εἰς            | Αἴγυπτον.    |            |
|       |     | <b>35</b>        | L-Dis        | Th+            | Τούτον         | τὸν          | Μωϋσῆν,    |
|       |     |                  | Th+          | ὃν             | ἠγνόησαντο     |              |            |
|       | 3   |                  | εἰπόντες,    |                |                |              |            |
|       |     | <b>Τίς</b>       | σε           | κατέστησεν     | ἄρχοντα        | καὶ          | δικαστήν;  |
|       |     | L-Dis            |              |                |                |              |            |
| Top+  |     | τοῦτον           | Top          | ὁ              | θεὸς           | Top          | [καὶ]      |
|       |     |                  | ἄρχοντα      | καὶ            | λυτρωτὴν       |              | ἀπέσταλκεν |
|       |     |                  | σὺν          | χειρὶ          | ἀγγέλου        |              |            |
|       | 3   |                  | τοῦ          | ὀφθέντος       | αὐτῷ           | ἐν           | τῇ         |
|       |     |                  | βάτῳ.        |                |                |              |            |
|       |     | <b>36</b>        | Top+         | οὗτος          | ἐξήγαγεν       | αὐτούς       |            |
|       | 3   |                  | ποιήσας      | τέρατα         | καὶ            | σημεῖα       | ἐν         |
|       |     |                  | τῇ           | γῇ             | Αἰγύπτῳ        | καὶ          | ἐν         |
|       |     |                  | Ἐρυθρᾷ       | Θαλάσσῃ        | καὶ            | ἐν           | τῇ         |
|       |     |                  | ἐρήμῳ        | ἔτη            | τεσσαεράκοντα. |              |            |
|       |     | <b>37</b>        | Top+         | οὗτός          | ἐστίν          | ὁ            | Μωϋσῆς     |
|       | 3   |                  | ὁ            | εἶπας          | τοῖς           | υἱοῖς        | Ἰσραὴλ,    |
|       |     | <b>Προσηύτην</b> | ἡμῖν         | ἀναστήσει      | ὁ              | θεὸς         | ἐκ         |
|       |     |                  | τῶν          | ἀδελφῶν        | ὑμῶν           | ὡς           | ἔμε.       |
|       |     | <b>38</b>        | Top+         | οὗτός          | ἐστίν          | ὁ            | γενόμενος  |
|       |     |                  | ἐν           | τῇ             | ἐκκλησίᾳ       | ἐν           | τῇ         |
|       |     |                  | ἐρήμῳ        | μετὰ           | τοῦ            | ἀγγέλου      |            |
|       | 3   |                  | τοῦ          | λαλοῦντος      | αὐτῷ           | ἐν           | τῷ         |
|       |     |                  | ὄρει         | Σινᾶ           |                |              |            |
|       | 4   |                  | καὶ          | τῶν            | πατέρων        | ἡμῶν,        |            |
|       | 2   |                  | ὃς           | ἐδέξατο        | λόγια          | ζῶντα        |            |
|       | 3   |                  | δοῦναι       | ἡμῖν,          |                |              |            |
|       | 2   |                  | <b>39</b>    | ὧ              | οὐκ            | ἠθέλησαν     |            |
|       | 3   |                  | ὑπήκοοι      | γενέσθαι       | οἱ             | πατέρες      | ἡμῶν,      |
|       | 2   |                  | ἀλλὰ         | ἀπόσαντο       |                |              |            |
|       | 2   |                  | καὶ          | ἐστράφησαν     | ἐν             | ταῖς         | καρδίαις   |
|       |     |                  | αὐτῶν        | εἰς            | Αἴγυπτον.      |              |            |
|       | 3   |                  | <b>40</b>    | εἰπόντες       | τῷ             | Ἀαρῶν,       |            |
|       | 2   |                  | ποίησον      | ἡμῖν           | θεοὺς          |              |            |
|       | 3   |                  | οἱ           | προπορεύσονται | ἡμῶν.          |              |            |
| L-Dis | Th+ | ὁ                | γὰρ          | L-Dis          | Th+            | Μωϋσῆς       | οὗτος,     |
|       |     | Th+              | ὃς           | ἐξήγαγεν       | ἡμᾶς           | ἐκ           | τῆς        |
|       |     |                  | Αἰγύπτου.    |                |                |              | L-Dis      |
|       | 2   |                  | οὐκ          | οἶδαμεν        |                |              |            |
|       | 3   |                  | τί           | ἐγένετο        | αὐτῷ.          |              |            |
|       | 2   |                  | <b>41</b>    | καὶ            | ἐμοσχοποίησαν  | ἐν           | ταῖς       |
|       |     |                  | ἡμέραις      | ἐκεῖναις       |                |              |            |
|       | 2   |                  | καὶ          | ἀνήγαγον       | θυσίαν         | τῷ           | εἰδώλῳ     |
|       | 2   |                  | καὶ          | εὐφραίνοντο    | ἐν             | τοῖς         | ἔργοις     |
|       |     |                  | τῶν          | χειρῶν         | αὐτῶν.         |              |            |
|       | 2   |                  | <b>42</b>    | ἔστρεψεν       | δὲ             | ὁ            | θεὸς       |
|       | 2   |                  | καὶ          | παρέδωκεν      | αὐτούς         |              |            |
|       | 3   |                  | λατρεύειν    | τῇ             | στρατιᾷ        | τοῦ          | οὐρανοῦ    |
|       | 4   |                  | καθὼς        | γέγραπται      | ἐν             | βίβλῳ        | τῶν        |
|       |     |                  | προφητῶν,    |                |                |              |            |
|       |     | <b>Μὴ</b>        | σφάγια       | καὶ            | θυσίας         | προσηνέγκατέ | μοι        |
|       |     |                  | ἔτη          | τεσσαεράκοντα  | ἐν             | τῇ           | ἐρήμῳ.     |
|       | 2   |                  | <b>43</b>    | καὶ            | ἀνελάβετε      | τὴν          | σκηνὴν     |
|       |     |                  | τοῦ          | Μόλοχ          | καὶ            | τὸ           | ἄστρον     |
|       |     |                  | τοῦ          | θεοῦ           | [ὑμῶν]         | Ρααμάν.      |            |
|       | 3   | App              | τούς         | τύπους         | οὓς            | ἐποιήσατε    |            |
|       | 4   |                  | προσκυνεῖν   | αὐτοῖς,        | App            |              |            |
|       | 2   |                  | καὶ          | μετοικίω       | ὑμῖς           | ἐπέκεινα     | Βαβυλῶνος. |
|       |     | <b>44</b>        | Top          | Ἡ              | σκηνὴ          | τοῦ          | μαρτυρίου  |
|       |     |                  | Top          | ἦν             | τοῖς           | πατράσι      | ἡμῶν       |
|       |     |                  | ἐν           | τῇ             | ἐρήμῳ          |              |            |
|       | 3   |                  | καθὼς        | διετάρξατο     | ὁ              | λαλῶν        | τῷ         |
|       |     |                  | Μωϋσῇ        |                |                |              |            |
|       | 4   |                  | ποιῆσαι      | αὐτὴν          | κατὰ           | τὸν          | τύπον      |
|       | 5   |                  | ὃν           | ἑώρακει.       |                |              |            |
|       | 2   |                  | <b>45</b>    | ἦν             | καὶ            | εἰσήγαγον    |            |
|       | 3   |                  | διαδεξάμενοι | οἱ             | πατέρες        | ἡμῶν         | μετὰ       |
|       |     |                  | Ἰησοῦ        |                |                |              |            |



|     |          |  |  |
|-----|----------|--|--|
|     | 4        | ἐν τῇ κατασχέσει τῶν ἐθνῶν,  |  |
| 2   |          | ὧν ἐξῴσεν ὁ θεὸς ἀπὸ προσώπου τῶν πατέρων ἡμῶν ἕως τῶν ἡμερῶν Δαυίδ,               |  |
| 2   | 46       | ὃς εὗρεν χάριν ἐνώπιον τοῦ θεοῦ  |  |
| 2   |          | καὶ ἠτήσατο εὗρεν σκῆνωμα τῷ οἴκῳ Ἰακώβ.   |  |
| 47  |          | Σολομῶν δὲ οἰκοδόμησεν αὐτῷ οἶκον.   |  |
| 48  |          | ἀλλ' οὐχ ὁ ὑψιστος ἐν χειροποιήτοις κατοικεῖ,                                      |  |
|     | 3        | καθὼς ὁ προφήτης λέγει,  |  |
| 49  | Top      | Ὁ οὐρανὸς μοι θρόνος,  |  |
| Top | Top      | ἢ δὲ τῇ ὑποπόδιον τῶν ποδῶν μου  |  |
|     |          | ποιῶν οἶκον οἰκοδομήσετέ μοι,  |  |
| 2   |          | λέγει κύριος,  |  |
|     |          | ἢ τίς τόπος τῆς καταπαύσεώς μου;   |  |
| 50  |          | οὐχ ἢ χεῖρ μου ἐποίησεν ταῦτα πάντα;   |  |
| 51  |          | Σκληροτράχηλοι καὶ ἀπερίτμητοι καρδίας καὶ τοῖς ὠσίν,                              |  |
| Top |          | ὑμεῖς ἀεὶ τῷ πνεύματι τῷ ἁγίῳ ἀντιπίπτετε  |  |
|     | 3        | ὡς οἱ πατέρες ὑμῶν καὶ ὑμεῖς,  |  |
| 52  |          | τίνα τῶν προφητῶν οὐκ ἐδίωξαν οἱ πατέρες ὑμῶν;                                     |  |
| 2   |          | καὶ ἀπέκτειναν τοὺς προκαταγγείλαντας περὶ τῆς ἐλεύσεως τοῦ δικαίου,               |  |
| οὐ  | Sit      | νῦν ὑμεῖς προδόται καὶ φονεῖς ἐγένεσθε,  |  |
| 2   |          | 53 οἵτινες ἐλάβετε τὸν νόμον εἰς διαταγὰς ἀγγέλων                                  |  |
| 2   |          | καὶ οὐκ ἐφυλάξατε.   |  |
| 54  |          | Ἀκούοντες δὲ ταῦτα   |  |
| 2   |          | διεπρίοντο ταῖς καρδίαις αὐτῶν   |  |
| 2   |          | καὶ ἔβρυχον τοὺς ὀδόντας ἐπ' αὐτόν.  |  |
| 55  |          | ὑπάρχων δὲ πλήρης πνεύματος ἁγίου  |  |
|     |          | ἀτενίσας εἰς τὸν οὐρανὸν   |  |
| 2   |          | εἶδεν δόξαν θεοῦ   |  |
|     | 3        | καὶ Ἰησοῦν ἐστῶτα ἐκ δεξιῶν τοῦ θεοῦ   |  |
| 2   |          | 56 καὶ εἶπεν,  |  |
|     |          | Ἰδοὺ θεωρῶ τοὺς οὐρανοὺς διηνοιγμένους   |  |
|     | 3        | καὶ τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐκ δεξιῶν ἐστῶτα τοῦ θεοῦ.                               |  |
| 57  |          | κράξαντες δὲ φωνῇ μεγάλῃ   |  |
| 2   |          | συνέσχον τὰ ὦτα αὐτῶν  |  |
| 2   |          | καὶ ὠρμησαν ὁμοθυμαδὸν ἐπ' αὐτόν   |  |
| 58  |          | καὶ ἐκβαλόντες ἔξω τῆς πόλεως  |  |
| 2   |          | ἐλιθοβόλουν.   |  |
| καὶ | Top      | οἱ μάρτυρες ἀπέθεντο τὰ ἱμάτια αὐτῶν παρὰ τοὺς πόδας νεανίου                       |  |
|     | 3        | καλουμένου Σαύλου,   |  |
| 2   |          | 59 καὶ ἐλιθοβόλουν τὸν Στέφανον  |  |
|     | 3        | ἐπικαλούμενον καὶ λέγοντα,   |  |
|     |          | Κύριε Ἰησοῦ, δέξαι τὸ πνευμά μου.  |  |
| 60  |          | θεῖς δὲ τὰ γόνατα  |  |
| 2   |          | ἔκραξεν φωνῇ μεγάλῃ,   |  |
|     |          | Κύριε, μὴ στήσης αὐτοῖς ταύτην τὴν ἁμαρτίαν.                                       |  |
| καὶ | Top+ T-H | τούτο εἰπὼν  |  |
| 2   |          | ἐκοιμήθη.  |  |
| 8   | Top+     | Σαῦλος δὲ ἦν συνευδοκῶν τῇ ἀναίρέσει αὐτοῦ.  |  |
| 2   |          | Ἐγένετο δὲ ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ διωγμὸς μέγας ἐπὶ τὴν ἐκκλησίαν τὴν ἐν Ἱεροσολύμοις, |  |
| Top |          | πάντες δὲ διεσπάρησαν κατὰ τὰς χώρας τῆς Ἰουδαίας καὶ Σαμαρείας πλὴν τῶν           |  |
|     |          | ἀποστόλων.   |  |
| 2   |          | 2 συνεκόμισαν δὲ τὸν Στέφανον ἄνδρες εὐλαβεῖς                                      |  |
| 2   |          | καὶ ἐποίησαν κοπετὸν μέγαν ἐπ' αὐτῷ.   |  |
| 3   | Top+     | Σαῦλος δὲ ἐλυμαίνετο τὴν ἐκκλησίαν   |  |
|     | 3        | κατὰ τοὺς οἴκους εἰσπορευόμενος,   |  |

- σύρων τε ἄνδρας καὶ γυναῖκας  
<sup>2</sup> παρεδίδου εἰς φυλακὴν.  
**4** <sup>Top</sup> Οἱ μὲν οὖν <sup>Top</sup> διασπαρέντες διήλθον  
<sup>3</sup> εὐαγγελιζόμενοι τὸν λόγον.  
**5** <sup>Top+</sup> Φίλιππος δὲ κατελθὼν εἰς [τὴν] πόλιν τῆς Σαμαρείας  
<sup>2</sup> ἐκήρυσεν αὐτοῖς τὸν Χριστόν.  
<sup>2</sup> **6** προσεῖχον δὲ οἱ ὄχλοι τοῖς λεγομένοις ὑπὸ τοῦ Φιλίππου ὁμοθυμαδόν  
<sup>3</sup> ἐν τῷ ἀκούειν αὐτοὺς  
<sup>4</sup> καὶ βλέπειν τὰ σημεῖα  
<sup>5</sup> ἃ ἐποίει.  
**7** <sup>Top</sup> πολλοὶ γὰρ <sup>Top</sup> τῶν ἐχόντων πνεύματα ἀκάθαρτα <sup>Top</sup> βοῶντα φωνῇ μεγάλῃ ἐξήρχοντο,  
<sup>Top</sup> πολλοὶ δὲ <sup>Top</sup> παραλελυμένοι καὶ χωλοὶ <sup>Top</sup> ἐθεραπεύθησαν·  
<sup>2</sup> **8** ἐγένετο δὲ πολλὴ χαρὰ ἐν τῇ πόλει ἐκείνῃ.  
**9** Ἄνῆρ δὲ τις ὀνόματι Σίμων προὔπηρχεν ἐν τῇ πόλει  
<sup>3</sup> μαγεύων  
<sup>3</sup> καὶ ἐξιστάνων τὸ ἔθνος τῆς Σαμαρείας,  
<sup>3</sup> λέγων  
<sup>4</sup> εἶναί τινα ἑαυτὸν Split μέγαν,  
<sup>2</sup> **10** ᾧ προσεῖχον πάντες ἀπὸ μικροῦ ἕως μεγάλου  
<sup>3</sup> λέγοντες,  
<sup>Top+</sup> Οὗτός ἐστιν ἡ δύναμις τοῦ θεοῦ ἡ καλουμένη Μεγάλη.  
<sup>2</sup> **11** προσεῖχον δὲ αὐτῷ  
<sup>4</sup> διὰ τὸ <sup>Sit</sup> ἰκανῶ χρόνῳ <sup>Sit</sup> ταῖς μαγείαις ἐξεστακέσαι αὐτούς.  
**12** <sup>Sit</sup> ὅτε δὲ <sup>Sit</sup> ἐπίστευσαν τῷ Φιλίππῳ  
<sup>3</sup> εὐαγγελιζομένῳ περὶ τῆς βασιλείας τοῦ θεοῦ καὶ τοῦ ὀνόματος Ἰησοῦ Χριστοῦ, <sup>Sit</sup>  
<sup>2</sup> ἐβαπτίζοντο ἄνδρες τε καὶ γυναῖκες.  
**13** <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Σίμων καὶ αὐτὸς ἐπίστευσεν  
καὶ βαπτισθεὶς  
<sup>2</sup> ἦν προσκαρτερῶν τῷ Φιλίππῳ,  
θεωρῶν τε σημεῖα καὶ δυνάμεις μεγάλας γινομένας  
<sup>2</sup> ἐξίστατο.  
**14** Ἀκούσαντες δὲ οἱ Emb ἐν Ἱεροσολύμοις Emb ἀπόστολοι  
<sup>3</sup> ὅτι δέδεκται ἡ Σαμάρεια τὸν λόγον τοῦ θεοῦ,  
<sup>2</sup> ἀπέστειλαν πρὸς αὐτοὺς Πέτρον καὶ Ἰωάννην,  
**15** οἵτινες καταβάντες  
<sup>2</sup> προσηύξαντο περὶ αὐτῶν  
<sup>3</sup> ὅπως λάβωσιν πνεῦμα ἅγιον·  
**16** οὐδέπω γὰρ ἦν Emb ἐπ' οὐδενὶ αὐτῶν Emb ἐπιπεπτωκός,  
μόνον δὲ βεβαπτισμένοι ὑπῆρχον εἰς τὸ ὄνομα τοῦ κυρίου Ἰησοῦ.  
<sup>2</sup> **17** τότε ἐπετίθεσαν τὰς χεῖρας ἐπ' αὐτούς  
<sup>2</sup> καὶ ἐλάβανον πνεῦμα ἅγιον.  
**18** ἰδὼν δὲ ὁ Σίμων  
<sup>3</sup> ὅτι διὰ τῆς ἐπιθέσεως τῶν χειρῶν τῶν ἀποστόλων δίδεται τὸ πνεῦμα,  
<sup>2</sup> προσήνεγκεν αὐτοῖς χρήματα  
<sup>3</sup> **19** λέγων,  
<sup>2</sup> Δότε κάμοι <sup>Th+</sup> τὴν ἐξουσίαν ταύτην <sup>Th+</sup>  
<sup>3</sup> ἵνα <sup>L-Dis</sup> ᾧ ἐὰν ἐπιθῶ τὰς χεῖρας <sup>L-Dis</sup>  
<sup>4</sup> λαμβάνῃ πνεῦμα ἅγιον.  
**20** <sup>Top+</sup> Πέτρος δὲ εἶπεν πρὸς αὐτόν,  
<sup>TopGen</sup> Τὸ ἀργύριόν σου <sup>TopGen</sup> σὺν σοὶ εἶη εἰς ἀπώλειαν  
<sup>3</sup> ὅτι <sup>Top</sup> τὴν δωρεάν τοῦ θεοῦ <sup>Top</sup> ἐνόμισας Emb διὰ χρημάτων Emb κτᾶσθαι·  
<sup>2</sup> **21** οὐκ ἔστιν σοι μερὶς οὐδὲ κλῆρος <sup>Th+</sup> ἐν τῷ λόγῳ τούτῳ, <sup>Th+</sup>  
<sup>Top</sup> ἡ γὰρ <sup>Top</sup> καρδία σου <sup>Top</sup> οὐκ ἔστιν εὐθεῖα ἔναντι τοῦ θεοῦ.  
<sup>2</sup> **22** μετανόησον οὖν <sup>Th+</sup> ἀπὸ τῆς κακίας σου ταύτης <sup>Th+</sup>

- 2 καὶ δεήθητι τοῦ κυρίου,  
 3 εἰ ἄρα ἀφεθήσεται σοι ἡ ἐπίνοια τῆς καρδίας σου,  
 23 εἰς γὰρ **χολὴν πικρίας καὶ σύνδεσμον ἀδικίας** ὁρῶ σε ὄντα.  
 24 ἀποκριθεὶς δὲ ὁ **Σίμων**  
 2 εἶπεν,  
 2 Δεήθητε **ὑμεῖς** ὑπὲρ ἐμοῦ πρὸς τὸν κύριον  
 3 ὅπως **μηδὲν** ἐπέλθῃ ἐπ' ἐμὲ **ὧν εἰρήκατε**.  
 25 <sup>Top</sup> Οἱ μὲν οὖν διαμαρτυράμενοι καὶ λαλήσαντες τὸν λόγον τοῦ κυρίου  
 2 ὑπέστρεφον εἰς Ἱεροσόλυμα,  
 2 **πολλὰς** τε **κώμας τῶν Σαμαριτῶν** εὐηγγελίζοντο.  
 26 \* Ἄγγελος δὲ \* κυρίου ἐλάλησεν <sup>Th+</sup> πρὸς Φίλιππον <sup>Th+</sup>  
 3 λέγων,  
 2 Ἀνάστηθι καὶ πορεύου κατὰ μεσημβρίαν ἐπὶ τὴν ὁδὸν  
 3 τὴν καταβαίνουσαν ἀπὸ Ἱερουσαλήμ εἰς Γάζαν,  
 2 <sup>Top+</sup> αὕτη ἐστὶν ἔρημος.  
 27 καὶ ἀναστὰς  
 2 ἐπορεύθη.  
 2 καὶ **Ἰδοῦ** ἀνὴρ Αἰθίοψ εὐνοῦχος δυνάστης Κανδάκης βασιλίσσης Αἰθιοπῶν,  
 3 ὃς ἦν ἐπὶ πάσης τῆς γάζης αὐτῆς,  
 3 ὃς ἐληλύθει  
 4 προσκυνήσων εἰς Ἱερουσαλήμ,  
 2 28 ἦν τε ὑποστρέφων καὶ καθήμενος ἐπὶ τοῦ ἅρματος αὐτοῦ  
 2 καὶ ἀνεγίνωσκεν τὸν προφήτην Ἡσαΐαν.  
 2 29 εἶπεν δὲ τὸ πνεῦμα τῷ Φιλίππῳ,  
 2 **Πρόσελθε καὶ κολλήθητι** <sup>Th+</sup> τῷ ἅρματι τούτῳ. <sup>Th+</sup>  
 30 προσδραμῶν δὲ ὁ **Φίλιππος**  
 2 ἤκουσεν αὐτοῦ  
 3 ἀναγινώσκοντος Ἡσαΐαν τὸν προφήτην  
 2 καὶ εἶπεν,  
 2 Ἄρα γε γινώσκεις  
 3 ἃ ἀναγινώσκεις;  
 31 <sup>Top</sup> ὁ δὲ εἶπεν,  
 2 Πῶς γὰρ ἂν δυναίμην  
 3 εἶν μὴ <sup>Top</sup> τις ὀδηγήσει με;  
 2 παρεκάλεσέν τε τὸν Φίλιππον  
 3 ἀναβάντα  
 4 καθίσαι σὺν αὐτῷ.  
 32 <sup>Top</sup> ἡ δὲ <sup>Top</sup> περιοχὴ τῆς γραφῆς ἣν ἀνεγίνωσκεν <sup>Top</sup> ἦν **αὕτη**.  
 2 **Ὡς** <sup>Top</sup> **πρόβατον** <sup>Emb</sup> **ἐπὶ σφαγῆν** <sup>Emb</sup> **ἤχθη**  
 2 **καὶ ὡς** <sup>Top</sup> **ἀμνὸς ἐναντίον τοῦ κείραντος αὐτὸν ἄφωνος**.  
 2 **οὕτως οὐκ ἀνοίγει τὸ στόμα αὐτοῦ.**  
 33 <sup>Sit</sup> **Ἐν τῇ ταπεινώσει** [αὐτοῦ] <sup>Sit</sup> <sup>Top</sup> **ἡ κρίσις** <sup>Top</sup> **αὐτοῦ ἤρθη**.  
 2 <sup>Top</sup> **τὴν γενεάν αὐτοῦ** <sup>Top</sup> **τίς διηγήσεται;**  
 3 **ὅτι αἶρεται ἀπὸ τῆς γῆς ἡ ζωὴ αὐτοῦ.**  
 34 ἀποκριθεὶς δὲ ὁ εὐνοῦχος τῷ Φιλίππῳ  
 2 εἶπεν,  
 2 Δέομαί σου,  
 2 **περὶ τίνος** ὁ προφήτης λέγει <sup>Th+</sup> τοῦτο;  
 3 <sup>R-Dis</sup> **περὶ ἐαυτοῦ ἢ περὶ ἑτέρου τινός;** <sup>R-Dis</sup>  
 35 ἀνοίξας δὲ ὁ **Φίλιππος** τὸ στόμα αὐτοῦ  
 2 καὶ ἀρξάμενος <sup>Th+</sup> ἀπὸ τῆς γραφῆς ταύτης <sup>Th+</sup>  
 2 εὐηγγελίσατο αὐτῷ τὸν Ἰησοῦν.  
 36 <sup>Sit</sup> ὡς δὲ <sup>Sit</sup> ἐπορεύοντο κατὰ τὴν ὁδόν, <sup>Sit</sup>  
 2 ἦλθον ἐπὶ τι ὕδωρ,

2 καί φησιν ὁ εὐνοῦχος,  
**Ἴδου** ὕδωρ,  
τί κωλύει με  
3 βαπτισθῆναι;  
2 **38** καὶ ἐκέλευσεν στήναι τὸ ἄρμα  
2 καὶ κατέβησαν ἀμφότεροι εἰς τὸ ὕδωρ, |<sup>R-Dis</sup> ὃ τε Φίλιππος καὶ ὁ εὐνοῦχος, |<sup>R-Dis</sup>  
2 καὶ ἐβάπτισεν αὐτόν.  
**39** <sup>Sit</sup> ὅτε δὲ <sup>Sit</sup> ἀνέβησαν ἐκ τοῦ ὕδατος, <sup>Sit</sup>  
<sup>Top+</sup> πνεῦμα κυρίου <sup>Top+</sup> ἤρπασεν τὸν Φίλιππον  
2 καὶ οὐκ εἶδεν αὐτόν οὐκέτι <sup>ThS+</sup> ὁ εὐνοῦχος, <sup>ThS+</sup>  
2 ἐπορεύετο γὰρ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ  
3 χαίρων.  
**40** <sup>Top+</sup> Φίλιππος δὲ εὐρέθη εἰς Ἄζωτον·  
καὶ διερχόμενος  
2 εὐηγγελίζετο τὰς πόλεις <sup>Emb</sup> πάσας;  
3 ἕως τοῦ ἔλθειν αὐτόν εἰς Καισάρειαν.  
**9** <sup>Top</sup> Ὁ δὲ <sup>Top</sup> Σαῦλος ἔτι ἐμπνέων ἀπειλῆς καὶ φόνου εἰς τοὺς μαθητὰς τοῦ κυρίου,  
προσελθὼν τῷ ἀρχιερεῖ  
2 **2** ἠτήσατο παρ' αὐτοῦ ἐπιστολὰς εἰς Δαμασκὸν <sup>Emb</sup> πρὸς τὰς συναγωγὰς;  
3 ὅπως <sup>Sit</sup> ἔάν <sup>Emb</sup> τινὰς εὐρη <sup>Emb Split</sup> τῆς ὁδοῦ <sup>Emb</sup> ὄντας, <sup>Split</sup> <sup>App</sup> ἄνδρας τε καὶ  
<sup>App Sit</sup> γυναικάς,  
4 <sup>Emb</sup> δεδεμένους ἀγάγῃ εἰς Ἱερουσαλὴμ.  
**3** <sup>Sit</sup> ἐν δὲ <sup>Sit</sup> τῷ πορεύεσθαι <sup>Sit</sup>  
2 ἐγένετο αὐτὸν ἐγγίξιν τῇ Δαμασκῷ,  
<sup>Sit</sup> ἐξαίφνης τε αὐτὸν περιήστραψεν φῶς ἐκ τοῦ οὐρανοῦ  
**4** καὶ πεσὼν ἐπὶ τὴν γῆν  
2 ἤκουσεν φωνὴν  
3 λέγουσαν αὐτῷ,  
**Σαοὺλ Σαοὺλ, τί με <sup>Emb</sup> διώκεις;**  
2 **5** εἶπεν δέ,  
**Τίς εἶ, κύριε;**  
<sup>Art</sup> ὁ δέ,  
<sup>Top</sup> **Ἐγὼ εἰμι Ἰησοῦς**  
3 ὃν <sup>\*Top</sup> σὺ <sup>Emb</sup> διώκεις;  
2 **6** ἀλλὰ ἀνάστηθι  
2 καὶ εἴσελθε εἰς τὴν πόλιν  
2 καὶ λαληθήσεται σοι  
3 ὃ τί σε <sup>Emb</sup> δεῖ ποιεῖν.  
**7** <sup>Top</sup> οἱ δὲ <sup>Top</sup> ἄνδρες οἱ συνοδεύοντες αὐτῷ <sup>Top</sup> εἰστήκεισαν ἐνεοί,  
3 ἀκούοντες μὲν τῆς φωνῆς  
3 <sup>Constit</sup> μηδὲνα δὲ θεωροῦντες.  
2 **8** ἠγέρθη δὲ <sup>Th+</sup> Σαῦλος ἀπὸ τῆς γῆς,  
ἀνεωγμένων δὲ τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ  
2 <sup>Constit</sup> οὐδὲν ἔβλεπεν·  
χειραγωγούντες δὲ αὐτόν  
2 εἰσήγαγον εἰς Δαμασκόν.  
2 **9** καὶ ἦν <sup>Emb</sup> ἡμέρας τρεῖς <sup>Emb</sup> μὴ βλέπων  
2 καὶ οὐκ ἔφαγεν οὐδὲ ἔπιεν.  
2 **10** Ἦν δὲ τις μαθητῆς ἐν Δαμασκῷ ὀνόματι Ἀνανίας,  
2 καὶ εἶπεν πρὸς αὐτόν ἐν ὁράματι <sup>ThS+</sup> ὁ κύριος, <sup>ThS+</sup>  
**Ἀνανία.**  
<sup>Art</sup> ὁ δὲ εἶπεν,  
**Ἴδου ἐγώ, κύριε.**  
**11** <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> κύριος πρὸς αὐτόν,

Ἀναστάς

2 πορευθήτι ἐπὶ τὴν ῥύμην τὴν καλουμένην Εὐθείαν  
2 καὶ ζήτησον ἐν οἰκίᾳ Ἰούδα <sup>Emb</sup> Σαῦλον <sup>Emb</sup> ὀνόματι Ταρσέα·

**ἰδοὺ** γὰρ προσεύχεται

2 **12** καὶ εἶδεν ἄνδρα [ἐν ὀράματι] <sup>App Emb</sup> Ἀνανίαν <sup>App</sup> ὀνόματι

3 εἰσελθόντα

3 καὶ ἐπιθέντα αὐτῷ [τὰς] χεῖρας

4 ὅπως ἀναβλέψῃ.

2 **13** ἀπεκρίθη δὲ <sup>Th+</sup> Ἀνανίας,

Κύριε, ἤκουσα ἀπὸ πολλῶν <sup>Th+</sup> περὶ τοῦ ἀνδρὸς τούτου <sup>Th+</sup>

3 ὅσα κακὰ <sup>Emb</sup> τοῖς ἁγίοις σου ἐποίησεν ἐν Ἱερουσαλήμ·

**14** καὶ <sup>Sit</sup> ᾧδε ἔχει ἕξουσίαν παρὰ τῶν ἀρχιερέων

3 δηῆσαι πάντας τοὺς ἐπικαλουμένους τὸ ὄνομά σου.

2 **15** εἶπεν δὲ πρὸς αὐτὸν **ὁ κύριος,**

2 Πορεύου,

3 ὅτι <sup>Emb</sup> σκευὸς ἐκλογῆς ἐστίν μοι <sup>ThS+</sup> οὗτος

4 τοῦ βαστάσαι τὸ ὄνομά μου ἐνώπιον ἐθνῶν τε καὶ βασιλέων υἱῶν τε Ἰσραὴλ·

**16** <sup>Top</sup> ἐγὼ γὰρ ὑποδείξω αὐτῷ

3 ὅσα δεῖ αὐτὸν <sup>Emb</sup> ὑπὲρ τοῦ ὀνόματός μου <sup>Emb</sup> παθεῖν·

2 **17** Ἀπήλθεν δὲ <sup>Th+</sup> Ἀνανίας

2 καὶ εἰσήλθεν εἰς τὴν οἰκίαν

καὶ ἐπιθείς ἐπ' αὐτὸν τὰς χεῖρας

2 εἶπεν,

Σαοὺλ ἀδελφέ, <sup>Emb</sup> ὁ κύριος ἀπέσταλκέν με, <sup>App</sup> Ἰησοῦς |

4 <sup>App</sup> ὁ ὀφθεῖς σοι ἐν τῇ ὁδῷ ἧ ἤρχου, <sup>App</sup>

3 ὅπως ἀναβλέψῃς

4 καὶ πλησθῆς πνεύματος ἁγίου.

**18** καὶ εὐθέως ἀπέπεσαν <sup>TopGen</sup> αὐτοῦ ἀπὸ τῶν ὀφθαλμῶν <sup>Emb</sup> ὡς λεπίδες,

2 ἀνέβλεψέν τε

καὶ ἀναστάς

2 ἐβαπτίσθη

**19** καὶ λαβὼν τροφήν

2 ἐνίσχυσεν.

2 Ἐγένετο δὲ μετὰ τῶν ἐν Δαμασκῷ μαθητῶν <sup>Emb</sup> ἡμέρας τινάς·

**20** καὶ εὐθέως <sup>Emb</sup> ἐν ταῖς συναγωγαῖς <sup>Emb</sup> ἐκήρυσσεν τὸν Ἰησοῦν

3 ὅτι <sup>Top+</sup> οὗτός ἐστιν ὁ υἱὸς τοῦ θεοῦ.

2 **21** ἐξίσταντο δὲ πάντες οἱ ἀκούοντες

2 καὶ ἔλεγον,

Οὐχ <sup>Top+</sup> οὗτός ἐστιν ὁ πορθήσας εἰς Ἱερουσαλήμ <sup>Emb</sup> τοὺς ἐπικαλουμένους <sup>Th+</sup> τὸ ὄνομα

<sup>Emb Th+</sup> τοῦτο,

καὶ <sup>Sit</sup> ᾧδε <sup>\* Cata</sup> εἰς τοῦτο <sup>\* Cata</sup> ἐληλύθει

3 ἵνα δεδεμένους αὐτοὺς

4 ἀγάγῃ ἐπὶ τοὺς ἀρχιερεῖς;

**22** <sup>Top+</sup> Σαῦλος δὲ μᾶλλον ἐνεδυναμοῦτο

2 καὶ συνέχυνεν [τοὺς] Ἰουδαίους τοὺς κατοικοῦντας ἐν Δαμασκῷ

3 συμβιβάζων

4 ὅτι <sup>Top+</sup> οὗτός ἐστιν ὁ Χριστός.

**23** <sup>Sit</sup> Ὡς δὲ <sup>Sit</sup> ἐπληροῦντο ἡμέραι ἱκαναί, <sup>Sit</sup>

2 συνεβουλεύσαντο οἱ Ἰουδαῖοι

3 ἀνελεῖν αὐτόν·

2 **24** ἐγνώσθη δὲ τῷ Σαύλῳ <sup>ThS+</sup> ἡ ἐπιβουλὴ αὐτῶν. <sup>ThS+</sup>

2 παρατηροῦντο δὲ καὶ τὰς πύλας ἡμέρας τε καὶ νυκτὸς

3 ὅπως αὐτὸν <sup>Emb</sup> ἀνέλωσιν·

**25** λαβόντες δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ νυκτὸς

διὰ τοῦ τείχους καθῆκαν αὐτὸν

<sup>3</sup> χαλάσαντες ἐν σπυρίδι.

**26** Παραγενόμενος δὲ εἰς Ἱερουσαλὴμ

<sup>2</sup> ἐπείραζεν κολλᾶσθαι τοῖς μαθηταῖς,

καὶ <sup>Top+</sup> πάντες ἐφοβοῦντο αὐτὸν

<sup>3</sup> μὴ πιστεύοντες

<sup>4</sup> ὅτι ἐστὶν μαθητῆς.

**27** <sup>Top+</sup> Βαρναβᾶς δὲ ἐπιλαβόμενος αὐτὸν

<sup>2</sup> ἤγαγεν πρὸς τοὺς ἀποστόλους

<sup>2</sup> καὶ διηγήσατο αὐτοῖς

<sup>3</sup> πῶς <sup>Sit</sup> ἐν τῇ ὁδῷ <sup>Sit</sup> εἶδεν τὸν κύριον

<sup>3</sup> καὶ ὅτι ἐλάλησεν αὐτῷ

<sup>3</sup> καὶ πῶς <sup>Sit</sup> ἐν Δαμασκῷ <sup>Sit</sup> ἐπαρρησιάσατο ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ Ἰησοῦ.

<sup>2</sup> **28** καὶ ἦν μετ' αὐτῶν

<sup>3</sup> εἰσπορευόμενος καὶ ἐκπορευόμενος εἰς Ἱερουσαλὴμ,

<sup>3</sup> παρρησιαζόμενος ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ κυρίου,

<sup>2</sup> **29** ἐλάλει τε καὶ συνεζήτει πρὸς τοὺς Ἑλληνιστάς,

<sup>Art</sup> οἱ δὲ ἐπεχείρουν ἀνελεῖν αὐτόν.

**30** ἐπιγνόντες δὲ οἱ ἀδελφοὶ

<sup>2</sup> κατήγαγον αὐτὸν εἰς Καισάρειαν

<sup>2</sup> καὶ ἐξαπέστειλαν αὐτὸν εἰς Ταρσόν.

**31** <sup>Top</sup> Ἡ μὲν οὖν <sup>Top</sup> ἐκκλησία καθ' ὅλης τῆς Ἰουδαίας καὶ Γαλιλαίας καὶ Σαμαρείας εἶχεν εἰρήνην

<sup>3</sup> οἰκοδομουμένη

καὶ πορευομένη τῷ φόβῳ τοῦ κυρίου καὶ τῇ παρακλήσει τοῦ ἁγίου πνεύματος

<sup>2</sup> ἐπληθύνετο.

<sup>2</sup> **32** Ἐγένετο δὲ

<sup>Top+</sup> Πέτρον διερχόμενον διὰ πάντων

<sup>3</sup> κατελθεῖν καὶ πρὸς τοὺς ἁγίους τοὺς κατοικοῦντας Λύδδα.

<sup>2</sup> **33** εὔρεν δὲ ἐκεῖ ἄνθρωπὸν τινα ὀνόματι Αἰνέα

<sup>4</sup> ἕξ ἐτῶν ὀκτώ κατακείμενον ἐπὶ κρᾶββάτου,

<sup>3</sup> ὃς ἦν παραλελυμένος.

**34** καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Πέτρος,

Αἰνέα, ἰαταί σε Ἰησοῦς Χριστός·

<sup>2</sup> ἀνάστηθι καὶ στρώσον σεαυτῷ.

καὶ εὐθέως ἀνέστη.

<sup>2</sup> **35** καὶ εἶδαν αὐτὸν πάντες οἱ κατοικοῦντες Λύδδα καὶ τὸν Σαρῶνα,

<sup>2</sup> οἵτινες ἐπέστρεψαν ἐπὶ τὸν κύριον.

**36** <sup>Sit</sup> Ἐν Ἰόππῃ <sup>Sit</sup> δὲ τις ἦν <sup>Split</sup> μαθήτρια ὀνόματι Ταβιθά, <sup>Split</sup>

<sup>3</sup> ἣ διερμηνευομένη λέγεται Δορκάς·

<sup>Top+</sup> αὕτη ἦν πλήρης ἔργων ἀγαθῶν καὶ ἐλεημοσυνῶν

<sup>3</sup> ὧν ἐποίει.

<sup>2</sup> **37** Ἐγένετο δὲ

<sup>Sit</sup> ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις <sup>Sit</sup> ἀσθενήσασαν αὐτὴν

<sup>3</sup> ἀποθανεῖν·

λούσαντες δὲ

<sup>2</sup> ἔθηκαν [αὐτήν] ἐν ὑπερώῳ.

**38** ἐγγὺς δὲ οὔσης Λύδδας <sup>Split</sup> τῇ Ἰόππῃ <sup>Split</sup>

<sup>Top</sup> οἱ μαθηταὶ <sup>Top</sup> ἀκούσαντες

<sup>3</sup> ὅτι Πέτρος ἐστὶν ἐν αὐτῇ

<sup>2</sup> ἀπέστειλαν δύο ἄνδρας πρὸς αὐτὸν

<sup>3</sup> παρακαλοῦντες,

<sup>2</sup> Μὴ ὀκνήσης διελθεῖν ἕως ἡμῶν.

**39** ἀναστὰς δὲ <sup>Th+</sup> Πέτρος

2 συνήλθεν αὐτοῖς·  
 ὃν παραγενόμενον  
 2 ἀνήγαγον εἰς τὸ ὑπερῶν  
 2 καὶ παρέστησαν αὐτῷ πάσαι αἱ χήραι  
 3 κλαίουσαι  
 3 καὶ ἐπιδεικνύμεναι χιτῶνας καὶ ἱμάτια  
 4 ὅσα ἐποίει **Emb μετ'** αὐτῶν οὕσα ἡ Δορκάς.

**40** ἐκβαλὼν δὲ ἔξω πάντας <sup>ThS+</sup> ὁ Πέτρος <sup>ThS+</sup>  
 καὶ θεῖς τὰ γόνατα  
 2 προσηύξατο  
 καὶ ἐπιστρέψας πρὸς τὸ σῶμα  
 2 εἶπεν,

**Ταβιθά, ἀνάστηθι.**

<sup>Art</sup> ἡ δὲ ἤνοιξεν τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῆς,  
 καὶ ἰδοῦσα τὸν Πέτρον  
 2 ἀνεκάθισεν.

**41** δοὺς δὲ αὐτῇ χεῖρα  
 2 ἀνέστησεν αὐτήν·  
 φωνήσας δὲ τοὺς ἁγίους καὶ τὰς χήρας  
 2 παρέστησεν αὐτήν ζῶσαν.

**42** γνωστὸν δὲ ἐγένετο καθ' ὅλης τῆς Ἰόππης  
 2 καὶ ἐπίστευσαν πολλοὶ ἐπὶ τὸν κύριον.

**43** **Εγένετο** δὲ  
 3 **ἡμέρας ἱκανὰς** μεῖναι ἐν Ἰόππῃ **παρὰ τινι Σίμωνι βυρσεῖ.**

**10** <sup>Top</sup> Ἀνὴρ δὲ <sup>Top</sup> τις ἐν Καισαρείᾳ ὀνόματι Κορνήλιος,  
 ἑκατοντάρχης ἐκ σπειρῆς τῆς καλουμένης Ἰταλικῆς, <sup>Top</sup>

**2** εὐσεβῆς καὶ φοβούμενος τὸν θεὸν σὺν παντὶ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ,  
 ποιῶν ἐλεημοσύνας πολλὰς τῷ λαῷ  
 καὶ δεόμενος τοῦ θεοῦ διὰ παντός,

2 **3** εἶδεν ἐν ὁράματι φανερώς ὡσεὶ περὶ ὥραν ἐνάτην τῆς ἡμέρας **ἄγγελον τοῦ θεοῦ**  
 3 εἰσελθόντα πρὸς αὐτὸν  
 3 καὶ εἰπόντα αὐτῷ,  
 3 **Κορνήλιε.**

**4** <sup>Art</sup> ὁ δὲ ἀτενίσας αὐτῷ  
 καὶ **ἔμφοβος** γενόμενος

2 εἶπεν,  
**Τί ἐστίν, κύριε;**  
 2 εἶπεν δὲ αὐτῷ,

<sup>Top</sup> **Αἱ προσευχαί σου καὶ αἱ ἐλεημοσύναι σου** <sup>Top</sup> ἀνέβησαν εἰς μνημόσυνον ἔμπροσθεν τοῦ  
 θεοῦ.

**5** καὶ <sup>Sit</sup> νῦν πέμψον ἄνδρας εἰς Ἰόππην  
 2 καὶ μετάπεμψαι Σίμονά τινα  
 3 ὃς ἐπικαλεῖται Πέτρος·

**6** <sup>Top+</sup> οὗτος ξενίζεται παρὰ τινι Σίμωνι βυρσεῖ,  
 3 ᾧ ἐστὶν οἰκία παρὰ θάλασσαν.

**7** <sup>Sit</sup> ὡς δὲ <sup>Sit</sup> ἀπήλθεν ὁ ἄγγελος **ὁ λαλῶν αὐτῷ,** <sup>Sit</sup>

φωνήσας δύο τῶν οἰκετῶν καὶ στρατιώτην εὐσεβῆ τῶν προσκαρτερούντων αὐτῷ

**8** καὶ ἐξηγησάμενος ἅπαντα αὐτοῖς  
 2 ἀπέστειλεν αὐτοὺς εἰς τὴν Ἰόππην.

**9** <sup>Sit</sup> **Τῇ** δὲ <sup>Sit</sup> ἐπαύριον, ὁδοιπορούντων ἐκεῖνων  
 καὶ τῇ πόλει **ἔγγιζόντων,**

2 ἀνέβη <sup>Th+</sup> Πέτρος ἐπὶ τὸ δῶμα  
 3 προσεύξασθαι περὶ ὥραν ἕκτην.

2 **10** ἐγένετο δὲ πρόσπεινος



2 καὶ ἤθελεν γεύσασθαι.  
 παρασκευαζόντων δὲ αὐτῶν  
 2 ἐγένετο ἐπ' αὐτὸν ἕκστασις  
 2 **11** καὶ θεωρεῖ τὸν οὐρανὸν ἀνεωγμένον  
 3 καὶ καταβαίνον σκευὸς τι ὡς ὀθόνην μεγάλην  
 4 τέσσαρσιν ἀρχαῖς καθιέμενον ἐπὶ τῆς γῆς,  
 2 **12** ἐν ᾧ ὑπῆρχεν πάντα τὰ τετράποδα καὶ ἔρπετά τῆς γῆς καὶ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ.  
 2 **13** καὶ ἐγένετο φωνὴ πρὸς αὐτόν,  
 Ἀναστάς, Πέτρε,  
 2 θύσον καὶ φάγε.  
**14** <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Πέτρος εἶπεν,  
 2 Μηδαμῶς, κύριε,  
 3 ὅτι οὐδέποτε ἔφαγον πᾶν κοινὸν καὶ ἀκάθαρτον.  
**15** καὶ <sup>Top</sup> φωνὴ πάλιν ἐκ δευτέρου πρὸς αὐτόν,  
<sup>Top</sup> Ἄ \* ὁ θεὸς <sup>Emb</sup> ἐκαθάρισεν, \* <sup>Top</sup> σὺ μὴ κοίνου. \*  
**16** <sup>Top</sup> τοῦτο δὲ ἐγένετο ἐπὶ τρεῖς  
 καὶ εὐθὺς ἀνελήμφθη τὸ σκευὸς εἰς τὸν οὐρανόν.  
**17** <sup>Sit</sup> Ὡς δὲ <sup>Emb</sup> ἐν ἑαυτῷ <sup>Emb</sup> διηπόρει ὁ Πέτρος  
 3 τί ἂν εἴη τὸ ὄραμα  
 4 ὃ εἶδεν, <sup>Sit</sup>  
**ἰδοὺ** <sup>Top</sup> οἱ ἄνδρες οἱ ἀπεσταλμένοι ὑπὸ τοῦ Κορνηλίου <sup>Top</sup>  
 διερωτήσαντες τὴν οἰκίαν τοῦ Σίμωνος  
 2 ἐπέστησαν ἐπὶ τὸν πυλῶνα,  
**18** καὶ φωνήσαντες  
 2 ἐπυνθάνοντο  
 3 εἰ Σίμων ὁ ἐπικαλούμενος Πέτρος ἐνθάδε ξενίζεται.  
**19** <sup>Top</sup> τοῦ δὲ <sup>Top</sup> Πέτρου διενθυμουμένου περὶ τοῦ ὄραματος  
 2 εἶπεν [αὐτῷ] τὸ πνεῦμα,  
**ἰδοὺ** ἄνδρες τρεῖς ζητοῦντές σε,  
**20** ἀλλὰ ἀναστάς  
 2 κατάβηθι  
 2 καὶ πορεύου σὺν αὐτοῖς  
 4 <sup>Constit</sup> μηδὲν διακρινόμενος  
 3 ὅτι ἐγὼ ἀπέσταλκα αὐτούς.  
**21** καταβάς δὲ <sup>Th+</sup> Πέτρος πρὸς τοὺς ἄνδρας  
 2 εἶπεν,  
**ἰδοὺ** ἐγὼ εἰμι  
 3 ὃν ζητεῖτε·  
 τίς ἡ αἰτία  
 3 δι' ἣν πάρεστε;  
**22** <sup>Art</sup> οἱ δὲ εἶπαν,  
<sup>Top</sup> Κορνήλιος ἑκατοντάρχης, ἀνὴρ δίκαιος καὶ φοβούμενος τὸν θεόν, <sup>Top</sup>  
 μαρτυρούμενός τε ὑπὸ ὄλου τοῦ ἔθνους τῶν Ἰουδαίων,  
 2 ἐχρηματίσθη ὑπὸ ἀγγέλου ἀγίου  
 3 μεταπέμψασθαί σε εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ  
 3 καὶ ἀκοῦσαι ῥήματα παρὰ σοῦ.  
**23** εἰσκαλεσάμενος οὖν αὐτούς  
 2 ἐξένισεν.  
<sup>Sit</sup> Τῇ δὲ <sup>Sit</sup> ἐπαύριον ἀναστάς  
 2 ἐξῆλθεν σὺν αὐτοῖς  
 καὶ <sup>Top</sup> τινες τῶν ἀδελφῶν τῶν ἀπὸ Ἰόπης <sup>Top</sup> συνῆλθον αὐτῷ.  
**24** <sup>Sit</sup> τῇ δὲ <sup>Sit</sup> ἐπαύριον εἰσῆλθεν εἰς τὴν Καισάρειαν.  
<sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Κορνήλιος ἦν προσδοκῶν αὐτούς  
 3 συγκαλεσάμενος τοὺς συγγενεῖς αὐτοῦ καὶ τοὺς ἀναγκαίους φίλους.

**25** <sup>Sit</sup> ὡς δὲ <sup>Sit</sup> ἐγένετο τοῦ εἰσελθεῖν τὸν Πέτρον, <sup>Sit</sup>  
 συναντήσας αὐτῷ ὁ Κορνήλιος  
 πεσὼν ἐπὶ τοὺς πόδας  
 2 προσεκύνησεν.  
**26** <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Πέτρος ἤγειρεν αὐτὸν  
 3 λέγων,  
 2 Ἀνάστηθι·  
 καὶ ἐγὼ αὐτὸς ἄνθρωπός εἰμι.  
**27** καὶ συνομιλῶν αὐτῷ  
 2 εἰσῆλθεν  
 2 καὶ εὗρίσκει συνεληλυθότας πολλούς,  
**28** ἔφη τε πρὸς αὐτούς,  
<sup>Top</sup> Ὑμεῖς ἐπίστασθε  
 3 ὡς ἀθέμιτόν ἐστιν ἀνδρὶ Ἰουδαίῳ  
 4 κολλᾶσθαι ἢ προσέρχεσθαι ἄλλοφυλῷ·  
<sup>Top</sup> κἀμοὶ ὁ θεὸς ἔδειξεν  
 3 μηδένα κοινὸν ἢ ἀκάθαρτον λέγειν <sup>Split</sup> ἄνθρωπον·  
**29** διὸ καὶ ἀναντιρρήτως ἦλθον  
 3 μεταπεμφθεῖς.  
 2 πυνθάνομαι οὖν  
 τίني λόγῳ μετεπέμψασθέ με;  
**30** καὶ <sup>Top</sup> ὁ Κορνήλιος <sup>Top</sup> ἔφη,  
<sup>Sit</sup> Ἀπὸ τετάρτης ἡμέρας μέχρι ταύτης τῆς ὥρας <sup>Sit</sup> ἤμην <sup>Emb</sup> τὴν ἐνάτην <sup>Emb</sup> προσευχόμενος ἐν  
 τῷ οἴκῳ μου,  
 καὶ <sup>Emb</sup> ἰδοὺ ἄνθρωπος ἐστη ἐνώπιόν μου ἐν ἑσθῆτι λαμπρᾷ  
 2 **31** καὶ φησίν,  
 Κορνήλιε, εἰσηκούσθη <sup>TopGen</sup> σου ἡ προσευχή  
 καὶ <sup>Top</sup> αἱ ἐλεημοσύναι σου <sup>Top</sup> ἐμνήσθησαν ἐνώπιον τοῦ θεοῦ.  
 2 **32** πέμψον οὖν εἰς Ἴόππην  
 2 καὶ μετακάλεσαι Σίμωνα  
 3 ὃς ἐπικαλεῖται Πέτρος,  
<sup>Top+</sup> οὗτος ξενίζεται ἐν οἰκίᾳ Σίμωνος βυρσέως παρὰ θάλασσαν.  
**33** ἔξαυτῆς οὖν ἔπεμψα πρὸς σέ,  
<sup>Top</sup> σύ τε καλῶς ἐποίησας παραγενόμενος.  
<sup>Sit</sup> νῦν οὖν <sup>Top</sup> πάντες ἡμεῖς <sup>Top</sup> ἐνώπιον τοῦ θεοῦ πάρεσμεν  
 3 ἀκοῦσαι πάντα τὰ προστεταγμένα σοι ὑπὸ τοῦ κυρίου.  
**34** Ἀνοίξας δὲ <sup>Th+</sup> Πέτρος τὸ στόμα  
 2 εἶπεν,  
 Ἐπ' ἀληθείας καταλαμβάνομαι  
 3 ὅτι οὐκ ἔστιν προσωπολήπτῃς <sup>ThS+</sup> ὁ θεός, <sup>ThS+</sup>  
**35** ἀλλ' <sup>Sit</sup> ἐν παντὶ ἔθνει <sup>Sit</sup> <sup>Top</sup> ὁ φοβούμενος αὐτὸν καὶ ἐργαζόμενος δικαιοσύνην <sup>Top</sup> δεκτὸς  
 αὐτῷ ἐστιν.  
**36** <sup>L-Dis</sup> τὸν λόγον [ὄν] ἀπέστειλεν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ  
 3 εὐαγγελιζόμενος εἰρήνην διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ, <sup>L-Dis</sup>  
<sup>Top+</sup> οὗτός ἐστιν <sup>Emb</sup> πάντων κύριος,  
**37** <sup>Top</sup> ὑμεῖς οἴδατε τὸ γενόμενον ῥῆμα καθ' ὅλης τῆς Ἰουδαίας,  
 3 ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας μετὰ τὸ βάπτισμα  
 4 ὃ ἐκήρυξεν Ἰωάννης,  
**38** <sup>L-Dis</sup> Ἰησοῦν τὸν ἀπὸ Ναζαρέθ, <sup>L-Dis</sup>  
 3 ὡς ἔχρισεν αὐτὸν ὁ θεὸς πνεύματι ἁγίῳ καὶ δυνάμει,  
 2 ὃς διῆλθεν εὐεργετῶν  
 3 καὶ ἰώμενος πάντας τοὺς καταδυναστευομένους ὑπὸ τοῦ διαβόλου,  
 4 ὅτι <sup>\*</sup> ὁ θεός <sup>\*</sup> ἦν μετ' αὐτοῦ.  
**39** καὶ <sup>Top</sup> ἡμεῖς μάρτυρες πάντων

3 ὧν ἐποίησεν ἔν τε τῇ χώρᾳ τῶν Ἰουδαίων καὶ [ἐν] Ἱερουσαλήμ.  
 2 ὃν καὶ ἀνεΐλαν  
 3 κρεμάσαντες ἐπὶ ξύλου,  
**40** <sup>Top+</sup> τοῦτον <sup>Top</sup> ὁ θεὸς <sup>Top</sup> ἤγειρεν [ἐν] τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ  
 2 καὶ ἔδωκεν αὐτὸν  
 3 ἐμφανῆ γενέσθαι, **41** οὐ παντὶ τῷ λαῷ,  
 4 ἀλλὰ μάρτυσιν τοῖς προκεχειροτονημένοις ὑπὸ τοῦ θεοῦ,  
 5 ἡμῖν, <sup>App</sup> οἵτινες συνεφάγομεν καὶ συνεπίομεν αὐτῷ  
 6 μετὰ τὸ ἀναστήναι αὐτὸν ἐκ νεκρῶν. <sup>App</sup>  
**42** καὶ παρήγγειλεν ἡμῖν  
 3 κηρύξαι τῷ λαῷ  
 3 καὶ διαμαρτύρασθαι  
 4 ὅτι <sup>Top+</sup> οὗτός ἐστιν ὁ ὠρισμένος ὑπὸ τοῦ θεοῦ κριτῆς ζώντων καὶ νεκρῶν.  
**43** <sup>Top+</sup> τοῦτῳ πάντες οἱ προφηταὶ μαρτυροῦσιν  
 3 ἄψαισι ἁμαρτιῶν λαβεῖν διὰ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ πάντα τὸν πιστεύοντα εἰς αὐτόν.  
**44** Ὃτι λαλούντος τοῦ Πέτρου <sup>Th+</sup> τὰ ῥήματα ταῦτα <sup>Th+</sup>  
 2 ἐπέπεσεν τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐπὶ πάντας τοὺς ἀκούοντας τὸν λόγον.  
 2 **45** καὶ ἐξέστησαν οἱ <sup>Emb</sup> ἐκ περιτομῆς <sup>Emb</sup> πιστοὶ ὅσοι συνήλθαν τῷ Πέτρῳ,  
 3 ὅτι καὶ ἐπὶ τὰ ἔθνη ἡ δωρεὰ τοῦ ἁγίου πνεύματος ἐκκέχυται·  
 2 **46** ἤκουον γὰρ αὐτῶν λαλούντων γλώσσαις καὶ μεγαλυνόντων τὸν θεόν.  
 2 τότε ἀπεκρίθη <sup>Th+</sup> Πέτρος,  
**47** Μῆτι τὸ ὕδωρ δύναται κωλύσαι τις  
 3 τοῦ μὴ βαπτισθῆναι <sup>Th+</sup> τούτους,  
 4 οἵτινες τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον ἔλαβον ὡς καὶ ἡμεῖς;  
 2 **48** προσέταξεν δὲ αὐτοὺς  
 3 ἐν τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ βαπτισθῆναι.  
 2 τότε ἠρώτησαν αὐτὸν  
 3 ἐπιμεῖναι ἡμέρας τινάς.  
 2 **11** Ἦκουσαν δὲ οἱ ἀπόστολοι καὶ οἱ ἀδελφοὶ οἱ ὄντες κατὰ τὴν Ἰουδαίαν  
 3 ὅτι καὶ τὰ ἔθνη ἐδέξαντο τὸν λόγον τοῦ θεοῦ.  
**2** <sup>Sit</sup> ὅτε δὲ <sup>Sit</sup> ἀνέβη <sup>Th+</sup> Πέτρος εἰς Ἱερουσαλήμ, <sup>Sit</sup>  
 2 διεκρίνοντο πρὸς αὐτὸν οἱ ἐκ περιτομῆς  
 3 **3** λέγοντες  
 2 ὅτι εἰσήλθες πρὸς ἄνδρας <sup>Emb</sup> ἀκροβυστίαν <sup>Emb</sup> ἔχοντας  
 2 καὶ συνέφαγες αὐτοῖς.  
**4** ἀρξάμενος δὲ <sup>Th+</sup> Πέτρος  
 2 ἐξετίθετο αὐτοῖς καθεξῆς  
 3 λέγων,  
**5** <sup>Top</sup> Ἐγὼ ἤμην ἐν πόλει Ἰόππῃ  
 3 προσευχόμενος  
 2 καὶ εἶδον ἐν ἐκστάσει ὄραμα,  
 3 καταβαίνον σκευὸς τι ὡς θόνην μεγάλην  
 4 τέσσαρσιν ἀρχαῖς <sup>Emb</sup> καθιεμένην ἐκ τοῦ οὐρανοῦ,  
 2 καὶ ἦλθεν ἄχρι ἐμοῦ.  
**6** εἰς ἣν ἀτενίσας  
 2 κατενόουν  
 2 καὶ εἶδον τὰ τετράποδα τῆς γῆς καὶ τὰ θηρία καὶ τὰ ἔρπετα καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ  
 οὐρανοῦ.  
 2 **7** ἤκουσα δὲ καὶ φωνῆς  
 3 λεγούσης μοι,  
 Ἀναστάς, Πέτρε,  
 2 θύσον καὶ φάγε.  
 2 **8** εἶπον δέ,  
 3 Μηδαμῶς, κύριε,

|     |      |  |
|-----|------|--|
|     | 4    | ὅτι <sup>Top</sup> κοινὸν ἢ ἀκάθαρτον <sup>Top</sup> οὐδέποτε εἰσῆλθεν εἰς τὸ στόμα μου.         |
| 2   | 9    | ἀπεκρίθη δὲ <sup>Th+</sup> φωνὴ ἐκ δευτέρου ἐκ τοῦ οὐρανοῦ,                                      |
| Top | Ἀ    | * ὁ θεὸς <sup>Emb</sup> ἐκαθάρισεν, * <sup>Top</sup> σὺ <sup>*</sup> μὴ <sup>*</sup> κοίνου. *   |
| 10  | Top+ | τοῦτο δὲ ἐγένετο ἐπὶ τρίς,   |
| 2   |      | καὶ ἀνεσπάσθη πάλιν ἅπαντα εἰς τὸν οὐρανόν.  |
| 11  |      | καὶ <sup>Idoi</sup> ἐξαυτῆς <sup>Emb</sup> τρεῖς ἄνδρες ἐπέστησαν ἐπὶ τὴν οἰκίαν                 |
|     | 4    | ἐν ἧ ἡμεν,   |
| 3   |      | ἀπεσταλμένοι ἀπὸ Καισαρείας <sup>Emb</sup> πρὸς με. <sup>*</sup>                                 |
| 2   | 12   | εἶπεν δὲ τὸ πνεῦμά μοι   |
| 3   |      | συνελθεῖν αὐτοῖς   |
| 4   |      | <sup>Constit</sup> μηδὲν <sup>Emb</sup> διακρίναντα.   |
| 2   |      | ἦλθον δὲ σὺν ἐμοὶ καὶ οἱ ἕξ ἀδελφοὶ οὗτοι  |
| 2   |      | καὶ εἰσῆλθομεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ ἀνδρός.   |
| 2   | 13   | ἀπήγγειλεν δὲ ἡμῖν   |
| 3   |      | πῶς εἶδεν [τὸν] ἄγγελον ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ   |
| 4   |      | σταθέντα καὶ εἰπόντα,  |
| 2   |      | Ἀπόστειλον εἰς Ἰόππην  |
| 2   |      | καὶ μετὰπεμψαι Σίμωνα τὸν ἐπικαλούμενον Πέτρον,  |
| 2   | 14   | ὃς λαλήσει ῥήματα πρὸς σὲ  |
| 3   |      | ἐν οἷς σωθήσῃ σὺ καὶ πᾶς ὁ οἶκός σου.  |
| 15  | Sit  | ἐν δὲ <sup>Sit</sup> τῷ ἄρξασθαί με λαλεῖν <sup>Sit</sup>  |
| 2   |      | ἐπέπεσον τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐπ' αὐτοὺς   |
| 3   |      | ὥσπερ καὶ ἐφ' ἡμᾶς ἐν ἀρχῇ.  |
| 2   | 16   | ἐμνήσθη δὲ τοῦ ῥήματος τοῦ κυρίου  |
| 3   |      | ὡς ἔλεγεν,   |
| Top |      | Ἰωάννης μὲν ἐβάπτισεν ὕδατι,   |
| Top |      | ὑμεῖς δὲ βαπτισθήσεσθε ἐν πνεύματι ἁγίῳ.   |
| 17  | Sit  | εἰ οὖν <sup>Sit</sup> τὴν <sup>Emb</sup> ἴσην <sup>Sit</sup> δωρεὰν ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ θεὸς         |
| 3   |      | ὡς καὶ ἡμῖν πιστεύσασι ἐπὶ τὸν κύριον Ἰησοῦν Χριστόν, <sup>Sit</sup>                             |
| Top |      | ἐγὼ τίς ἤμην δυνατὸς   |
| 3   |      | καλύσαι τὸν θεόν;  |
| 18  |      | ἀκούσαντες δὲ <sup>Th+</sup> ταῦτα   |
| 2   |      | ἠσύχασαν   |
| 2   |      | καὶ ἐδόξασαν τὸν θεόν  |
| 3   |      | λέγοντες,  |
| Ἄρα |      | καὶ τοῖς ἔθνεσιν ὁ θεὸς τὴν μετάνοιαν εἰς ζωὴν ἔδωκεν.   |
| 19  | Top  | Οἱ μὲν οὖν <sup>Top</sup> διασπαρέντες ἀπὸ τῆς θλίψεως τῆς γενομένης ἐπὶ Στεφάνῳ <sup>Top</sup>  |
| 2   |      | διήλθον ἕως Φοινίκης καὶ Κύπρου καὶ Ἀντιοχείας   |
| 3   |      | <sup>Constit</sup> μηδενὶ <sup>Emb</sup> λαλοῦντες τὸν λόγον                                     |
| 4   |      | εἰ μὴ μόνον Ἰουδαίους.   |
| 2   | 20   | ἦσαν δὲ τινες ἐξ αὐτῶν ἄνδρες Κύπριοι καὶ Κυρηναῖοι,   |
| 2   |      | οἵτινες ἐλθόντες εἰς Ἀντιόχειαν  |
| 2   |      | ἐλάλουν καὶ πρὸς τοὺς Ἑλληνιστὰς   |
| 3   |      | εὐαγγελιζόμενοι τὸν κύριον Ἰησοῦν.   |
| 2   | 21   | καὶ ἦν χεὶρ κυρίου μετ' αὐτῶν,   |
| 2   |      | * πολὺς <sup>*</sup> τε <sup>*</sup> ἀριθμὸς ὁ πιστεύσας <sup>*</sup> ἐπέστρεψεν ἐπὶ τὸν κύριον. |
| 2   | 22   | ἠκούσθη δὲ ὁ λόγος εἰς τὰ ὦτα τῆς ἐκκλησίας τῆς οὔσης ἐν Ἱερουσαλήμ <sup>Th+</sup> περὶ          |
| 2   |      | αὐτῶν <sup>Th+</sup>   |
| 2   |      | καὶ ἐξαπέστειλαν Βαρναβᾶν  |
| 3   |      | [διελθεῖν] ἕως Ἀντιοχείας.   |
| 2   | 23   | ὃς παραγενόμενος καὶ ἰδὼν τὴν χάριν [τὴν] τοῦ θεοῦ,  |
| 2   |      | ἐχάρη  |
| 2   |      | καὶ παρεκάλει πάντας τῇ προθέσει τῆς καρδίας   |
| 3   |      | προσμένειν τῷ κυρίῳ,   |

<sup>4</sup> **24** ὅτι ἦν ἀνὴρ ἀγαθὸς καὶ πλήρης πνεύματος ἁγίου καὶ πίστεως.  
<sup>2</sup> καὶ προσετέθη ὄχλος ἱκανὸς τῷ κυρίῳ.  
<sup>2</sup> **25** ἐξήλθεν δὲ εἰς Ταρσὸν  
<sup>3</sup> ἀναζητῆσαι Σαῦλον,  
**26** καὶ εὐρῶν  
<sup>2</sup> ἤγαγεν εἰς Ἀντιόχειαν.  
<sup>2</sup> ἐγένετο δὲ αὐτοῖς  
<sup>3</sup> καὶ ἐνιαυτὸν ὅλον συναχθῆναι ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ  
<sup>3</sup> καὶ διδάξαι ὄχλον ἱκανόν,  
<sup>3</sup> χρηματίζειν τε πρώτως ἐν Ἀντιοχείᾳ τοὺς μαθητὰς **Χριστιανούς.**  
**27** <sup>Sit Th+</sup> Ἐν ταύταις <sup>Sit Th+</sup> δὲ <sup>Sit Th+</sup> ταῖς ἡμέραις <sup>Sit Th+</sup> κατήλθον ἀπὸ Ἱεροσολύμων προφήται  
εἰς Ἀντιόχειαν.  
**28** ἀναστὰς δὲ εἰς ἕξ αὐτῶν ὀνόματι Ἄγαθος  
<sup>2</sup> ἐσήμανεν διὰ τοῦ πνεύματος  
<sup>3</sup> λιμὸν μεγάλην μέλλειν ἔσεσθαι ἐφ' ὅλην τὴν οἰκουμένην,  
<sup>2</sup> ἣτις ἐγένετο ἐπὶ Κλαυδίου.  
**29** <sup>L-Dis</sup> τῶν δὲ <sup>L-Dis</sup> μαθητῶν, <sup>Sit</sup> καθὼς εὐπορεῖτό τις, <sup>Sit</sup>  
<sup>2</sup> ὥρισαν ἕκαστος αὐτῶν  
<sup>3</sup> εἰς διακονίαν πέμψαι τοῖς κατοικοῦσιν **ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ** ἀδελφοῖς.  
<sup>2</sup> **30** ὁ καὶ ἐποίησαν  
<sup>3</sup> ἀποστείλαντες πρὸς τοὺς πρεσβυτέρους **διὰ χειρὸς Βαρναβᾶ καὶ Σαύλου.**  
**12** <sup>Sit</sup> Κατ' ἐκείνον <sup>Sit</sup> δὲ <sup>Sit</sup> τὸν καιρὸν <sup>Sit</sup>  
<sup>2</sup> ἐπέβαλεν Ἡρώδης ὁ βασιλεὺς τὰς χεῖρας  
<sup>3</sup> κακῶσαί τινας τῶν ἀπὸ τῆς ἐκκλησίας.  
<sup>2</sup> **2** ἀνεῖλεν δὲ Ἰάκωβον τὸν ἀδελφὸν Ἰωάννου μαχαίρη.  
**3** ἰδὼν δὲ  
<sup>3</sup> ὅτι **ἀρεστόν** ἐστὶν τοῖς Ἰουδαίοις,  
<sup>2</sup> προσέθετο συλλαβεῖν καὶ Πέτρον,  
<sup>2</sup> —ἦσαν δὲ [αἱ] ἡμέραι τῶν ἀζύμων—  
**4** ὃν καὶ πιάσας  
<sup>2</sup> ἔθετο εἰς φυλακὴν  
<sup>3</sup> παραδούς τέσσαρσιν τετραδίοις στρατιωτῶν  
<sup>4</sup> φυλάσσειν αὐτόν,  
<sup>3</sup> βουλόμενος  
<sup>4</sup> **μετὰ τὸ πάσχα** ἀναγαγεῖν αὐτὸν τῷ λαῷ.  
**5** <sup>Top</sup> ὁ μὲν οὖν <sup>Top</sup> Πέτρος ἐτηρεῖτο ἐν τῇ φυλακῇ·  
**προσευχῇ** δὲ ἦν **ἐκτενωῶς** γινομένη ὑπὸ τῆς ἐκκλησίας πρὸς τὸν θεὸν <sup>Th+</sup> περὶ αὐτοῦ. <sup>Th+</sup>  
**6** <sup>Sit</sup> Ὅτε δὲ <sup>Sit</sup> ἤμελλεν προαγαγεῖν αὐτὸν <sup>ThS+</sup> ὁ Ἡρώδης, <sup>ThS+ Sit</sup>  
<sup>Sit</sup> τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ <sup>Sit</sup> ἦν ὁ Πέτρος κοιμώμενος μεταξύ δύο στρατιωτῶν  
<sup>3</sup> δεδεμένος ἀλύσειν δυοῖν  
<sup>Top</sup> φύλακές τε **πρὸ τῆς θύρας** ἐτήρουν τὴν φυλακὴν.  
**7** καὶ **ἰδοὺ** ἄγγελος κυρίου ἐπέστη  
καὶ **φῶς** ἔλαμψεν ἐν τῷ οἰκήματι·  
πατάξας δὲ τὴν πλευρὰν τοῦ Πέτρου  
<sup>2</sup> ἤγειρεν αὐτόν  
<sup>3</sup> λέγων,  
<sup>2</sup> **Ἀνάστα ἐν τάχει.**  
<sup>2</sup> καὶ ἐξέπεσαν <sup>TopGen</sup> αὐτοῦ αἱ ἀλύσεις ἐκ τῶν χειρῶν.  
<sup>2</sup> **8** εἶπεν δὲ ὁ ἄγγελος πρὸς αὐτόν,  
<sup>2</sup> **Ζῶσαι**  
<sup>2</sup> **καὶ ὑπόδησαι τὰ σανδάλιά σου.**  
<sup>2</sup> ἐποίησεν δὲ οὕτως.  
<sup>2</sup> καὶ **λέγει** αὐτῷ,  
<sup>2</sup> **Περιβαλοῦ τὸ ἱμάτιόν σου**

- 2 καὶ ἀκολουθεῖ μοι.
- 9 καὶ ἐξεληθῶν  
2 ἠκολούθει  
2 καὶ οὐκ ᾔδει  
3 ὅτι ἀληθὲς ἐστὶν τὸ γινόμενον διὰ τοῦ ἀγγέλου·  
2 ἐδόκει δὲ  
3 ὄραμα βλέπειν.
- 10 διεληθόντες δὲ πρώτην φυλακὴν καὶ δευτέραν  
2 ἦλθαν ἐπὶ τὴν πύλην τὴν σιδηρὰν τὴν φέρουσαν εἰς τὴν πόλιν,  
ἣτις αὐτομάτη ἠνοίγη αὐτοῖς  
καὶ ἐξεληθόντες  
2 προῆλθον ῥύμην μίαν,  
καὶ εὐθέως ἀπέστη ὁ ἄγγελος ἀπ' αὐτοῦ.
- 11 καὶ <sup>Top</sup> ὁ Πέτρος <sup>Top</sup> ἐν ἑαυτῷ γενόμενος  
2 εἶπεν,  
Sit **Νῦν οἶδα ἀληθῶς**  
3 ὅτι ἐξαπέστειλεν [ὁ] κύριος τὸν ἄγγελον αὐτοῦ  
3 καὶ ἐξείλατό με ἐκ χειρὸς Ἡρώδου καὶ πάσης τῆς προσδοκίας τοῦ λαοῦ τῶν Ἰουδαίων.
- 12 συνιδῶν τε  
2 ἦλθεν ἐπὶ τὴν οἰκίαν τῆς Μαρίας τῆς μητρὸς Ἰωάννου τοῦ ἐπικαλουμένου Μάρκου,  
3 οὗ ἦσαν ἱκανοὶ συνηθροισμένοι καὶ προσευχόμενοι.
- 13 κρούσαντος δὲ αὐτοῦ τὴν θύραν τοῦ πυλῶνος  
2 προσῆλθεν παιδίσκη  
3 ὑπακούσαι | <sup>R-Dis</sup> ὀνόματι Ῥόδη, <sup>R-Dis</sup> |
- 14 καὶ ἐπιγνοῦσα τὴν φωνὴν τοῦ Πέτρου  
Sit ἀπὸ τῆς χαρᾶς <sup>Sit</sup> οὐκ ἠνοιξεν τὸν πυλῶνα,  
εἰσδραμοῦσα δὲ  
2 ἀπήγγειλεν  
3 ἐστάναι τὸν Πέτρον πρὸ τοῦ πυλῶνος.
- 15 <sup>Art</sup> οἱ δὲ \* πρὸς αὐτὴν \* εἶπαν,  
2 **Μαίνη.**  
<sup>Art</sup> ἡ δὲ διῆσχυρίζετο  
3 οὕτως ἔχειν.  
<sup>Art</sup> οἱ δὲ ἔλεγον,  
**Ὁ ἄγγελός ἐστιν <sup>Split</sup> αὐτοῦ.**
- 16 <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Πέτρος ἐπέμενε κρούων·  
ἀνοίξαντες δὲ  
2 εἶδαν αὐτὸν  
2 καὶ ἐξέστησαν.
- 17 κατασεΐσας δὲ αὐτοῖς τῇ χειρὶ  
3 σιγᾶν  
2 διηγήσατο [αὐτοῖς]  
3 πῶς ὁ κύριος αὐτὸν ἐξήγαγεν ἐκ τῆς φυλακῆς  
2 εἶπέν τε,  
2 **Ἀπαγγείλατε Ἰακώβῳ καὶ τοῖς ἀδελφοῖς <sup>Th+</sup> ταῦτα.**
- καὶ ἐξεληθῶν  
2 ἐπορεύθη εἰς **Emb** ἕτερον τόπον.
- 18 Γενομένης δὲ ἡμέρας  
2 ἦν τάραχος οὐκ ὀλίγος ἐν τοῖς στρατιώταις  
3 τί ἄρα ὁ Πέτρος ἐγένετο.
- 19 <sup>Top+</sup> Ἡρώδης δὲ ἐπιζητήσας αὐτὸν  
καὶ μὴ εὐρών,  
ἀνακρίνας τοὺς φύλακας

2 ἐκέλευσεν ἀπαχθῆναι,  
 καὶ κατελθὼν ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας εἰς Καισάρειαν  
 2 διέτριβεν.  
 2 **20** Ἦν δὲ θυμομαχῶν Τυρίοις καὶ Σιδωνίοις·  
 ὁμοθυμαδὸν δὲ παρήσαν πρὸς αὐτὸν  
 καὶ πείσαντες Βλάστον, τὸν ἐπὶ τοῦ κοιτῶνος τοῦ βασιλέως,  
 2 ἤτοῦντο εἰρήνην  
 3 διὰ τὸ τρέφεσθαι <sup>TopGen</sup> αὐτῶν τὴν χώραν ἀπὸ τῆς βασιλικῆς.  
**21** <sup>Sit</sup> τακτῆ δὲ <sup>Sit</sup> ἡμέρα <sup>Top</sup> ὁ Ἡρώδης <sup>Top</sup>  
 ἐνδυσάμενος ἐσθῆτα βασιλικὴν  
 [καὶ] καθίσας ἐπὶ τοῦ βήματος  
 2 ἐδημηγόρει πρὸς αὐτούς,  
**22** <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> δῆμος ἐπεφώνει,  
 3 **Θεοῦ φωνή** <sup>Split</sup> καὶ οὐκ ἀνθρώπου. <sup>Split</sup>  
**23** παραχρήμα δὲ ἐπάταξεν αὐτὸν ἄγγελος κυρίου  
 3 ἀνθ' ὧν οὐκ ἔδωκεν τὴν δόξαν τῷ θεῷ,  
 καὶ γενόμενος σκωληκόβρωτος  
 2 ἐξέψυξεν.  
**24** <sup>Top</sup> Ὁ δὲ <sup>Top</sup> λόγος τοῦ θεοῦ <sup>Top</sup> ἠὔξανεν καὶ ἐπληθύνετο.  
**25** <sup>Top+</sup> Βαρναβᾶς δὲ <sup>Top+</sup> καὶ Σαῦλος <sup>Top+</sup> ὑπέστρεψαν εἰς Ἱερουσαλήμ  
 3 πληρώσαντες τὴν διακονίαν,  
 3 συμπαραλαβόντες Ἰωάννην τὸν ἐπικληθέντα Μάρκον.  
 2 **13** Ἦσαν δὲ ἐν Ἀντιοχείᾳ κατὰ τὴν οὖσαν ἐκκλησίαν **προφήται καὶ διδάσκαλοι**  
 3 | <sup>App</sup> ὃ τε Βαρναβᾶς καὶ Συμεὼν ὁ καλούμενος Νίγερ καὶ Λούκιος ὁ Κυρηναῖος,  
 3 Μανανὴν τε <sup>Emb</sup> Ἡρώδου τοῦ τετραάρχου <sup>Emb</sup> σύντροφος καὶ Σαῦλος. <sup>App</sup>  
**2** λειτουργούντων δὲ αὐτῶν τῷ κυρίῳ  
 καὶ νηστεούντων  
 2 εἶπεν τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον,  
 2 **Ἀφορίσατε δὴ μοι τὸν Βαρναβᾶν καὶ Σαῦλον εἰς τὸ ἔργον**  
 3 **ὃ προσκέκλημαι αὐτούς.**  
**3** τότε νηστεύσαντες  
 καὶ προσευξάμενοι  
 καὶ ἐπιθέντες τὰς χεῖρας αὐτοῖς  
 2 ἀπέλυσαν.  
**4** <sup>Top</sup> Αὐτοὶ μὲν οὖν ἐκπεμφθέντες ὑπὸ τοῦ ἁγίου πνεύματος  
 2 κατήλθον εἰς Σελεύκειαν,  
<sup>Sit</sup> ἐκεῖθεν τε ἀπέπλευσαν εἰς Κύπρον  
**5** καὶ γενόμενοι ἐν Σαλαμῖνι  
 2 κατήγγελλον τὸν λόγον τοῦ θεοῦ ἐν ταῖς συναγωγαῖς τῶν Ἰουδαίων.  
 2 εἶχον δὲ καὶ Ἰωάννην ὑπηρέτην.  
**6** διελθόντες δὲ ὅλην τὴν νῆσον ἄχρι Πάφου  
 2 εὗρον ἄνδρα τινὰ μάγον | <sup>App</sup> ψευδοπροφήτην Ἰουδαῖον  
 3 **ᾧ ὄνομα Βαριησοῦ** <sup>App</sup> |  
 3 **7** ὃς ἦν σὺν τῷ ἀνθυπάτῳ Σεργίῳ Παύλῳ, | <sup>App</sup> ἀνδρὶ συνετῷ. <sup>App</sup> |  
<sup>Top+</sup> οὗτος προσκαλεσάμενος Βαρναβᾶν καὶ Σαῦλον  
 2 ἐπεζήτησεν ἀκοῦσαι τὸν λόγον τοῦ θεοῦ.  
 2 **8** ἀντίστατο δὲ αὐτοῖς Ἐλύμας ὁ μάγος,  
<sup>Sit</sup> οὕτως γὰρ μεθερμηνεύεται τὸ ὄνομα αὐτοῦ,  
 3 ζητῶν διαστρέψαι τὸν ἀνθύπατον ἀπὸ τῆς πίστεως.  
**9** <sup>Top+</sup> Σαῦλος δέ, | <sup>App</sup> <sup>Top</sup> **ὃ καὶ Παῦλος,** <sup>App</sup> <sup>Top</sup> | πλησθεὶς πνεύματος ἁγίου  
 ἀτενίσας εἰς αὐτὸν  
 2 **10** εἶπεν,  
**Ὡ** πλήρης παντὸς δόλου καὶ πάσης ῥαδιουργίας,  
 υἱὲ διαβόλου, ἐχθρὲ πάσης δικαιοσύνης,



2 οὐ πάυση διαστρέφων τὰς ὁδοὺς [τοῦ] κυρίου τὰς εὐθείας;  
**11** καὶ <sup>Sit</sup> νῦν **ἰδοὺ** χεὶρ κυρίου ἐπὶ σέ  
 2 καὶ ἕση τυφλὸς  
 3 μὴ βλέπων τὸν ἥλιον ἄχρι καιροῦ.  
**παραχρημά** τε ἔπεσεν ἐπ' αὐτὸν ἀχλὺς καὶ σκότος  
 καὶ περιάγων  
 2 ἐξήτει χειραγωγούς.  
**12** τότε ἰδὼν ὁ ἀνθύπατος τὸ γεγονός  
 2 ἐπίστευσεν  
 3 ἐκπληροσόμενος ἐπὶ τῇ διδαχῇ τοῦ κυρίου.  
**13** Ἀναθέντες δὲ ἀπὸ τῆς Πάφου <sup>ThS+</sup> οἱ περὶ Παῦλον <sup>ThS+</sup>  
 2 ἦλθον εἰς Πέργην τῆς Παμφυλίας,  
<sup>Top+</sup> Ἰωάννης δὲ ἀποχωρήσας ἀπ' αὐτῶν  
 2 ὑπέστρεψεν εἰς Ἱεροσόλυμα.  
**14** <sup>Top</sup> αὐτοὶ δὲ διελθόντες ἀπὸ τῆς Πέργης  
 2 παρεγένοντο εἰς Ἀντιόχειαν τὴν Πισιδίαν,  
 καὶ [εἰς]ελθόντες εἰς τὴν συναγωγὴν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων  
 2 ἐκάθισαν.  
**15** <sup>Sit</sup> μετὰ δὲ <sup>Sit</sup> τὴν ἀνάγνωσιν τοῦ νόμου καὶ τῶν προφητῶν <sup>Sit</sup>  
 2 ἀπέστειλαν οἱ ἀρχισυνάγωγοι πρὸς αὐτοὺς  
 3 λέγοντες,  
**Ἄνδρες ἀδελφοί,** <sup>Sit</sup> εἴ **τίς** ἐστίν <sup>Split</sup> ἐν ὑμῖν λόγος παρακλήσεως <sup>Split</sup> πρὸς τὸν λαόν, <sup>Sit</sup>  
 2 λέγετε.  
**16** ἀναστὰς δὲ <sup>Th+</sup> Παῦλος  
 καὶ κατασείσας τῇ χειρὶ  
 2 εἶπεν·  
 Ἄνδρες Ἰσραηλίται καὶ οἱ φοβούμενοι τὸν θεόν, ἀκούσατε.  
**17** <sup>Top</sup> ὁ θεὸς τοῦ λαοῦ τούτου Ἰσραὴλ <sup>Top</sup> ἐξελέξατο τοὺς πατέρας ἡμῶν  
 καὶ <sup>Top</sup> τὸν λαόν <sup>Top</sup> ὑψωσεν ἐν τῇ παροικίᾳ ἐν γῇ Αἰγύπτου  
 καὶ **μετὰ βραχίονος ὑψηλοῦ** ἐξήγαγεν αὐτοὺς ἐξ αὐτῆς,  
**18** καὶ **\* ὡς τεσσαρεκονταετὴ χρόνον \*** ἔτροποφόρησεν αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ  
**19** καὶ καθελὼν ἔθνη ἑπτὰ ἐν γῇ Χανάαν  
 2 κατεκληρονόμησεν τὴν γῆν αὐτῶν **20** ὡς ἔτεσιν τετρακοσίοις καὶ πεντήκοντα.  
 καὶ <sup>Sit Th+</sup> μετὰ ταῦτα <sup>Sit Th+</sup> ἔδωκεν κριτὰς ἕως Σαμουὴλ [τοῦ] προφήτου.  
**21** <sup>Sit</sup> **κάκειθεν** ἠτήσαντο βασιλέα  
 2 καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ θεὸς τὸν Σαοὺλ υἱὸν Κίς, <sup>App</sup> ἄνδρα ἐκ φυλῆς Βενιαμίν, <sup>App</sup> ἔτη  
 τεσσαράκοντα,  
**22** καὶ μεταστήσας αὐτὸν  
 2 ἠγείρεν τὸν Δαυὶδ αὐτοῖς εἰς βασιλέα  
 2 ᾧ καὶ εἶπεν  
 3 μαρτυρήσας,  
 2 **Εὗρον Δαυὶδ τὸν τοῦ Ἰεσσαί, ἄνδρα κατὰ τὴν καρδίαν μου,**  
 2 **ὃς ποιήσει πάντα τὰ θελήματά μου.**  
**23** <sup>Top+</sup> τούτου <sup>Top</sup> ὁ θεὸς <sup>Top</sup> ἀπὸ τοῦ σπέρματος <sup>Top+</sup> **κατ' ἐπαγγελίαν \***  
 2 ἠγάγεν τῷ Ἰσραὴλ **σωτήρα** <sup>App</sup> Ἰησοῦν,  
 3 **24** προκηρῦξαντος <sup>Th+</sup> Ἰωάννου πρὸ προσώπου τῆς εισόδου αὐτοῦ  
 4 βάπτισμα μετανοίας **παντὶ τῷ λαῷ Ἰσραὴλ.**  
**25** <sup>Sit</sup> ὡς δὲ <sup>Sit</sup> ἐπλήρου <sup>Th+</sup> Ἰωάννης τὸν δρόμον, <sup>Sit</sup>  
 2 ἔλεγεν,  
**Τί** <sup>Emb</sup> **ἐμὲ** ὑπονοεῖτε εἶναι;  
 2 οὐκ εἰμὶ ἐγώ·  
**ἀλλ'** **ἰδοὺ** ἔρχεται μετ' ἐμὲ  
 3 οὐδ' οὐκ εἰμὶ ἄξιος <sup>Emb</sup> **τὸ ὑπόδημα τῶν ποδῶν** <sup>Emb</sup> **λύσαι.**  
**26** Ἄνδρες ἀδελφοί, υἱοὶ γένους Ἀβραάμ καὶ οἱ ἐν ὑμῖν φοβούμενοι τὸν θεόν,



- 2 ἔπειθον αὐτοὺς  
3 προσμένειν τῇ χάριτι τοῦ θεοῦ.
- 44 <sup>Sit</sup> Τῷ δὲ <sup>Sit</sup> ἐρχομένῳ σαββάτῳ <sup>Sit</sup> σχεδὸν πᾶσα ἡ πόλις <sup>Sit</sup> συνήχθη ἀκοῦσαι τὸν λόγον τοῦ κυρίου.
- 45 ἰδόντες δὲ οἱ Ἰουδαῖοι τοὺς ὄχλους  
2 ἐπλήσθησαν ζήλου  
2 καὶ ἀντέλεγον τοῖς <sup>Emb</sup> ὑπὸ Παύλου <sup>Emb</sup> λαλουμένοις  
3 βλασφημοῦντες.
- 46 παρρησιασάμενοί τε ὁ Παῦλος καὶ ὁ Βαρναβᾶς  
2 εἶπαν,  
<sup>Emb</sup> Ὑμῖν ἦν ἀναγκαῖον  
3 <sup>Emb</sup> πρῶτον <sup>Emb</sup> λαληθῆναι τὸν λόγον τοῦ θεοῦ·  
<sup>Sit</sup> ἐπειδὴ ἀπωθεῖσθε αὐτὸν  
3 καὶ οὐκ <sup>Emb</sup> ἀξιούσιν <sup>Emb</sup> κρίνετε ἑαυτοὺς <sup>Emb Split</sup> τῆς αἰωνίου ζωῆς, <sup>Emb Sit Split</sup>
- <sup>Emb</sup> ἰδοὺ στρεφόμεθα εἰς τὰ ἔθνη.
- 47 <sup>Cata</sup> οὕτως <sup>CataRef</sup> γὰρ ἐντέταλται ἡμῖν ὁ κύριος,  
2 <sup>CataRef</sup> τῷ θεῷ οὐκ εἰς τὸν ἄνθρωπον  
3 <sup>CataRef</sup> τῷ θεῷ οὐκ εἰς ἀσπιρίαν τοῦ σφαγίου τῆς πίστεως <sup>CataRef</sup>
- 48 ἀκούοντα δὲ τὰ ἔθνη  
2 ἔχαιρον καὶ ἐδόξαζον τὸν λόγον τοῦ κυρίου  
2 καὶ ἐπίστευσαν ὅσοι ἦσαν τεταγμένοι εἰς ζωὴν αἰώνιον·  
2 49 διεφέρετο δὲ ὁ λόγος τοῦ κυρίου δι' ὅλης τῆς χώρας.
- 50 <sup>Top</sup> οἱ δὲ <sup>Top</sup> Ἰουδαῖοι παρώτρυναν τὰς σεβομένας γυναῖκας τὰς εὐσχήμονας καὶ τοὺς πρῶτους τῆς πόλεως  
2 καὶ ἐπήγειραν διωγμὸν ἐπὶ τὸν Παῦλον καὶ Βαρναβᾶν  
2 καὶ ἐξέβαλον αὐτοὺς ἀπὸ τῶν ὁρίων αὐτῶν.
- 51 <sup>Art</sup> οἱ δὲ ἐκτιναξάμενοι τὸν κονιορτὸν τῶν ποδῶν ἐπ' αὐτοὺς  
2 ἦλθον εἰς Ἰκόνιον,
- 52 <sup>Top</sup> οἱ τε <sup>Top</sup> μαθηταὶ ἐπληροῦντο χαρᾶς καὶ πνεύματος ἁγίου.  
2 14 <sup>Emb</sup> Ἐγένετο δὲ  
3 <sup>Sit</sup> ἐν Ἰκονίῳ <sup>Sit</sup> \* <sup>Sit</sup> κατὰ τὸ αὐτὸ \* <sup>Sit</sup> εἰσελθεῖν αὐτοὺς εἰς τὴν συναγωγὴν τῶν Ἰουδαίων  
3 καὶ λαλῆσαι οὕτως  
4 ὥστε πιστεῦσαι Ἰουδαίων τε καὶ Ἑλλήνων <sup>Emb</sup> πολὺ πλῆθος·
- 2 <sup>Top</sup> οἱ δὲ <sup>Top</sup> ἀπειθήσαντες Ἰουδαῖοι <sup>Top</sup> ἐπήγειραν καὶ ἐκάκωσαν τὰς ψυχὰς τῶν ἐθνῶν κατὰ τῶν ἀδελφῶν.
- 3 ἴκανόν μὲν οὖν <sup>Emb</sup> χρόνον <sup>Emb</sup> διέτριψαν  
3 παρρησιαζόμενοι ἐπὶ τῷ κυρίῳ  
4 τῷ μαρτυροῦντι [ἐπὶ] τῷ λόγῳ τῆς χάριτος αὐτοῦ,  
5 διδόντι <sup>Emb</sup> σημεῖα καὶ τέρατα <sup>Emb</sup> γίνεσθαι διὰ τῶν χειρῶν αὐτῶν.
- 2 4 ἐσχίσθη δὲ τὸ πλῆθος τῆς πόλεως,  
καὶ <sup>Art</sup> οἱ μὲν ἦσαν σὺν τοῖς Ἰουδαίοις,  
<sup>Art</sup> οἱ δὲ σὺν τοῖς ἀποστόλοις.
- 5 <sup>Sit</sup> ὡς δὲ <sup>Sit</sup> ἐγένετο ὁρμὴ τῶν ἐθνῶν τε καὶ Ἰουδαίων σὺν τοῖς ἄρχουσιν αὐτῶν  
3 ὑβρίσαι καὶ λιθοβολῆσαι αὐτούς, <sup>Sit</sup>
- 6 συνιδόντες  
2 κατέφυγον εἰς τὰς πόλεις τῆς Λυκαονίας | <sup>App</sup> Λύστραν καὶ Δέρβην <sup>App</sup> | καὶ τὴν περίχωρον,
- 7 <sup>Sit</sup> κάκει <sup>Emb</sup> εὐαγγελιζόμενοι ἦσαν.
- 8 Καὶ <sup>Emb</sup> τις ἀνὴρ <sup>Emb</sup> ἀδύνατος <sup>Emb Split</sup> ἐν Λύστροις <sup>Emb Split</sup> τοῖς ποσὶν <sup>Emb Split</sup> ἐκάθητο,  
3 χλωδὸς ἐκ κοιλίας μητρὸς αὐτοῦ  
3 ὃς οὐδέποτε περιεπάτησεν.
- 9 <sup>Top+</sup> οὕτως ἤκουσεν τοῦ Παύλου λαλοῦντος·  
ὃς ἀτενίσας αὐτῷ  
καὶ ἰδὼν

3 ὅτι ἔχει πίστιν  
 4 τοῦ σωθῆναι,  
 2 **10** εἶπεν μεγάλης φωνῆ,  
 2 Ἀνάστηθι ἐπὶ τοὺς πόδας σου ὀρθός,  
 2 καὶ ἤλατο καὶ περιεπάτει.  
**11** <sup>Top</sup> οἱ τε <sup>Top</sup> ὄχλοι ἰδόντες  
 3 ὃ ἐποίησεν Παῦλος  
 2 ἐπήραν τὴν φωνὴν αὐτῶν Λυκαονιστὶ  
 3 λέγοντες,  
 Οἱ θεοὶ ὁμοιωθέντες ἀνθρώποις κατέβησαν πρὸς ἡμᾶς,  
 2 **12** ἐκάλουν τε τὸν Βαρναβᾶν Δία,  
 3 <sup>Top</sup> τὸν δὲ <sup>Top</sup> Παῦλον Ἑρμῆν,  
 4 ἐπειδὴ <sup>Top</sup> αὐτὸς ἦν ὁ ἡγούμενος τοῦ λόγου.  
**13** <sup>Top</sup> ὃ τε <sup>Top</sup> ἱερεὺς τοῦ Διὸς τοῦ ὄντος πρὸ τῆς πόλεως <sup>Top</sup>  
 ταύρους καὶ στέμματα ἐπὶ τοὺς πυλῶνας ἐνέγκας  
 σὺν τοῖς ὄχλοις ἤθελεν θύειν.  
**14** ἀκούσαντες δὲ οἱ ἀπόστολοι Βαρναβᾶς καὶ Παῦλος  
 διαρρήξαντες τὰ ἱμάτια αὐτῶν  
 2 ἐξεπήδησαν εἰς τὸν ὄχλον  
 3 κράζοντες **15** καὶ λέγοντες,  
 Ἄνδρες, τί <sup>Th+</sup> ταῦτα ποιεῖτε;  
<sup>Top</sup> καὶ ἡμεῖς <sup>Top</sup> ὁμοιοπαθεῖς ἐσμεν <sup>Split</sup> ὑμῖν ἄνθρωποι <sup>Split</sup>  
 3 εὐαγγελιζόμενοι ὑμᾶς  
 4 ἀπὸ τούτων τῶν ματαίων ἐπιστρέφειν ἐπὶ θεὸν ζῶντα,  
 3 ὃς ἐποίησεν τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν καὶ τὴν θάλασσαν  
 4 καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτοῖς·  
**16** ὃς <sup>Sit</sup> ἐν ταῖς <sup>Emb</sup> παρωχημέναις <sup>Sit</sup> γενεαῖς εἶασεν πάντα τὰ ἔθνη  
 3 πορεύεσθαι ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν·  
**17** καίτοι οὐκ ἀμάρτυρον αὐτὸν ἀφήκεν  
 3 ἀγαθουργῶν, οὐρανόθεν ὑμῖν  
 3 ἕτεροῦς διδοῦς <sup>Split</sup> καὶ καιροῦς καρποφόρους, <sup>Split</sup>  
 3 ἐμπιπλῶν τροφῆς καὶ εὐφροσύνης <sup>Th+</sup> τὰς καρδίας ὑμῶν. <sup>Th+</sup>  
**18** καὶ <sup>Top+ T-H</sup> ταῦτα <sup>T-H</sup> λέγοντες  
 μόλις κατέπαυσαν τοὺς ὄχλους  
 3 τοῦ μὴ θύειν αὐτοῖς.  
 2 **19** Ἐπήλθαν δὲ ἀπὸ Ἀντιοχείας καὶ Ἰκονίου Ἰουδαῖοι  
 καὶ πείσαντες τοὺς ὄχλους  
 καὶ λιθάσαντες τὸν Παῦλον  
 2 ἔσυρον ἔξω τῆς πόλεως  
 3 νομίζοντες  
 4 αὐτὸν τεθνηκέναι.  
**20** κυκλωσάντων δὲ τῶν μαθητῶν αὐτὸν  
 ἀναστὰς  
 2 εἰσῆλθεν εἰς τὴν πόλιν.  
 καὶ <sup>Sit</sup> τῇ ἐπαύριον <sup>Sit</sup> ἐξῆλθεν σὺν τῷ Βαρναβᾶ εἰς Δέρβην.  
**21** Εὐαγγελισάμενοί τε τὴν πόλιν ἐκείνην  
 καὶ μαθητεύσαντες ἱκανοῦς  
 2 ὑπέστρεψαν εἰς τὴν Λύστραν καὶ εἰς Ἰκόνιον καὶ εἰς Ἀντιόχειαν  
 3 **22** ἐπιστηρίζοντες τὰς ψυχὰς τῶν μαθητῶν,  
 3 παρακαλοῦντες ἐμμένειν τῇ πίστει  
 4 καὶ ὅτι <sup>Split</sup> διὰ πολλῶν θλίψεων <sup>Split</sup> δεῖ ἡμᾶς  
 5 εἰσελθεῖν εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ θεοῦ.  
**23** χειροτονήσαντες δὲ αὐτοῖς κατ' ἐκκλησίαν <sup>Split</sup> πρεσβυτέρους,  
 προσευξάμενοι μετὰ νηστειῶν

- 2 παρέθεντο αὐτοὺς τῷ κυρίῳ  
3 εἰς ὃν πεπιστεύκεισαν.
- 24** καὶ διελθόντες τὴν Πισιδίαν  
2 ἦλθον εἰς τὴν Παμφυλίαν
- 25** καὶ λαλήσαντες ἐν Πέργῃ τὸν λόγον  
2 κατέβησαν εἰς Ἀτάλειαν
- 26** <sup>Sit</sup> κάκειθεν ἀπέπλευσαν εἰς Ἀντιόχειαν,  
3 ὅθεν ἦσαν παραδεδομένοι τῇ χάριτι τοῦ θεοῦ εἰς τὸ ἔργον  
4 ὃ ἐπλήρωσαν.
- 27** παραγενόμενοι δὲ καὶ συναγαγόντες τὴν ἐκκλησίαν  
2 ἀνήγγελλον  
3 ὅσα ἐποίησεν ὁ θεὸς μετ' αὐτῶν  
3 καὶ ὅτι ἤνοιξεν τοῖς ἔθνεσιν **θύραν πίστεως.**
- 28** διέτριβον δὲ χρόνον οὐκ ὀλίγον σὺν τοῖς μαθηταῖς.
- 15** Καὶ <sup>Top</sup> τινες κατελθόντες ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας  
2 ἐδίδασκον τοὺς ἀδελφοὺς  
ὅτι <sup>Sit</sup> Ἐὰν μὴ περιτμηθῆτε τῷ ἔθει τῷ Μωϋσέως, <sup>Sit</sup>  
2 οὐ δύνασθε σωθῆναι.
- 2** γενομένης δὲ στάσεως καὶ ζητήσεως οὐκ ὀλίγης τῷ Παύλῳ καὶ τῷ Βαρναβᾶ πρὸς αὐτούς,  
2 ἔταξαν ἀναβαίνειν Παῦλον καὶ Βαρναβᾶν καὶ τινὰς ἄλλους ἐξ αὐτῶν πρὸς τοὺς  
ἀποστόλους καὶ πρεσβυτέρους εἰς Ἱερουσαλὴμ <sup>Th+</sup> περὶ τοῦ ζητήματος τούτου. <sup>Th+</sup>
- 3** <sup>Art</sup> Οἱ μὲν οὖν προπεμφθέντες ὑπὸ τῆς ἐκκλησίας  
2 διήρχοντο τὴν τε Φοινίκην καὶ Σαμάρειαν  
3 ἐκδιηγούμενοι τὴν ἐπιστροφὴν τῶν ἐθνῶν  
2 καὶ ἐποίουν χαρὰν μεγάλην πᾶσιν τοῖς ἀδελφοῖς.
- 4** παραγενόμενοι δὲ εἰς Ἱερουσαλὴμ  
2 παρεδέχθησαν ἀπὸ τῆς ἐκκλησίας καὶ τῶν ἀποστόλων καὶ τῶν πρεσβυτέρων,  
2 ἀνήγγειλάν τε  
3 ὅσα <sup>Top</sup> ὁ θεὸς <sup>Top</sup> ἐποίησεν μετ' αὐτῶν.
- 5** ἐξανέστησαν δὲ τινες τῶν **ἀπὸ τῆς αἰρέσεως τῶν Φαρισαίων** <sup>Emb</sup> πεπιστευκότες  
3 λέγοντες  
2 ὅτι **δεῖ περιτέμνειν αὐτούς**  
3 **παραγγέλλειν τε τηρεῖν τὸν νόμον Μωϋσέως.**
- 6** Συνήχθησάν τε οἱ ἀπόστολοι καὶ οἱ πρεσβύτεροι  
3 ἰδεῖν <sup>Th+</sup> περὶ τοῦ λόγου τούτου. <sup>Th+</sup>
- 7** πολλῆς δὲ **ζητήσεως** γενομένης  
ἀναστὰς <sup>Th+</sup> Πέτρος  
2 εἶπεν πρὸς αὐτούς,  
**Ἄνδρες ἀδελφοί,** <sup>Top</sup> ὑμεῖς ἐπίστασθε  
3 ὅτι <sup>Sit</sup> ἀπ' ἡμερῶν ἀρχαίων <sup>Sit</sup> <sup>Top</sup> ἐν ὑμῖν <sup>Top</sup> ἐξελέξατο ὁ θεὸς  
4 **διὰ τοῦ στόματός μου** ἀκοῦσαι τὰ ἔθνη τὸν λόγον τοῦ εὐαγγελίου  
5 καὶ πιστεῦσαι.
- 8** καὶ <sup>Top</sup> ὁ **καρδιογνώστης** θεὸς <sup>Top</sup> ἐμαρτύρησεν αὐτοῖς  
3 δὸς τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον καθὼς καὶ ἡμῖν
- 9** καὶ <sup>Constit</sup> οὐθὲν διέκρινεν μεταξὺ ἡμῶν τε καὶ αὐτῶν  
3 **τῇ πίστει** καθάρισας τὰς καρδίας αὐτῶν.
- 10** <sup>Sit</sup> νῦν οὖν τί πειράζετε τὸν θεὸν  
3 ἐπιθεῖναι ζυγὸν ἐπὶ τὸν τράχηλον τῶν μαθητῶν  
4 ὃν οὔτε **οἱ πατέρες ἡμῶν οὔτε ἡμεῖς** ἰσχύσαμεν βαστάσαι;
- 11** ἀλλὰ **διὰ τῆς χάριτος τοῦ κυρίου Ἰησοῦ** πιστεύομεν σωθῆναι  
3 καθ' ὃν τρόπον **κάκεινοι.**
- 12** Ἐσίγησεν δὲ πᾶν τὸ πλῆθος  
2 καὶ ἤκουον Βαρναβᾶ καὶ Παύλου  
3 ἐξηγουμένων

|           |         |  |
|-----------|---------|--|
|           | 4       | ὅσα ἐποίησεν ὁ θεὸς σημεῖα καὶ τέρατα ἐν τοῖς ἔθνεσιν <sup>Th+</sup> δι' αὐτῶν. <sup>Th+</sup>   |
| <b>13</b> | Sit     | Μετὰ δὲ <sup>Sit</sup> τὸ σιγήσαι αὐτοὺς <sup>Sit</sup>  |
|           | 2       | ἀπεκρίθη <sup>Th+</sup> Ἰάκωβος  |
|           | 3       | λέγων,   |
|           |         | Ἄνδρες ἀδελφοί, ἀκούσατέ μου.  |
| <b>14</b> | Top+    | Συμεὼν ἐξηγήσατο   |
|           | 3       | καθὼς <sup>Sit</sup> πρῶτον <sup>Top</sup> ὁ θεὸς <sup>Top</sup> ἐπεσκέψατο λαβεῖν ἐξ ἐθνῶν <span style="border: 1px dashed red;">λαὸν τῷ ὀνόματι αὐτοῦ.</span>                              |
| <b>15</b> | Top+    | καὶ <sup>Top+</sup> τούτῳ συμφωνοῦσιν οἱ λόγοι τῶν προφητῶν  |
|           | 3       | καθὼς γέγραπται,   |
| <b>16</b> | Sit Th+ | Μετὰ ταῦτα <sup>Sit Th+</sup> ἀναστρέψω  |
|           | 2       | καὶ ἀνοικοδομήσω τὴν κεινὴν Δαυὶδ τὴν πεπτοκυβαν   |
|           |         | καὶ τὰ κατασκευασμένα αὐτῆς ἀνοικοδομήσοι  |
|           | 2       | καὶ ἀνορθώσω αὐτήν.  |
|           | 3       | <b>17</b> ὅπως ἂν ἐξετηρώσωσι οἱ κατάλοιποι πῶν ἀνθρώπων τὸν κύριον  |
|           | 4       | <sup>R-Dis</sup> καὶ πάντα τὰ ἔθνη   |
|           | 5       | ἐφ' οὓς ἐπιπέληται τὸ ὄνομα μου ἐπ' αὐτούς. <sup>R-Dis</sup>   |
|           | 2       | λέγει κύριος   |
|           | 3       | ποιῶν <sup>Th+</sup> ταῦτα <b>18</b> γνωστὰ ἀπ' αἰῶνος.  |
| <b>19</b> | Top     | διὸ ἐγὼ κρίνω  |
|           | 3       | μὴ παρενοχλεῖν τοῖς ἀπὸ τῶν ἐθνῶν ἐπιστρέφουσιν ἐπὶ τὸν θεόν,  |
|           | 3       | <b>20</b> ἀλλὰ ἐπιστεῖλαι αὐτοῖς   |
|           | 4       | τοῦ ἀπέχεσθαι τῶν ἀλισγημάτων τῶν εἰδώλων καὶ τῆς πορνείας καὶ τοῦ πνικτοῦ καὶ τοῦ αἵματος.  |
| <b>21</b> | Top+    | Μωϋσῆς γὰρ <sup>Sit</sup> ἐκ γενεῶν ἀρχαίων <sup>Sit</sup> <span style="border: 1px solid red;">κατὰ πόλιν <sup>Emb</sup> τοὺς κηρύσσοντας αὐτὸν</span> ἔχει                                 |
|           | 3       | <span style="border: 1px solid red;">ἐν ταῖς συναγωγαῖς</span> κατὰ πᾶν σάββατον ἀναγινωσκόμενος.  |
|           | 2       | <b>22</b> Τότε ἔδοξε τοῖς ἀποστόλοις καὶ τοῖς πρεσβυτέροις σὺν ὅλῃ τῇ ἐκκλησίᾳ   |
|           | 3       | ἐκλεξαμένους ἄνδρας ἐξ αὐτῶν   |
|           | 4       | πέμψαι εἰς Ἀντιόχειαν σὺν τῷ Παύλῳ καὶ Βαρναβᾶ, <span style="border: 1px dashed red;">Ἰούδαν τὸν καλούμενον Βαρασαββᾶν καὶ Σιλᾶν.</span>   |
|           | 5       | <sup>App</sup> ἄνδρας ἡγουμένους ἐν τοῖς ἀδελφοῖς, <sup>App</sup>  |
|           | 3       | <b>23</b> γράψαντες διὰ χειρὸς αὐτῶν,  |
|           |         | Οἱ ἀπόστολοι καὶ οἱ πρεσβύτεροι ἀδελφοί  |
|           |         | τοῖς <span style="border: 1px solid red;">κατὰ τὴν Ἀντιόχειαν καὶ Συρίαν καὶ Κιλικίαν <sup>Emb</sup></span> ἀδελφοῖς τοῖς ἐξ ἐθνῶν   |
|           | 2       | χαίρειν.   |
| <b>24</b> | Sit     | Ἐπειδὴ ἠκούσαμεν   |
|           | 3       | ὅτι <sup>Top</sup> τινὲς ἐξ ἡμῶν <sup>Top</sup> [ἐξεληθόντες] ἐτάραξαν ὑμᾶς λόγοις   |
|           | 4       | ἀνασκευάζοντες τὰς ψυχὰς ὑμῶν  |
|           | 5       | οἷς οὐ διεστείλάμεθα, <sup>Sit</sup>   |
|           | 2       | <b>25</b> ἔδοξεν ἡμῖν  |
|           | 3       | γενομένοις ὁμοθυμαδὸν  |
|           | 3       | ἐκλεξαμένοις ἄνδρας  |
|           | 4       | πέμψαι πρὸς ὑμᾶς σὺν τοῖς ἀγαπητοῖς ἡμῶν Βαρναβᾶ καὶ Παύλῳ,  |
|           | 5       | <b>26</b> <sup>App</sup> ἀνθρώποις παραδεδοκόσι τὰς ψυχὰς αὐτῶν ὑπὲρ τοῦ ὀνόματος τοῦ κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ. <sup>App</sup>  |
|           | 2       | <b>27</b> ἀπεστάλκαμεν οὖν Ἰούδαν καὶ Σιλᾶν  |
|           | 3       | καὶ <sup>Top</sup> αὐτοὺς <span style="border: 1px solid red;">διὰ λόγου</span> ἀπαγγέλλοντας τὰ αὐτά.   |
|           | 2       | <b>28</b> ἔδοξεν γὰρ τῷ πνεύματι τῷ ἁγίῳ καὶ ἡμῖν  |
|           | 3       | <span style="border: 1px solid red;">μηδὲν πλέον</span> ἐπιτίθεσθαι ὑμῖν <span style="border: 1px solid red;">βάρος πλὴν <sup>Split</sup> τούτων τῶν ἐπάναγκες, <sup>Cata Split</sup></span> |
|           | 3       | <span style="border: 1px dashed red;"><b>29</b> <sup>CataRef</sup> ἀπέχεσθαι εἰδωλοθύτων καὶ αἵματος καὶ πνικτῶν καὶ πορνείας, <sup>CataRef</sup></span>                                     |
|           |         | ἐξ ὧν διατηροῦντες ἑαυτοὺς   |
|           |         | <span style="border: 1px solid red;">εὖ</span> πράξετε.  |
|           | 2       | Ἔρρωσθε.   |
| <b>30</b> | Art     | Οἱ μὲν οὖν ἀπολυθέντες   |

- 2 κατήλθον εἰς Ἀντιόχειαν,  
καὶ συναγαγόντες τὸ πλῆθος  
2 ἐπέδωκαν τὴν ἐπιστολήν.  
31 ἀναγνόντες δὲ  
2 ἐχάρησαν ἐπὶ τῇ παρακλήσει.  
32 <sup>L-Dis</sup> Ἰούδας <sup>τε</sup> <sup>L-Dis Th+</sup> καὶ <sup>L-Dis Th+</sup> Σιλᾶς <sup>L-Dis Th+</sup> καὶ <sup>Top+</sup> αὐτοὶ προφῆται ὄντες  
διὰ λόγου πολλοῦ παρεκάλεσαν τοὺς ἀδελφοὺς  
2 καὶ ἐπεστήριξαν,  
33 ποιήσαντες δὲ χρόνον  
2 ἀπελύθησαν μετ' εἰρήνης ἀπὸ τῶν ἀδελφῶν πρὸς τοὺς ἀποστείλαντας αὐτούς.  
32 <sup>Top+</sup> Παῦλος δὲ <sup>Top+</sup> καὶ <sup>Top+</sup> Βαρναβᾶς <sup>Top+</sup> διέτριβον ἐν Ἀντιοχείᾳ  
3 διδάσκοντες καὶ εὐαγγελιζόμενοι μετὰ καὶ ἐτέρων πολλῶν τὸν λόγον τοῦ κυρίου.  
36 <sup>Sit</sup> Μετὰ δὲ <sup>Sit</sup> τινὰς ἡμέρας <sup>Sit</sup> εἶπεν <sup>Th+</sup> πρὸς Βαρναβᾶν <sup>Th+</sup> <sup>ThS+</sup> Παῦλος,  
Ἐπιστρέψαντες δὴ  
2 ἐπισκεψώμεθα τοὺς ἀδελφοὺς κατὰ πόλιν πᾶσαν  
3 ἐν αἷς κατηγγείλαμεν τὸν λόγον τοῦ κυρίου  
4 πῶς ἔχουσιν.  
37 <sup>Top+</sup> Βαρναβᾶς δὲ ἐβούλετο συμπαραλαβεῖν καὶ τὸν Ἰωάννην τὸν καλούμενον Μᾶρκον·  
38 <sup>Top+</sup> Παῦλος δὲ ἤξιον,  
3 <sup>L-Dis</sup> τὸν ἀποστάντα ἀπ' αὐτῶν ἀπὸ Παμφυλίας  
5 καὶ μὴ συνελθόντα αὐτοῖς εἰς τὸ ἔργον <sup>L-Dis</sup>  
3 μὴ συμπαραλαμβάνειν <sup>Th+</sup> τοῦτον.  
2 39 ἐγένετο δὲ παροξυσμὸς  
4 ὥστε ἀποχωρισθῆναι αὐτοὺς ἀπ' ἀλλήλων,  
3 <sup>Top</sup> τὸν τε <sup>Top</sup> Βαρναβᾶν παραλαβόντα τὸν Μᾶρκον  
4 ἐκπλεῦσαι εἰς Κύπρον,  
40 <sup>Top+</sup> Παῦλος δὲ ἐπιλεξάμενος Σιλᾶν  
2 ἐξῆλθεν  
3 παραδοθεὶς τῇ χάριτι τοῦ κυρίου ὑπὸ τῶν ἀδελφῶν.  
2 41 διήρχετο δὲ τὴν Συρίαν καὶ [τὴν] Κιλικίαν  
3 ἐπιστηρίζων τὰς ἐκκλησίας.  
2 16 Κατήνησεν δὲ [καὶ] εἰς Δέρβην καὶ εἰς Λύστραν.  
καὶ ἰδοὺ μαθητῆς τις ἦν ἐκεῖ ἰσχυρῶς ὀνόματι Τιμόθεος, ἰσχυρῶς  
3 υἱὸς γυναικὸς Ἰουδαίας πιστῆς,  
3 <sup>Top</sup> πατρὸς δὲ Ἑλλήνος,  
3 2 ὃς ἐμαρτυρεῖτο ὑπὸ τῶν ἐν Λύστροις καὶ Ἰκονίῳ ἀδελφῶν.  
3 <sup>Top+</sup> τοῦτον ἠθέλησεν ὁ Παῦλος  
3 σὺν αὐτῷ ἐξελεῖν,  
καὶ λαβῶν  
2 περιέτεμεν αὐτὸν διὰ τοὺς Ἰουδαίους τοὺς ὄντας ἐν τοῖς τόποις ἐκείνοις·  
2 ἦδεισαν γὰρ ἅπαντες  
3 ὅτι Ἑλλήν ὁ πατὴρ αὐτοῦ ὑπῆρχεν.  
4 <sup>Sit</sup> ὡς δὲ <sup>Sit</sup> διεπορεύοντο τὰς πόλεις, <sup>Sit</sup>  
2 παρεδίδοσαν αὐτοῖς  
3 φυλάσσειν τὰ δόγματα  
4 τὰ κεκριμένα ὑπὸ τῶν ἀποστόλων καὶ πρεσβυτέρων τῶν ἐν Ἱεροσολύμοις.  
5 <sup>Top</sup> αἱ μὲν οὖν <sup>Top</sup> ἐκκλησίαι ἐστεροῦντο τῇ πίστει  
2 καὶ ἐπερίσσευον τῷ ἀριθμῷ καθ' ἡμέραν.  
2 6 Διήλθον δὲ τὴν Φρυγίαν καὶ Γαλατικὴν χώραν  
3 κωλυθέντες ὑπὸ τοῦ ἁγίου πνεύματος  
4 λαλῆσαι τὸν λόγον ἐν τῇ Ἀσίᾳ·  
7 ἐλθόντες δὲ κατὰ τὴν Μυσίαν  
2 ἐπείραζον  
3 εἰς τὴν Βιθυνίαν πορευθῆναι,



2 και οὐκ εἶασεν αὐτοὺς τὸ πνεῦμα Ἰησοῦ·  
**8** παρελθόντες δὲ τὴν Μυσίαν  
 2 κατέβησαν εἰς Τρωάδα.  
**9** και ὄραμα διὰ [τῆς] νυκτὸς τῷ Παύλῳ ὤφθη,  
 ἀνὴρ Μακεδῶν τις ἦν ἐστὼς  
 3 και παρακαλῶν αὐτὸν και λέγων,  
 Διαβάς εἰς Μακεδονίαν  
 2 βοήθησον ἡμῖν.  
**10** Sit ὡς δὲ τὸ ὄραμα Emb εἶδεν, Sit  
 εὐθέως ἐζητήσαμεν ἐξελθεῖν εἰς Μακεδονίαν  
 3 συμβιβάζοντες  
 4 ὅτι προσκέκληται ἡμᾶς ὁ θεὸς  
 5 εὐαγγελίσασθαι αὐτούς.  
**11** Ἀναχθέντες δὲ ἀπὸ Τρωάδος  
 2 εὐθυδρομήσαμεν εἰς Σαμοθράκην,  
 3 Sit τῇ δὲ Sit ἐπιούσῃ εἰς Νέαν Πόλιν  
 3 **12** Sit κἀκεῖθεν εἰς Φιλίππους,  
 4 ἥτις ἐστὶν πρώτη[ς] μερίδος τῆς Μακεδονίας πόλις, |<sup>App</sup> κολωνία. |  
 2 ἡμεν δὲ <sup>Th+</sup> ἐν ταύτῃ τῇ πόλει <sup>Th+</sup> διατρίβοντες ἡμέρας τινάς.  
**13** Sit τῇ τε Sit ἡμέρα τῶν σαββάτων Sit ἐξήλθομεν ἔξω τῆς πύλης παραρὰ ποταμὸν·  
 2 οὐ ἐνομίζομεν  
 3 προσευχὴν εἶναι,  
 και καθίσαντες  
 2 ἐλαλοῦμεν ταῖς συνελθούσαις γυναῖξιν.  
**14** και τις γυνὴ ὀνόματι Λυδία, πορφυρόπωλις πόλεως Θυατείρων σεβομένη τὸν θεόν,  
 ἤκουεν,  
 ἥς <sup>Top</sup> ὁ κύριος <sup>Top</sup> διήνοιξεν τὴν καρδίαν  
 3 προσέχειν τοῖς λαλουμένοις ὑπὸ τοῦ Παύλου.  
**15** Sit ὡς δὲ Sit ἐβαπτίσθη |<sup>R-Dis</sup> και ὁ οἶκος αὐτῆς, <sup>R-Dis</sup> Sit  
 2 παρεκάλεσεν  
 3 λέγουσα,  
 Sit Εἰ κεκρίκατέ με Emb πιστὴν τῷ κυρίῳ Emb εἶναι, Sit  
 εἰσελθόντες εἰς τὸν οἶκόν μου  
 2 μένετε·  
 2 και παρεβιάσατο ἡμᾶς.  
 2 **16** Εγένετο δὲ  
 πορευομένων ἡμῶν εἰς τὴν προσευχὴν  
 3 παιδίσκην τινὰ ἔχουσαν πνεῦμα πύθωνα ὑπαντῆσαι ἡμῖν,  
 4 ἥτις ἐργασίαν πολλὴν παρείχεν τοῖς κυρίοις αὐτῆς  
 5 μαντευομένη.  
**17** <sup>Top+</sup> αὕτη κατακολουθοῦσα τῷ Παύλῳ και ἡμῖν  
 2 ἔκραζεν  
 3 λέγουσα,  
<sup>Top+</sup> Οὗτοι οἱ ἄνθρωποι <sup>Top+</sup> δούλοι τοῦ θεοῦ τοῦ ὑψίστου εἰσίν,  
 2 οἵτινες καταγγέλλουσιν ὑμῖν ὁδὸν σωτηρίας.  
**18** <sup>Top+</sup> τοῦτο δὲ ἐποιεῖ ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας.  
 διαπονηθεὶς δὲ <sup>Th+</sup> Παῦλος  
 και ἐπιστρέψας  
 \* <sup>Top</sup> τῷ πνεύματι \* <sup>Top</sup> εἶπεν,  
 2 Παραγγέλλω σοι ἐν ὀνόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ  
 3 ἐξελθεῖν ἀπ' αὐτῆς·  
 2 και ἐξήλθεν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ.  
**19** ἰδόντες δὲ οἱ κύριοι αὐτῆς  
 3 ὅτι ἐξήλθεν ἡ ἐλπίς τῆς ἐργασίας αὐτῶν,

ἐπιλαβόμενοι τὸν Παῦλον καὶ τὸν Σιλᾶν  
 2 εἴκυσαν εἰς τὴν ἀγορὰν ἐπὶ τοὺς ἄρχοντας  
**20** καὶ προσαγαγόντες αὐτοὺς τοῖς στρατηγοῖς  
 2 εἶπαν,  
 Top+ Οὗτοι οἱ ἄνθρωποι Top+ ἑκταράσσουσιν TopGen ἡμῶν τὴν πόλιν,  
 3 Ἰουδαῖοι ὑπάρχοντες,  
 2 **21** καὶ καταγγέλλουσιν ἔθνη  
 3 ἃ οὐκ ἔξεστιν ἡμῖν  
 5 παραδέχεσθαι οὐδὲ ποιεῖν  
 4 Ῥωμαίοις οὖσιν.  
 2 **22** καὶ συνεπέστη ὁ ὄχλος κατ' αὐτῶν  
 καὶ Top οἱ στρατηγοὶ Top περιρήξαντες TopGen αὐτῶν τὰ ἱμάτια  
 2 ἐκέλευον ῥαβδίσειν,  
**23** πολλὰς τε ἐπιθέντες αὐτοῖς Split πληγὰς  
 2 ἔβαλον εἰς φυλακὴν  
 3 παραγγείλαντες τῷ δεσμοφύλακι  
 4 ἀσφαλῶς τηρεῖν αὐτούς.  
**24** ὃς παραγγελίαν τοιαύτην λαβὼν  
 2 ἔβαλεν αὐτοὺς εἰς τὴν ἐσωτέραν φυλακὴν  
 καὶ τοὺς πόδας ἠσφαλίσατο TopGen αὐτῶν εἰς τὸ ξύλον.  
**25** Sit Κατὰ δὲ Sit τὸ μεσονύκτιον Sit Top+ Παῦλος καὶ Σιλᾶς Top+ προσευχόμενοι  
 2 ὕμνον τὸν θεόν,  
 2 ἐπηκροῶντο δὲ αὐτῶν οἱ δέσμοι.  
**26** Sit ἄφνω δὲ σεισμός ἐγένετο Split μέγας  
 3 ὥστε σαλευθῆναι τὰ θεμέλια τοῦ δεσμοτηρίου·  
 2 ἠνεώχθησαν δὲ παραχοῖμα αἱ θύραι Emb πᾶσαι  
 καὶ Top+ πάντων τὰ δεσμὰ ἀνέθη.  
**27** ἔξυπνος δὲ γενόμενος ὁ δεσμοφύλαξ  
 καὶ ἰδὼν Emb ἀνεωγμένας τὰς θύρας τῆς φυλακῆς,  
 σπασάμενος [τὴν] μάχαιραν  
 2 ἤμελλεν ἑαυτὸν Emb ἀναρρεῖν  
 3 νομίζων  
 4 ἐκπεφευγέναι τοὺς δεσμίους.  
 2 **28** ἐφώνησεν δὲ μεγάλη φωνῇ ThS+ [ὁ] Παῦλος ThS+  
 3 λέγων,  
 Μηδὲν πράξης σεαυτῷ Split κακόν,  
 ἅπαντες γὰρ ἐσμεν ἐνθάδε.  
**29** αἰτήσας δὲ φῶτα  
 2 εἰσεπήδησεν  
 καὶ ἔντρομος γενόμενος  
 2 προσέπεσεν τῷ Παύλῳ καὶ [τῷ] Σιλᾶ  
**30** καὶ προσαγαγὼν αὐτοὺς ἔξω  
 2 ἔφη,  
 Κύριοι, τί με δεῖ ποιεῖν  
 3 ἵνα σωθῶ;  
**31** Art οἱ δὲ εἶπαν,  
 2 Πίστευσον ἐπὶ τὸν κύριον Ἰησοῦν  
 2 καὶ σωθήσῃ σὺ καὶ ὁ οἶκός σου.  
 2 **32** καὶ ἐλάλησαν αὐτῷ τὸν λόγον τοῦ κυρίου  
 3 σὺν πᾶσιν τοῖς ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ.  
**33** καὶ παραλαβὼν αὐτοὺς ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ τῆς νυκτὸς  
 2 ἔλουσεν ἀπὸ τῶν πληγῶν,  
 2 καὶ ἐβαπτίσθη αὐτὸς καὶ οἱ αὐτοῦ πάντες παραχοῖμα,  
**34** ἀναγαγὼν τε αὐτοὺς εἰς τὸν οἶκον

- 2 παρέθηκεν τράπεζαν  
2 καὶ ἠγαλλιάσατο πανοικεὶ  
3 πεπιστευκῶς τῷ θεῷ.
- 35** Ἡμέρας δὲ γενομένης  
2 ἀπέστειλαν οἱ στρατηγοὶ τοὺς ῥαβδούχους  
3 λέγοντες,  
2 Ἀπόλυσον τοὺς ἀνθρώπους ἐκείνους.  
2 **36** ἀπήγγειλεν δὲ ὁ δεσμοφύλαξ <sup>Th+</sup> τοὺς λόγους [τούτους] <sup>Th+</sup> πρὸς τὸν Παῦλον  
2 ὅτι Ἀπέσταλκαν οἱ στρατηγοὶ  
3 ἵνα ἀπολυθῆτε·  
Sit **νῦν οὖν ἐξεληθόντες**  
2 πορεύεσθε ἐν εἰρήνῃ.
- 37** <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Παῦλος ἔφη πρὸς αὐτούς,  
Δείραντες ἡμᾶς δημοσίᾳ ἀκατακρίτους,  
Emb ἀνθρώπους Ῥωμαίους Emb ὑπάρχοντας, ἔβαλαν εἰς φυλακὴν,  
καὶ <sup>Sit</sup> νῦν λάθρα ἡμᾶς ἐκβάλλουσιν;  
οὐ γάρ,  
ἀλλὰ ἐλθόντες αὐτοὶ ἡμᾶς ἐξαγαγέτωσαν.  
2 **38** ἀπήγγειλαν δὲ τοῖς στρατηγοῖς <sup>ThS+</sup> οἱ ῥαβδούχοι <sup>ThS+</sup> <sup>Th+</sup> τὰ ῥήματα ταῦτα. <sup>Th+</sup>  
2 ἐφοβήθησαν δὲ  
3 ἀκούσαντες  
4 ὅτι Ῥωμαῖοί εἰσιν,
- 39** καὶ ἐλθόντες  
2 παρεκάλεσαν αὐτούς  
καὶ ἐξαγαγόντες  
2 ἠρώτων ἀπελθεῖν ἀπὸ τῆς πόλεως.  
**40** ἐξεληθόντες δὲ ἀπὸ τῆς φυλακῆς  
2 εἰσηλθον πρὸς τὴν Λυδίαν  
καὶ ἰδόντες  
2 παρεκάλεσαν τοὺς ἀδελφοὺς  
2 καὶ ἐξηλθον.
- 17** Διοδεύσαντες δὲ τὴν Ἀμφίπολιν καὶ τὴν Ἀπολλωνίαν  
2 ἦλθον εἰς Θεσσαλονίκην  
3 ὅπου ἦν συναγωγὴ τῶν Ἰουδαίων.
- 2** <sup>Sit</sup> κατὰ δὲ <sup>Sit</sup> τὸ εἰωθὸς τῷ Παύλῳ <sup>Sit</sup> εἰσηλθεν πρὸς αὐτούς  
καὶ ἐπὶ σάββατα τρία διελέξατο αὐτοῖς ἀπὸ τῶν γραφῶν,  
3 **3** διανοίγων καὶ παρατιθέμενος  
4 ὅτι <sup>Top</sup> τὸν Χριστὸν <sup>Top</sup> ἔδει παθεῖν καὶ ἀναστῆναι ἐκ νεκρῶν  
4 καὶ ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ Χριστὸς | <sup>R-Dis</sup> [ὁ] Ἰησοῦς  
5 ὃν <sup>Top</sup> ἐγὼ καταγγέλλω ὑμῖν. | <sup>R-Dis</sup>
- 4** καὶ <sup>Top</sup> τινες ἐξ αὐτῶν <sup>Top</sup> ἐπίεισθησαν  
2 καὶ προσεκληρώθησαν τῷ Παύλῳ καὶ τῷ Σιλᾷ, τῶν τε σεβομένων Ἑλλήνων <sup>πλήθος</sup>  
<sup>πολύ,</sup>  
3 γυναικῶν τε τῶν πρώτων <sup>οὐκ ὀλίγα.</sup>
- 5** Ζηλώσαντες δὲ οἱ Ἰουδαῖοι  
καὶ προσλαβόμενοι τῶν ἀγοραίων <sup>ἄνδρας τινὰς πονηροὺς</sup>  
καὶ ὀχλοποιήσαντες  
2 ἐθορύβουν τὴν πόλιν  
καὶ ἐπιστάντες τῇ οἰκίᾳ Ἰάσονος  
2 ἐξήτουν αὐτούς  
3 προαγαγεῖν εἰς τὸν δῆμον·
- 6** μὴ εὐρόντες δὲ αὐτούς  
2 ἔσυρον <sup>Th+</sup> Ἰάσονα καὶ τινὰς ἀδελφοὺς ἐπὶ τοὺς πολιτάρχας  
3 βοῶντες

ὅτι <sup>L-Dis</sup> Οἱ <sup>Emb</sup> τὴν οἰκουμένην <sup>Emb</sup> ἀναστατώσαντες <sup>L-Dis</sup> <sup>Top+</sup> οὗτοι <sup>Top+</sup> καὶ ἐνθάδε <sup>R-Dis</sup> πάρεσιν,  
 2 **7** οὓς ὑποδέδεκται Ἰάσων·  
 καὶ <sup>Top+</sup> οὗτοι <sup>Emb</sup> πάντες <sup>Top+</sup> ἀπέναντι τῶν δογμάτων Καίσαρος <sup>R-Dis</sup> πράσσουσι  
 3 <sup>R-Dis</sup> βασιλέα ἕτερον <sup>R-Dis</sup> λέγοντες εἶναι <sup>R-Dis</sup> Ἰησοῦν.  
 2 **8** ἐτάραξαν δὲ τὸν ὄχλον καὶ τοὺς πολιτάρχας ἀκούοντας <sup>Th+</sup> ταῦτα,  
**9** καὶ λαβόντες τὸ ἱκανὸν παρὰ τοῦ Ἰάσονος καὶ τῶν λοιπῶν  
 2 ἀπέλυσαν αὐτούς.  
**10** <sup>Top</sup> Οἱ δὲ <sup>Top</sup> ἀδελφοὶ <sup>Top</sup> εὐθέως <sup>Top</sup> διὰ νυκτὸς <sup>Top</sup> ἐξέπεμψαν τὸν τε Παῦλον καὶ τὸν Σιλᾶν εἰς  
 Βέροϊαν,  
 οἵτινες παραγενόμενοι  
 εἰς τὴν συναγωγὴν τῶν Ἰουδαίων <sup>R-Dis</sup> ἀπήεσαν.  
**11** <sup>Top+</sup> οὗτοι δὲ ἦσαν εὐγενέστεροι τῶν ἐν Θεσσαλονίκῃ,  
 2 οἵτινες ἐδέξαντο τὸν λόγον μετὰ πάσης προθυμίας  
 3 καθ' ἡμέραν <sup>R-Dis</sup> ἀνακρίνοντες τὰς γραφὰς  
 4 εἰ ἔχει <sup>Th+</sup> ταῦτα οὕτως.  
**12** <sup>Top</sup> πολλοὶ μὲν οὖν <sup>Top</sup> ἐξ αὐτῶν <sup>Top</sup> ἐπίστευσαν  
 3 <sup>R-Dis</sup> καὶ τῶν Ἑλληνίδων γυναικῶν τῶν εὐσηχημόνων καὶ ἀνδρῶν <sup>R-Dis</sup> οὐκ ὀλίγοι.  
**13** <sup>Sit</sup> Ὡς δὲ <sup>Sit</sup> ἔγνωσαν οἱ <sup>Emb</sup> ἀπὸ τῆς Θεσσαλονίκης <sup>Emb</sup> Ἰουδαῖοι  
 3 ὅτι <sup>ThS+</sup> καὶ ἐν τῇ Βεροίᾳ <sup>ThS+</sup> κατηγγέλη ὑπὸ τοῦ Παύλου <sup>ThS+</sup> ὁ λόγος τοῦ θεοῦ, <sup>ThS+</sup> <sup>Sit</sup>  
 2 ἦλθον κάκεῖ  
 3 σαλεύοντες καὶ ταράσσοντες τοὺς ὄχλους.  
**14** εὐθέως δὲ τότε <sup>R-Dis</sup> τὸν Παῦλον <sup>R-Dis</sup> ἐξαπέστειλαν οἱ ἀδελφοὶ  
 3 πορεύεσθαι ἕως ἐπὶ τὴν θάλασσαν,  
 2 ὑπέμεινάν τε ὃ τε Σιλᾶς καὶ ὁ Τιμόθεος ἐκεῖ.  
**15** <sup>Top</sup> οἱ δὲ <sup>Top</sup> καθιστάνοντες τὸν Παῦλον <sup>Top</sup> ἤγαγον ἕως Ἀθηνῶν,  
 καὶ λαβόντες ἐντολὴν πρὸς τὸν Σιλᾶν καὶ τὸν Τιμόθεον  
 3 ἵνα <sup>R-Dis</sup> ὡς τάχιστα <sup>R-Dis</sup> ἔλθωσιν πρὸς αὐτὸν  
 2 ἐξήεσαν.  
**16** <sup>Sit</sup> Ἐν δὲ <sup>Sit</sup> ταῖς Ἀθήναις <sup>Sit</sup> ἐκδεχομένου αὐτοῦ τοῦ Παύλου  
 2 παρωξύνετο τὸ πνεῦμα αὐτοῦ ἐν αὐτῷ  
 3 θεωροῦντος  
 4 <sup>R-Dis</sup> κατείδωλον <sup>R-Dis</sup> οὔσαν τὴν πόλιν.  
 2 **17** διελέγετο μὲν οὖν ἐν τῇ συναγωγῇ <sup>R-Dis</sup> τοῖς Ἰουδαίοις καὶ τοῖς σεβομένοις <sup>R-Dis</sup>  
 3 καὶ ἐν τῇ ἀγορᾷ κατὰ πᾶσαν ἡμέραν <sup>R-Dis</sup> πρὸς τοὺς παρατυγχάνοντας.  
**18** τινὲς δὲ <sup>R-Dis</sup> καὶ τῶν Ἐπικουρείων καὶ Στοϊκῶν φιλοσόφων <sup>R-Dis</sup> συνέβαλλον αὐτῷ,  
 καὶ <sup>Top</sup> τινες ἔλεγον,  
<sup>Th+</sup> Τί ἂν θέλοι <sup>Th+</sup> ὁ σπερμολόγος οὗτος <sup>Th+</sup>  
 3 λέγειν;  
<sup>Art</sup> οἱ δέ,  
<sup>R-Dis</sup> Ξένων δαιμονίων <sup>R-Dis</sup> δοκεῖ <sup>Split</sup> καταγγελεὺς <sup>R-Dis</sup> εἶναι,  
 3 ὅτι <sup>R-Dis</sup> τὸν Ἰησοῦν καὶ τὴν ἀνάστασιν <sup>R-Dis</sup> εὐηγγελίζετο.  
**19** ἐπιλαβόμενοί τε αὐτοῦ  
<sup>R-Dis</sup> ἐπὶ τὸν Ἄρειον Πάγον <sup>R-Dis</sup> ἤγαγον  
 3 λέγοντες,  
 2 Δυνάμεθα γνῶναι  
 3 τίς <sup>Th+</sup> ἡ καινὴ αὕτη ἡ <sup>Emb</sup> ὑπὸ σοῦ λαλουμένη <sup>Emb</sup> διδαχὴ; <sup>Th+</sup>  
**20** <sup>R-Dis</sup> ξενίζοντα <sup>R-Dis</sup> γάρ <sup>R-Dis</sup> τίνα <sup>R-Dis</sup> εἰσφέρεις εἰς τὰς ἀκοὰς ἡμῶν  
 2 βουλόμεθα οὖν γνῶναι  
 3 τίνα θέλει <sup>Th+</sup> ταῦτα  
 4 εἶναι.  
**21** <sup>Top</sup> Ἀθηναῖοι δὲ <sup>Top</sup> πάντες καὶ οἱ ἐπιδημοῦντες ξένοι <sup>Top</sup> <sup>Constit</sup> εἰς οὐδὲν ἕτερον <sup>Constit</sup>  
 ἠὲ καίρου  
 3 ἢ λέγειν τι ἢ ἀκούειν τι καινότερον.  
**22** Σταθεῖς δὲ [ὁ] Παῦλος ἐν μέσῳ τοῦ Ἀρείου Πάγου

2 ἔφη,  
 Ἄνδρες Ἀθηναῖοι, **Emb** κατὰ πάντα **Emb** ὡς δεισιδαιμονεστέρους ὑμᾶς θεωρῶ.  
**23** διερχόμενος γὰρ καὶ ἀναθεωρῶν τὰ σεβάσματα ὑμῶν  
 2 εὖρον καὶ βωμὸν  
 3 ἐν ᾧ ἐπεγέγραπτο,  
 3 Ἄγνώστῳ θεῷ.  
 L-Dis ὁ οὖν L-Dis ἀγνοοῦντες εὐσεβεῖτε, L-Dis **τοῦτο** ἐγὼ καταγγέλλω ὑμῖν.  
**24** L-Dis ὁ θεὸς ὁ ποιήσας τὸν κόσμον καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτῷ, L-Dis  
 Top+ οὗτος οὐρανοῦ καὶ γῆς ὑπάρχων **Split** κύριος  
 οὐκ ἐν **Emb** χειροποιήτοις ναοῖς κατοικεῖ  
**25** οὐδὲ ὑπὸ χειρῶν ἀνθρωπίνων θεραπεύεται  
 3 προσδεόμενός τις,  
 3 Top αὐτὸς διδούς πᾶσι ζωὴν καὶ πνοὴν καὶ τὰ πάντα·  
 2 **26** ἐποίησέν τε ἐξ ἐνὸς **πᾶν ἔθνος ἀνθρώπων**  
 4 κατοικεῖν ἐπὶ παντὸς προσώπου τῆς γῆς,  
 3 ὀρίσας προστεταγμένους καιροὺς καὶ τὰς ὁροθεσίας τῆς κατοικίας αὐτῶν  
 4 **27** ζητεῖν τὸν θεόν,  
 5 εἰ ἄρα γε ψηλαφήσειαν αὐτὸν καὶ εὔροιεν,  
 6 καὶ γε **οὐ μακρὰν ἀπὸ ἐνὸς ἐκάστου ἡμῶν** ὑπάρχοντα.  
**28** Sit Ἐν αὐτῷ Sit γὰρ ζῶμεν καὶ κινούμεθα καὶ ἐσμέν,  
 3 ὡς καὶ **τινες τῶν Emb** καθ' ὑμᾶς **Emb** ποιητῶν εἰρήκασιν,  
**τοῦ γὰρ** **καὶ γένος ἐσμέν.**  
**29** T-H γένος οὖν T-H ὑπάρχοντες **Split τοῦ θεοῦ Split T-H**  
 2 οὐκ ὀφείλομεν νομίζειν  
 3 **χρυσῷ ἢ ἀργύρῳ ἢ λίθῳ, χαράγματι τέχνης καὶ ἐνθυμήσεως ἀνθρώπου,** τὸ θεῖον  
 εἶναι ὅμοιον.  
**30** τοὺς μὲν οὖν **χρόνους τῆς ἀγνοίας** ὑπεριδὼν ὁ θεός,  
 Top τὰ νῦν Top παραγγέλλει τοῖς ἀνθρώποις πάντας πανταχοῦ  
 3 μετανοεῖν,  
 4 **31** καθότι ἔστησεν ἡμέραν  
 6 ἐν ἧ ἢ μέλλει κρίνειν τὴν οἰκουμένην ἐν δικαιοσύνῃ, ἐν ἀνδρὶ  
 7 ᾧ ὤρισεν,  
 5 **πίστιν** παρασχὼν πᾶσιν  
 6 ἀναστήσας αὐτὸν ἐκ νεκρῶν.  
**32** Ἀκούσαντες δὲ ἀνάστασιν νεκρῶν  
 Art οἱ μὲν ἐχλεύαζον,  
 Art οἱ δὲ εἶπαν,  
 2 Ἀκουσόμεθά σου Th+ περὶ τούτου Th+ **καὶ πάλιν.**  
**33** \*Sit οὕτως Top **ὁ Παῦλος** Top ἐξῆλθεν ἐκ μέσου αὐτῶν.  
**34** Top τινὲς δὲ Top ἄνδρες κολληθέντες αὐτῷ  
 2 ἐπίστευσαν,  
 3 ἐν οἷς καὶ Διονύσιος ὁ Ἀρεοπαγίτης καὶ γυνὴ ὀνόματι Δάμαρις καὶ ἕτεροι σὺν  
 αὐτοῖς.  
**18** Sit Th+ Μετὰ ταῦτα Sit Th+ χωρισθεὶς ἐκ τῶν Ἀθηνῶν  
 2 ἦλθεν εἰς Κόρινθον.  
**2** καὶ εὐρών τινα Ἰουδαῖον ὀνόματι Ἀκύλαν,  
 4 **Emb** Ποντικὸν τῷ γένει  
 4 **προσφάτως** ἐληλυθότα ἀπὸ τῆς Ἰταλίας  
 3 καὶ Πρίσκιλλαν γυναῖκα αὐτοῦ,  
 4 διὰ τὸ διατεταχέναι Κλαύδιον  
 5 χωρίζεσθαι πάντας τοὺς Ἰουδαίους ἀπὸ τῆς Ῥώμης,  
 2 προσῆλθεν αὐτοῖς  
**3** καὶ Sit διὰ **Emb** τὸ ὁμότεχνον **Emb** εἶναι Sit  
 2 ἔμενον παρ' αὐτοῖς,

2 καὶ ἠργάζετο·  
 2 ἦσαν γὰρ σκηνοποιοὶ τῇ τέχνῃ.  
 2 **4** διελέγετο δὲ ἐν τῇ συναγωγῇ **κατὰ πᾶν σάββατον**  
 2 ἔπειθ' ἐν τε Ἰουδαίους καὶ Ἕλληνας.  
**5** <sup>Sit</sup> Ὡς δὲ <sup>Sit</sup> κατήλθον ἀπὸ τῆς Μακεδονίας **ὁ τε Σιλᾶς καὶ ὁ Τιμόθεος,** <sup>Emb Sit</sup>  
 2 συνείχετο τῷ λόγῳ <sup>ThS+</sup> ὁ Παῦλος <sup>ThS+</sup>  
 3 διαμαρτυρούμενος τοῖς Ἰουδαίοις  
 4 εἶναι τὸν Χριστὸν **Ἰησοῦν.**  
**6** ἀντιτασσομένων δὲ αὐτῶν  
 καὶ βλασφημούντων  
 ἐκτιναξάμενος τὰ ἱμάτια  
 2 εἶπεν πρὸς αὐτούς,  
<sup>Top</sup> **Τὸ αἷμα ὑμῶν** <sup>Top</sup> **ἐπὶ τὴν κεφαλὴν ὑμῶν·**  
**καθαρὸς ἐγὼ**  
<sup>Sit</sup> **ἀπὸ τοῦ νῦν** <sup>Sit</sup> **εἰς τὰ ἔθνη** πορεύσομαι.  
**7** καὶ μεταβάς ἐκεῖθεν  
 2 εἰσῆλθεν εἰς οἰκίαν τινὸς ὀνόματι Τιτίου Ἰούστου  
 4 σεβομένου τὸν θεόν,  
 3 οὗ <sup>Top</sup> ἡ οἰκία <sup>Top</sup> ἦν συνομοροῦσα τῇ συναγωγῇ.  
**8** <sup>Top</sup> **Κρίσπος** δὲ <sup>Top</sup> ὁ ἀρχισυνάγωγος <sup>Top</sup> ἐπίστευσεν τῷ κυρίῳ  
 3 σὺν ὅλῳ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ,  
 καὶ <sup>Top</sup> πολλοὶ τῶν Κορινθίων <sup>Top</sup> ἀκούοντες  
 2 ἐπίστευον καὶ ἐβαπτίζοντο.  
 2 **9** εἶπεν δὲ ὁ κύριος ἐν νυκτὶ δι' ὄραματος **τῷ Παύλῳ·**  
**Μὴ φοβοῦ,**  
 2 **ἀλλὰ λάλει καὶ μὴ σιωπήσης,**  
 3 **10** **διότι** <sup>\* Top</sup> **ἐγὼ εἰμι μετὰ σοῦ**  
 4 καὶ <sup>Constit</sup> **οὐδεὶς** ἐπιθήσεται σοι  
 6 **τοῦ κακῶσαι σε,**  
 5 **διότι** **λαός** ἐστὶ μοι <sup>Split</sup> **πολύς** <sup>Th+</sup> ἐν τῇ πόλει ταύτῃ. <sup>Th+</sup>  
 2 **11** Ἐκάθισεν δὲ ἑνιαυτὸν καὶ μῆνας ἕξ  
 3 διδάσκων ἐν αὐτοῖς τὸν λόγον τοῦ θεοῦ.  
**12** <sup>Top</sup> **Γαλλίωνος** δὲ **ἀνθυπάτου** ὄντος <sup>Split</sup> **τῆς Ἀχαΐας** <sup>Split</sup>  
 2 κατεπέστησαν ὁμοθυμαδὸν οἱ Ἰουδαῖοι τῷ Παύλῳ  
 2 καὶ ἤγαγον αὐτὸν ἐπὶ τὸ βῆμα  
 3 **13** λέγοντες  
 ὅτι **Παρὰ τὸν νόμον ἀναπείθει οὗτος τοὺς ἀνθρώπους**  
 3 **σέβεσθαι τὸν θεόν.**  
**14** μέλλοντος δὲ τοῦ Παύλου ἀνοίγειν τὸ στόμα  
 2 εἶπεν ὁ Γαλλίων πρὸς τοὺς Ἰουδαίους,  
<sup>Sit</sup> **Εἰ μὲν** <sup>Sit</sup> **ἦν ἀδίκημά τι ἢ ῥαδιούργημα πονηρόν,** <sup>Sit</sup> **ὦ Ἰουδαῖοι,**  
**κατὰ λόγον** **ἂν ἀνεσχόμεν ὑμῶν,**  
**15** <sup>Sit</sup> **εἰ δὲ** <sup>Emb Sit</sup> **ζητήματά ἐστιν** <sup>Split</sup> **περὶ λόγου καὶ ὀνομάτων καὶ νόμου τοῦ καθ'**  
<sup>Sit Split</sup> **ὑμᾶς,**  
 2 **ὄψεσθε αὐτοί·**  
**κριτῆς** **ἐγὼ** <sup>Split</sup> **τούτων** οὐ βούλομαι εἶναι.  
 2 **16** καὶ ἀπῆλσεν αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ βήματος.  
**17** ἐπιλαβόμενοι δὲ πάντες Σωσθένην τὸν ἀρχισυνάγωγον  
 2 ἔτυπον ἔμπροσθεν τοῦ βήματος·  
 καὶ <sup>\* Constit</sup> οὐδὲν <sup>Th+</sup> τούτων <sup>Constit</sup> τῷ Γαλλίῳ **ἔμελεν.** <sup>\*</sup>  
**18** <sup>Top</sup> Ὁ δὲ <sup>Top</sup> Παῦλος ἔτι προσμείνας ἡμέρας ἱκανὰς <sup>\*</sup> τοῖς ἀδελφοῖς  
 ἀποταξάμενος <sup>\*</sup>  
 2 ἐξέπλει εἰς τὴν Συρίαν,  
 4 <sup>R-Dis</sup> καὶ σὺν αὐτῷ Πρίσκιλλα καὶ Ἀκύλας, <sup>R-Dis</sup>

<sup>3</sup> κειράμενος ἐν Κεγχρεαῖς τὴν κεφαλὴν,  
<sup>2</sup> εἶχεν γὰρ εὐχήν.  
<sup>2</sup> **19** κατήντησαν δὲ εἰς Ἔφεσον,  
<sup>Top</sup> κακέϊνους κατέλιπεν αὐτοῦ,  
<sup>Top</sup> αὐτὸς δὲ εἰσελθὼν εἰς τὴν συναγωγὴν  
<sup>2</sup> διελέξατο τοῖς Ἰουδαίοις.  
**20** ἐρωτῶντων δὲ αὐτῶν  
<sup>3</sup> Ἐπι πλείονα χρόνον Emb μείναι  
<sup>2</sup> οὐκ ἐπένευσεν,  
**21** ἀλλὰ ἀποταξάμενος  
καὶ εἰπὼν,  
Πάλιν ἀνακάμψω πρὸς ὑμᾶς  
<sup>3</sup> τοῦ θεοῦ θέλοντος,  
<sup>2</sup> ἀνήχθη ἀπὸ τῆς Ἐφέσου,  
**22** καὶ κατελθὼν εἰς Καισάρειαν,  
ἀναβὰς  
καὶ ἀσπασάμενος τὴν ἐκκλησίαν  
<sup>2</sup> κατέβη εἰς Ἀντιόχειαν.  
**23** καὶ ποιήσας χρόνον τινὰ  
<sup>2</sup> ἐξῆλθεν  
<sup>3</sup> διερχόμενος καθεξῆς τὴν Γαλατικὴν χώραν καὶ Φρυγίαν,  
<sup>3</sup> ἐπιστηρίζων πάντας τοὺς μαθητάς.  
**24** Ἰουδαίος δὲ τις Ἀπολλῶς ὀνόματι, Ἀλεξανδρεὺς τῷ γένει, ἀνὴρ λόγιος, κατήντησεν εἰς  
Ἔφεσον,  
<sup>3</sup> δυνατὸς ὢν Split ἐν ταῖς γραφαῖς. Split  
**25** <sup>Top+</sup> οὗτος ἦν κατηχημένος τὴν ὁδὸν τοῦ κυρίου  
καὶ ζέων τῷ πνεύματι  
<sup>2</sup> ἐλάλει καὶ ἐδίδασκεν ἀκριβῶς τὰ περὶ τοῦ Ἰησοῦ,  
<sup>3</sup> ἐπιστάμενος μόνον τὸ βάπτισμα Ἰωάννου·  
**26** <sup>Top+</sup> οὗτός τε ἤρξατο παρρησιάζεσθαι ἐν τῇ συναγωγῇ.  
ἀκούσαντες δὲ αὐτοῦ Πρίσκιλλα καὶ Ἀκύλας  
<sup>2</sup> προσελάβοντο αὐτὸν  
καὶ ἀκριβέστερον αὐτῷ ἐξέθεντο τὴν ὁδὸν [τοῦ θεοῦ].  
**27** βουλομένου δὲ αὐτοῦ  
<sup>3</sup> διελθεῖν εἰς τὴν Ἀχαΐαν,  
προτρεψάμενοι οἱ ἀδελφοὶ  
<sup>2</sup> ἔγραψαν τοῖς μαθηταῖς  
<sup>3</sup> ἀποδέξασθαι αὐτόν,  
ὃς παραγενόμενος  
<sup>2</sup> συνεβάλετο πολὺ τοῖς πεπιστευκόσιν διὰ τῆς χάριτος·  
**28** εὐτόνως γὰρ τοῖς Ἰουδαίοις διακατηλέγχετο δημοσίᾳ  
<sup>3</sup> ἐπιδεικνὺς διὰ τῶν γραφῶν  
<sup>4</sup> εἶναι τὸν Χριστὸν Ἰησοῦν.  
<sup>2</sup> **19** Ἐγένετο δὲ  
<sup>Sit</sup> ἐν τῷ <sup>Top</sup> τὸν Ἀπολλῶ <sup>Top</sup> εἶναι ἐν Κορίνθῳ <sup>Sit</sup>  
<sup>3</sup> Top+ Παῦλον διελθόντα τὰ ἀνωτερικὰ μέρη  
<sup>4</sup> [κατ]ελθεῖν εἰς Ἔφεσον  
<sup>4</sup> καὶ εὑρεῖν τινὰς μαθητάς  
<sup>2</sup> **2** εἶπέν τε πρὸς αὐτούς,  
<sup>3</sup> Εἰ πνεῦμα ἅγιον ἐλάβετε  
<sup>4</sup> πιστεύσαντες;  
<sup>Art</sup> οἱ δὲ πρὸς αὐτόν,  
Ἄλλ' οὐδ' εἰ πνεῦμα ἅγιον Emb ἔστιν ἠκούσαμεν.  
<sup>2</sup> **3** εἶπέν τε,



Εἰς τί οὖν ἐβαπτίσθητε;

Art οἱ δὲ εἶπαν,

3 Εἰς τὸ <sup>Emb</sup> Ἰωάννου βάπτισμα.

2 4 εἶπεν δὲ Παῦλος,

Top Ἰωάννης ἐβάπτισεν βάπτισμα μετανοίας

3 τῷ λαῷ λέγων

4 εἰς τὸν ἐρχόμενον μετ' αὐτὸν ἵνα πιστεῦσωσιν,

5 <sup>Top+</sup> τοῦτ' ἔστιν εἰς τὸν Ἰησοῦν.

5 ἀκούσαντες δὲ

2 ἐβαπτίσθησαν εἰς τὸ ὄνομα τοῦ κυρίου Ἰησοῦ,

6 καὶ ἐπιθέντος αὐτοῖς τοῦ Παύλου [τάς] χεῖρας

2 ἦλθε τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐπ' αὐτούς,

2 ἐλάλουν τε γλώσσαις

2 καὶ ἐπροφήτευσον.

2 7 ἦσαν δὲ οἱ πάντες ἄνδρες ὡσεὶ δώδεκα.

8 Εἰσελθὼν δὲ εἰς τὴν συναγωγὴν

2 ἐπαρρησιάζετο ἐπὶ μῆνας τρεῖς

3 διαλεγόμενος καὶ πείθων [τὰ] περὶ τῆς βασιλείας τοῦ θεοῦ.

9 Sit ὡς δέ <sup>Top Sit</sup> τινες ἐσκληρύνοντο καὶ ἠπεῖθον

3 κακολογοῦντες τὴν ὁδὸν ἐνώπιον τοῦ πλήθους, Sit

ἀποστάς ἀπ' αὐτῶν

2 ἀφώρισεν τοὺς μαθητὰς

3 καθ' ἡμέραν διαλεγόμενος ἐν τῇ σχολῇ Τυράννου.

10 <sup>Top+</sup> τοῦτο δὲ ἐγένετο ἐπὶ ἔτη δύο,

3 ὥστε <sup>Emb</sup> πάντας τοὺς κατοικοῦντας τὴν Ἀσίαν <sup>Emb</sup> ἀκοῦσαι τὸν λόγον τοῦ κυρίου,

4 <sup>R-Dis</sup> Ἰουδαίους τε καὶ <sup>R-Dis</sup> Ἕλληνας.

11 Δυνάμεις τε οὐ τὰς τυχούσας ὁ θεὸς ἐποίει διὰ τῶν χειρῶν Παύλου,

3 12 ὥστε <sup>L-Dis</sup> καὶ ἐπὶ τοὺς ἀσθενοῦντας <sup>L-Dis</sup>

4 ἀποφέρεσθαι ἀπὸ τοῦ χρωτὸς αὐτοῦ <sup>L-Dis</sup> σουδάρια ἢ σιμικίνθια

4 καὶ ἀπαλλάσσεσθαι ἀπ' αὐτῶν τὰς νόσους,

4 <sup>Top</sup> τὰ τε <sup>Top</sup> πνεύματα τὰ πονηρὰ <sup>Top</sup> ἐκπορεύεσθαι.

2 13 ἐπεχείρησαν δὲ τινες καὶ τῶν περιερχομένων Ἰουδαίων ἑξορκιστῶν

3 ὀνομάζειν ἐπὶ τοὺς ἔχοντας τὰ πνεύματα τὰ πονηρὰ <sup>L-Dis</sup> τὸ ὄνομα τοῦ κυρίου Ἰησοῦ

4 λέγοντες,

2 Ὅρκίζω ὑμᾶς τὸν Ἰησοῦν

3 ὃν Παῦλος κηρύσσει.

2 14 ἦσαν δὲ <sup>Emb</sup> τινος Σκευᾶ Ἰουδαίου ἀρχιερέως <sup>Emb</sup> ἑπτὰ υἱοὶ

3 <sup>Th+</sup> τοῦτο ποιοῦντες.

15 ἀποκριθὲν δὲ τὸ πνεῦμα τὸ πονηρὸν

2 εἶπεν αὐτοῖς,

Top Τὸν [μὲν] <sup>Top</sup> Ἰησοῦν <sup>L-Dis</sup> γινώσκω

καὶ <sup>Top</sup> τὸν Παῦλον <sup>Top</sup> ἐπίσταμαι,

Top ὑμεῖς δὲ τίνες ἐστέ;

16 καὶ ἐφαλόμενος ὁ ἄνθρωπος ἐπ' αὐτούς

3 ἐν ᾧ ἦν τὸ πνεῦμα τὸ πονηρὸν,

κατακυριεύσας ἀμφοτέρων

2 ἴσχυσεν κατ' αὐτῶν

3 ὥστε <sup>L-Dis</sup> γυμνοὺς καὶ τετραυματισμένους ἐκφυγεῖν ἐκ τοῦ οἴκου ἐκείνου.

17 <sup>Top+</sup> τοῦτο δὲ ἐγένετο γνωστὸν πᾶσιν Ἰουδαίοις τε καὶ Ἕλλησιν

3 τοῖς κατοικοῦσιν τὴν Ἔφεσον

2 καὶ ἐπέπεσεν φόβος ἐπὶ πάντας αὐτούς

2 καὶ ἐμεγαλύνετο τὸ ὄνομα τοῦ κυρίου Ἰησοῦ.

18 <sup>Top</sup> πολλοὶ τε <sup>Top</sup> τῶν πεπιστευκῶτων <sup>Top</sup> ἤρχοντο

3 ἑξομολογούμενοι καὶ ἀναγγέλλοντες τὰς πράξεις αὐτῶν.

**19** <sup>Top</sup> ἱκανοὶ δὲ <sup>Top</sup> τῶν <sup>Emb</sup> τὰ περιέργα <sup>Emb</sup> πραξάντων <sup>Top</sup>  
 συνενέγκαντες τὰς βίβλους  
 2 κατέκαιον ἐνώπιον πάντων,  
 2 καὶ συνεψήφισαν τὰς τιμὰς αὐτῶν  
 2 καὶ εὗρον ἀργυρίου <sup>Emb</sup> μυριάδας πέντε.

**20** <sup>Sit</sup> Οὕτως <sup>Emb</sup> κατὰ κράτος τοῦ κυρίου ὁ λόγος ἠῤῥξανεν καὶ ἴσχυεν.

**21** <sup>Sit</sup> Ὡς δὲ <sup>Sit</sup> ἐπληρώθη <sup>Th+</sup> ταῦτα, <sup>Sit</sup>  
 2 ἔθετο ὁ Παῦλος ἐν τῷ πνεύματι  
 3 διελθὼν τὴν Μακεδονίαν καὶ Ἀχαΐαν  
 4 πορεύεσθαι εἰς Ἱεροσόλυμα  
 3 εἰπὼν  
 ὅτι <sup>Sit</sup> Μετὰ τὸ γενέσθαι με ἐκεῖ <sup>Sit</sup>  
 2 δεῖ με <sup>Emb</sup> καὶ Ῥώμην <sup>Emb</sup> ἰδεῖν.

**22** ἀποστείλας δὲ εἰς τὴν Μακεδονίαν <sup>Emb</sup> δύο τῶν διακονούντων αὐτῷ, <sup>App</sup> Τιμόθεον καὶ  
 Ἔραστον, <sup>App</sup>  
<sup>Top</sup> αὐτὸς ἐπέσχεν χρόνον εἰς τὴν Ἀσίαν.

2 **23** Ἐγένετο δὲ κατὰ τὸν καιρὸν ἐκεῖνον <sup>Emb</sup> ταραχος οὐκ ὀλίγος περὶ τῆς ὁδοῦ.

**24** <sup>Emb</sup> <sup>Top</sup> Δημήτριος γάρ <sup>Emb</sup> <sup>Top</sup> τις ὀνόματι, ἀργυροκόπος, <sup>Top</sup>  
 ποιῶν ναοὺς ἀργυροῦς Ἀρτέμιδος  
 2 παρείχετο τοῖς τεχνίταις <sup>Emb</sup> οὐκ ὀλίγην ἐργασίαν.

**25** οὗς συναθροίσας καὶ τοὺς <sup>Th+</sup> περὶ τὰ τοιαῦτα <sup>Th+</sup> ἐργάτας  
 2 εἶπεν,  
 Ἄνδρες, ἐπίστασθε  
 3 ὅτι <sup>Emb</sup> ἐκ ταύτης τῆς ἐργασίας ἡ εὐπορία ἡμῖν ἐστιν  
 2 **26** καὶ θεωρεῖτε καὶ ἀκούετε  
 ὅτι <sup>Sit</sup> οὐ μόνον Ἐφέσου ἀλλὰ σχεδὸν πάσης τῆς Ἀσίας <sup>Sit</sup> <sup>Top+</sup> ὁ Παῦλος οὗτος <sup>Top+</sup> πείσας  
 2 μετέστησεν <sup>Emb</sup> ἱκανὸν ὄχλον  
 3 λέγων  
 ὅτι <sup>Emb</sup> οὐκ εἰσὶν θεοὶ <sup>ThS+</sup> οἱ <sup>Emb</sup> διὰ χειρῶν <sup>Emb</sup> γινόμενοι. <sup>ThS+</sup>

**27** οὐ μόνον δὲ <sup>Emb</sup> τοῦτο <sup>Emb</sup> κινδυνεύει ἡμῖν  
 3 <sup>Top</sup> τὸ μέρος <sup>Top</sup> εἰς ἀπελεγμὸν ἔλθειν  
 ἀλλὰ καὶ <sup>Top</sup> τὸ <sup>Emb</sup> τῆς μεγάλης θεᾶς Ἀρτέμιδος <sup>Emb</sup> ἱερὸν <sup>Top</sup> <sup>Constit</sup> εἰς οὐθὲν <sup>Constit</sup> λογισθῆναι,  
 3 μέλλειν τε καὶ καθαιρεῖσθαι τῆς μεγαλειότητος αὐτῆς  
 4 ἣν <sup>Emb</sup> ὅλη ἡ Ἀσία καὶ ἡ οἰκουμένη <sup>Emb</sup> σέβεται.

**28** Ἀκούσαντες δὲ καὶ γενόμενοι πλήρεις θυμοῦ  
 2 ἔκραζον  
 3 λέγοντες,  
<sup>Emb</sup> Μεγάλη ἡ Ἄρτεμις Ἐφεσίων.

2 **29** καὶ ἐπλήσθη ἡ πόλις τῆς συγχύσεως,  
 2 ὥρμησάν τε ὁμοθυμαδὸν εἰς τὸ θέατρον  
 3 συναρπάσαντες Γάϊον καὶ Ἀρίσταρχον <sup>App</sup> Μακεδόνας, συνεκδήμους Παύλου. <sup>App</sup>

**30** <sup>Top+</sup> Παύλου δὲ βουλομένου εἰσελθεῖν εἰς τὸν δῆμον  
 2 οὐκ εἶων αὐτὸν οἱ μαθηταί·

**31** <sup>Top</sup> τινὲς δὲ <sup>Top</sup> καὶ τῶν Ἀσιαρχῶν, <sup>Top</sup> ὄντες αὐτῷ φίλοι,  
 πέμψαντες πρὸς αὐτὸν  
 2 παρεκάλουν  
 3 μὴ δοῦναι ἑαυτὸν εἰς τὸ θέατρον.

**32** <sup>Top</sup> ἄλλοι μὲν οὖν <sup>Emb</sup> ἄλλο τι <sup>Emb</sup> ἔκραζον·  
 2 ἦν γὰρ ἡ ἐκκλησία συγκεχυμένη  
 καὶ <sup>Top</sup> οἱ πλείους <sup>Top</sup> οὐκ ᾔδεισαν  
 3 τίνας ἕνεκα συνεληλύθεισαν.

**33** <sup>Sit</sup> ἐκ δὲ <sup>Sit</sup> τοῦ ὄχλου <sup>Sit</sup> συνεβίβασαν Ἀλέξανδρον,  
 3 προβαλόντων αὐτὸν τῶν Ἰουδαίων·  
<sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Ἀλέξανδρος κατασείσας τὴν χεῖρα

<sup>2</sup> ἤθελεν ἀπολογεῖσθαι τῷ δήμῳ.  
**34** ἐπιγνόντες δὲ  
<sup>3</sup> ὅτι Ἰουδαῖός ἐστιν,  
 φωνὴ ἐγένετο <sup>Split</sup> μία ἐκ πάντων  
<sup>3</sup> ὡς ἐπὶ ὥρας δύο κραζόντων,  
**Μεγάλη** ἡ Ἄρτεμις Ἐφεσίων.  
**35** καταστείλας δὲ ὁ γραμματεὺς τὸν ὄχλον  
<sup>2</sup> φησίν,  
 Ἄνδρες Ἐφέσιοι, τίς γάρ ἐστιν <sup>Split</sup> ἀνθρώπων  
<sup>2</sup> ὃς οὐ γινώσκει  
<sup>3</sup> <sup>Top</sup> τὴν Ἐφεσίων πόλιν <sup>Top</sup> νεωκόρον οὐσάν <sup>Split</sup> τῆς μεγάλης Ἀρτέμιδος καὶ τοῦ  
 διοπετοῦς; <sup>Split</sup>  
**36** ἀναντιρρήτων οὖν ὄντων <sup>Th+</sup> τούτων  
 δέον ἐστὶν ὑμᾶς <sup>Emb</sup> κατεσταλμένους ὑπάρχειν  
<sup>3</sup> καὶ <sup>Emb</sup> μηδὲν προπετὲς <sup>Emb</sup> πράσσειν.  
<sup>2</sup> **37** ἡγάγετε γὰρ τοὺς ἄνδρας τούτους  
<sup>3</sup> οὔτε ἱεροσύλους  
<sup>3</sup> οὔτε βλασφημοῦντας τὴν θεὸν ἡμῶν.  
**38** <sup>Sit</sup> εἰ μὲν οὖν <sup>Top</sup> <sup>Sit</sup> Δημήτριος καὶ οἱ σὺν αὐτῷ τεχνῖται <sup>Top</sup> ἔχουσι \* πρὸς τινα  
<sup>Emb</sup> λόγον, \* <sup>Sit</sup>  
 ἀγοραῖοι ἄγονται  
 καὶ ἀνθύπατοί εἰσιν,  
<sup>2</sup> ἐγκαλείωσαν ἀλλήλους.  
**39** <sup>Sit</sup> εἰ δέ <sup>Emb</sup> <sup>Sit</sup> τι περαιτέρω <sup>Emb</sup> ἐπιζητεῖτε, <sup>Sit</sup>  
 ἐν τῇ <sup>Emb</sup> ἐννόμῳ ἐκκλησίᾳ ἐπιλυθήσεται.  
<sup>2</sup> **40** καὶ γὰρ κινδυνεύομεν ἐγκαλεῖσθαι στάσεως περὶ τῆς σήμερον,  
<sup>3</sup> <sup>Emb</sup> μηδενὸς αἰτίου ὑπάρχοντος  
<sup>4</sup> περὶ οὗ [οὐ] δυνησόμεθα ἀποδοῦναι λόγον <sup>Th+</sup> περὶ τῆς συστροφῆς ταύτης. <sup>Th+</sup>  
 καὶ <sup>Top+</sup> <sup>T-H</sup> ταῦτα εἰπὼν <sup>T-H</sup>  
<sup>2</sup> ἀπέλυσεν τὴν ἐκκλησίαν.  
**20** <sup>Sit</sup> Μετὰ δὲ <sup>Sit</sup> τὸ παύσασθαι τὸν θόρυβον <sup>Sit</sup>  
 μεταπεμφάμενος ὁ Παῦλος τοὺς μαθητὰς  
 καὶ παρακαλέσας,  
 ἀσπασάμενος  
<sup>2</sup> ἐξῆλθεν πορεύεσθαι εἰς Μακεδονίαν.  
**2** διελθὼν δὲ τὰ μέρη ἐκεῖνα  
 καὶ παρακαλέσας αὐτοὺς λόγῳ πολλῷ  
<sup>2</sup> ἦλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα  
**3** ποιήσας τε μῆνας τρεῖς·  
 γενομένης ἐπιβουλῆς αὐτῷ ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων  
<sup>3</sup> μέλλοντι ἀνάγεσθαι εἰς τὴν Συρίαν,  
<sup>2</sup> ἐγένετο γνώμης  
<sup>3</sup> τοῦ ὑποστρέφειν διὰ Μακεδονίας.  
<sup>2</sup> **4** συνείπετο δὲ αὐτῷ Σώπατρος Πύρρου Βεροιαῖος,  
<sup>3</sup> <sup>Top</sup> Θεσσαλονικέων δὲ Ἀρίσταρχος καὶ Σεκοῦνδος,  
<sup>3</sup> καὶ Γάϊος Δερβαῖος καὶ Τιμόθεος,  
<sup>3</sup> <sup>Top</sup> Ἀσιανοὶ δὲ Τύχικος καὶ Τρόφιμος.  
**5** <sup>Top+</sup> οὗτοι δὲ προελθόντες  
<sup>2</sup> ἕμενον ἡμᾶς ἐν Τρωάδι,  
**6** <sup>Top</sup> ἡμεῖς δὲ ἐξεπλεύσαμεν μετὰ τὰς ἡμέρας τῶν ἀζύμων <sup>Emb</sup> ἀπὸ Φιλίππων  
<sup>2</sup> καὶ ἦλθομεν πρὸς αὐτοὺς εἰς τὴν Τρωάδα <sup>Emb</sup> ἄχρι ἡμερῶν πέντε,  
<sup>2</sup> ὅπου διετρίψαμεν ἡμέρας ἑπτά.  
**7** <sup>Sit</sup> Ἐν δὲ <sup>Sit</sup> τῇ μιᾷ τῶν σαββάτων <sup>Sit</sup> συνηγμένων ἡμῶν  
<sup>3</sup> κλάσαι ἄρτον,

|  |     |            |             |  |  |
|--|-----|------------|-------------|--|--|
|  | Top | ὁ Παῦλος   | Top         | διελέγετο  | αὐτοῖς   |
|  |     | 3          |             | μέλλων   | ἐξιέναι τῇ ἐπαύριον,                           |
|  |     | 2          |             | παρέτεινέν   | τε τὸν λόγον μέχρι μεσονυκτίου.                |
|  |     | 2          | 8           | ἦσαν δὲ λαμπάδες                                   | ἱκαναὶ ἐν τῷ ὑπερώῳ                            |
|  |     | 3          |             | οὗ ἦμεν  | συνηγμένοι.                                    |
|  |     | 9          |             | καθεζόμενος δὲ τις νεανίας                         | ὀνόματι Εὐτυχὸς ἐπὶ τῆς θυρίδος,               |
|  |     |            |             | καταφερόμενος ὑπνω                                 | βαθεῖ  |
|  |     |            |             | διαλεγόμενου τοῦ Παύλου                            | ἐπὶ πλεῖον,                                    |
|  |     |            |             | κατενεχθεὶς ἀπὸ τοῦ ὕπνου                          |  |
|  |     | 2          |             | ἔπεσεν ἀπὸ τοῦ τριστέγου                           | κάτω   |
|  |     | 2          |             | καὶ ἦρθη   | νεκρός.  |
|  |     | 10         |             | καταβάς δὲ ὁ Παῦλος                                |  |
|  |     | 2          |             | ἔπέπεσεν   | αὐτῷ   |
|  |     |            |             | καὶ συμπεριλαβῶν                                   |  |
|  |     | 2          |             | εἶπεν,   |  |
|  |     | 2          |             | Μὴ   | θορυβεῖσθε,                                    |
|  | Top | ἡ γὰρ      | Top         | ψυχὴ   | αὐτοῦ  |
|  |     |            | Top         | ἐν   | αὐτῷ   |
|  |     |            |             | ἐστίν.   |  |
|  |     | 11         |             | ἀναβάς δὲ  |  |
|  |     |            |             | καὶ κλάσας τὸν ἄρτον                               |  |
|  |     |            |             | καὶ γευσάμενος                                     |  |
|  |     |            |             | ἐφ' ἱκανόν   | τε ὁμιλήσας ἄχρι αὐγῆς,                        |
|  |     |            |             | οὕτως  | ἐξῆλθεν.                                       |
|  |     | 2          | 12          | ἤγαγον δὲ τὸν παῖδα                                | ζῶντα  |
|  |     | 2          |             | καὶ παρεκλήθησαν                                   | οὐ μετρίως.                                    |
|  |     | 13         | Top         | Ἡμεῖς  | δὲ προελθόντες ἐπὶ τὸ πλοῖον                   |
|  |     | 2          |             | ἀνήχθημεν ἐπὶ τὴν Ἄσσον                            |  |
|  |     | 3          | Sit         | ἐκεῖθεν μέλλοντες                                  | ἀναλαμβάνειν τὸν Παῦλον·                       |
|  | Sit | οὕτως      | γὰρ         | διατεταγμένους                                     | ἦν   |
|  |     | 3          |             | μέλλων   | αὐτὸς περσεύειν.                               |
|  | 14  | Sit        | ὡς          | δὲ   | Sit  |
|  |     |            |             | συνέβαλλεν ἡμῖν                                    | εἰς τὴν Ἄσσον, Sit                             |
|  |     |            |             | ἀναλαβόντες αὐτὸν                                  |  |
|  |     | 2          |             | ἦλθομεν  | εἰς Μιτυλήνην,                                 |
|  |     | 15         | Sit         | κάκειθεν   | ἀποπλεύσαντες                                  |
|  | Sit | τῇ ἐπιούσῃ | Sit         | κατηντήσαμεν                                       | ἄντικρυς Χίου,                                 |
|  | Sit | τῇ δὲ      | Sit         | ἑτέρᾳ  | παρεβάλομεν εἰς Σάμον,                         |
|  | Sit | τῇ δὲ      | Sit         | ἐχομένῃ  | ἦλθομεν εἰς Μίλητον.                           |
|  | 2   | 16         |             | κεκρίκει γὰρ ὁ Παῦλος                              |  |
|  |     | 4          |             | παραπλευσαι  | τὴν Ἔφεσον,                                    |
|  |     | 3          |             | ὅπως μὴ γένηται                                    | αὐτῷ   |
|  |     | 4          |             | χρονοτριβῆσαι                                      | ἐν τῇ Ἀσίᾳ·                                    |
|  | 2   |            |             | ἔσπευδεν γὰρ                                       |  |
|  |     | 3          |             | εἰ   | δυνατὸν εἶη αὐτῷ                               |
|  |     | 4          |             | τὴν ἡμέραν τῆς πεντηκοστῆς                         | γενέσθαι εἰς Ἱεροσόλυμα.                       |
|  | 17  | Sit        | Ἀπὸ         | δὲ   | Sit  |
|  |     |            | τῆς Μιλήτου | Sit  | πέμψας εἰς Ἔφεσον                              |
|  | 2   |            |             | μετεκαλέσατο τοὺς πρεσβυτέρους                     | τῆς ἐκκλησίας.                                 |
|  | 18  | Sit        | ὡς          | δὲ   | Sit  |
|  |     |            |             | παρεγένοντο  | πρὸς αὐτὸν Sit                                 |
|  | 2   |            |             | εἶπεν αὐτοῖς,                                      |  |
|  | Top | Ἔμεις      |             | ἐπίστασθε,   |  |
|  |     | 3          | Sit         | ἀπὸ  | πρώτης ἡμέρας ἀφ' ἧς ἐπέβην εἰς τὴν Ἀσίαν, Sit |
|  |     | 4          |             | πῶς  | * μεθ' ὑμῶν * τὸν πάντα χρόνον ἐγενόμην,       |
|  |     | 5          | 19          | δουλεύων τῷ κυρίῳ                                  | μετὰ πάσης ταπεινοφροσύνης καὶ δακρύων καὶ     |
|  |     |            |             | πειρασμῶν  |  |
|  |     | 6          |             | τῶν συμβάντων μοι ἐν ταῖς ἐπιβουλαῖς τῶν Ἰουδαίων, |  |
|  | 3   | 20         | ὡς          | Constit  | οὐδὲν ὑπεστειλάμην                             |
|  |     |            |             | Constit Split                                      | τῶν συμφερόντων                                |
|  |     |            |             | Constit Split                                      |  |

- 4 τοῦ μὴ ἀναγγεῖλαι ὑμῖν  
4 καὶ διδάξει ὑμᾶς δημοσίᾳ καὶ κατ' οἴκους,  
5 **21** διαμαρτυρούμενος Ἰουδαίοις τε καὶ Ἑλλήσιν τὴν εἰς θεὸν μετάνοιαν καὶ πίστιν εἰς τὸν κύριον ἡμῶν Ἰησοῦν.
- 22** καὶ νῦν δεδεμένος ἐγὼ τῷ πνεύματι  
2 πορεύομαι εἰς Ἱερουσαλὴμ  
3 τὰ ἐν αὐτῇ συναντήσοντά μοι μὴ εἰδώς,  
4 **23** πλὴν ὅτι τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον κατὰ πόλιν διαμαρτύρεταί μοι  
5 λέγον  
6 ὅτι δεσμὰ καὶ θλίψεις με μένουσιν.
- 24** ἀλλ' οὐδενὸς λόγου ποιῶμαι τὴν ψυχὴν τιμίαν ἐμαυτῷ  
3 ὡς τελειῶσαι τὸν δρόμον μου καὶ τὴν διακονίαν  
5 ἣν ἔλαβον παρὰ τοῦ κυρίου Ἰησοῦ,  
4 διαμαρτύρασθαι τὸ εὐαγγέλιον τῆς χάριτος τοῦ θεοῦ.
- 25** Καὶ νῦν ἐγὼ οἶδα  
3 ὅτι οὐκέτι ὄψεσθε τὸ πρόσωπόν μου ὑμεῖς πάντες  
4 ἐν οἷς διήλθον κηρύσσων τὴν βασιλείαν.  
2 **26** διότι μαρτύρομαι ὑμῖν ἐν τῇ σήμερον ἡμέρᾳ  
3 ὅτι καθαρὸς εἰμι ἀπὸ τοῦ αἵματος πάντων.  
2 **27** οὐ γὰρ ὑπεστειλάμην  
3 τοῦ μὴ ἀναγγεῖλαι πᾶσαν τὴν βουλὴν τοῦ θεοῦ ὑμῖν.  
2 **28** προσέχετε ἑαυτοῖς καὶ παντὶ τῷ ποιμνίῳ,  
3 ἐν ᾧ ὑμᾶς τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον ἔθετο ἐπισκόπους  
4 ποιμαίνειν τὴν ἐκκλησίαν τοῦ θεοῦ,  
5 ἣν περιεποιήσατο διὰ τοῦ αἵματος τοῦ ἰδίου.  
2 **29** ἐγὼ οἶδα  
3 ὅτι εἰσελεύσονται μετὰ τὴν ἄφιξίν μου λύκοι βαρεῖς εἰς ὑμᾶς  
4 μὴ φειδόμενοι τοῦ ποιμνίου,
- 30** καὶ ἐξ ὑμῶν αὐτῶν ἀναστήσονται ἄνδρες  
3 λαλοῦντες διεστραμμένα  
4 τοῦ ἀποσπᾶν τοὺς μαθητὰς ὀπίσω αὐτῶν.  
2 **31** διὸ γρηγορεῖτε  
3 μνημονεύοντες  
4 ὅτι τριετίαν νύκτα καὶ ἡμέραν οὐκ ἐπαυσάμην  
5 μετὰ δακρύων νουθετῶν ἕνα ἕκαστον.
- 32** καὶ τὰ νῦν παρατίθεμαι ὑμᾶς τῷ θεῷ καὶ τῷ λόγῳ τῆς χάριτος αὐτοῦ,  
3 τῷ δυναμένῳ οἰκοδομησαί καὶ δοῦναι τὴν κληρονομίαν ἐν τοῖς ἡγιασμένοις  
ἐμπᾶσιν.
- 33** ἀργυρίου ἢ χρυσοῦ ἢ ἱματισμοῦ οὐδενὸς ἐπεθύμησα·  
**34** αὐτοὶ γινώσκετε  
3 ὅτι ταῖς χρεῖαις μου καὶ τοῖς οὖσιν μετ' ἐμοῦ ὑπηρετήσαν αἱ χεῖρες αὐταί.
- 35** πάντα ὑπέδειξα ὑμῖν  
3 ὅτι οὕτως κοπιῶντας  
4 δεῖ ἀντιλαμβάνεσθαι τῶν ἀσθενούντων,  
5 μνημονεῦειν τε τῶν λόγων τοῦ κυρίου Ἰησοῦ  
6 ὅτι αὐτὸς εἶπεν,  
2 **Μακάριόν ἐστιν**  
3 **μᾶλλον δίδόναι ἢ λαμβάνειν.**
- 36** Καὶ ταῦτα εἰπὼν  
θεῖς τὰ γόνατα αὐτοῦ  
ἐπὶ πάντας αὐτοὺς προσηύξατο.  
**37** ἰκανὸς δὲ κλαυθμὸς ἐγένετο πάντων  
καὶ ἐπιπεσόντες ἐπὶ τὸν τράχηλον τοῦ Παύλου  
2 κατεφίλουν αὐτόν,

<sup>3</sup> **38** ὀδυνώμενοι μάλιστα ἐπὶ τῷ λόγῳ  
<sup>4</sup> ᾧ εἰρήκει,  
<sup>5</sup> ὅτι οὐκέτι μέλλουσιν Emb τὸ πρόσωπον αὐτοῦ Emb θεωρεῖν.  
<sup>2</sup> προέπεμπον δὲ αὐτὸν εἰς τὸ πλοῖον.  
**21** Sit Ὡς δὲ Sit ἐγένετο ἀναχθῆναι ἡμᾶς Sit  
ἀποσπασθέντας ἀπ' αὐτῶν,  
εὐθυδρομήσαντες  
<sup>2</sup> ἤλθομεν εἰς τὴν Κῶ,  
<sup>3</sup> Sit τῇ δὲ Sit ἑξῆς εἰς τὴν Ῥόδον  
<sup>3</sup> Sit κάκειθεν εἰς Πάταρα,  
**2** καὶ εὐρόντες πλοῖον διαπερῶν εἰς Φοινίκην  
ἐπιβάντες  
<sup>2</sup> ἀνήχθημεν.  
**3** ἀναφάναντες δὲ τὴν Κύπρον  
καὶ καταλιπόντες αὐτὴν εὐώνυμον  
<sup>2</sup> ἐπλέομεν εἰς Συρίαν  
<sup>2</sup> καὶ κατήλθομεν εἰς Τύρον  
Sit ἐκεῖσε γὰρ Top τὸ πλοῖον Top ἦν ἀποφορτιζόμενον τὸν γόμον.  
**4** ἀνευρόντες δὲ τοὺς μαθητὰς  
<sup>2</sup> ἐπεμείναμεν αὐτοῦ ἡμέρας ἑπτὰ,  
οἵτινες \*Top τῷ Παύλῳ \*Top ἔλεγον διὰ τοῦ πνεύματος  
<sup>3</sup> μὴ ἐπιβαίνειν εἰς Ἱεροσόλυμα.  
**5** Sit ὅτε δὲ Sit ἐγένετο ἡμᾶς ἑξαρτίσαι τὰς ἡμέρας, Sit  
ἐξεληθόντες  
<sup>2</sup> ἐπορευόμεθα  
<sup>3</sup> προπεμπόντων ἡμᾶς πάντων σὺν γυναίξιν καὶ τέκνοις ἕως ἕξω τῆς πόλεως,  
καὶ θέντες τὰ γόνατα ἐπὶ τὸν αἰγιαλὸν  
προσευξάμενοι  
<sup>2</sup> **6** ἀπησασάμεθα ἀλλήλους  
<sup>2</sup> καὶ ἀνέβημεν εἰς τὸ πλοῖον,  
Top ἐκεῖνοι δὲ ὑπέστρεψαν εἰς τὰ ἴδια.  
**7** Top Ἡμεῖς δὲ \*Top τὸν πλοῦν \*Top διανύσαντες ἀπὸ Τύρου  
<sup>2</sup> κατηντήσαμεν εἰς Πτολεμαῖδα  
καὶ ἀσπασάμενοι τοὺς ἀδελφοὺς  
<sup>2</sup> ἐμείναμεν ἡμέραν μίαν παρ' αὐτοῖς.  
**8** Sit τῇ δὲ Sit ἐπαύριον ἐξεληθόντες  
<sup>2</sup> ἤλθομεν εἰς Καισάρειαν  
καὶ εἰσεληθόντες εἰς τὸν οἶκον Φιλίππου τοῦ εὐαγγελιστοῦ,  
<sup>3</sup> ὄντος ἐκ τῶν ἑπτὰ,  
<sup>2</sup> ἐμείναμεν παρ' αὐτῷ.  
**9** Top+ τούτῳ δὲ ἦσαν θυγατέρες τέσσαρες παρθένοι προφητεύουσαι.  
**10** ἐπιμενόντων δὲ ἡμέρας πλείους  
<sup>2</sup> κατήλθεν τις ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας Split προφήτης ὀνόματι Ἄγαβος, Split  
**11** καὶ ἔλθων πρὸς ἡμᾶς  
καὶ ἄρας τὴν ζώνην τοῦ Παύλου,  
δήσας TopGen ἑαυτοῦ τοὺς πόδας καὶ τὰς χεῖρας  
<sup>2</sup> εἶπεν,  
Cata Táde λέγει τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον,  
Top Τὸν ἄνδρα οὗ ἐστὶν ἡ ζώνη αὕτη, Top οὕτως ThS+ οἱ  
ThS+ Ἰουδαῖοι  
<sup>2</sup> καὶ παραδώσουσιν εἰς χεῖρας ἐθνῶν.  
**12** Sit ὡς δὲ Sit ἠκούσαμεν Th+ ταῦτα, Sit  
<sup>2</sup> παρεκαλοῦμεν ἡμεῖς τε καὶ οἱ ἐντόπιοι  
<sup>3</sup> τοῦ μὴ ἀναβαίνειν αὐτὸν εἰς Ἱερουσαλήμ.

2 **13** τότε ἀπεκρίθη ὁ Παῦλος,  
 Τί ποιεῖτε  
 3 κλαίοντες καὶ συνθρύπτοντές μου τὴν καρδίαν;  
 Top ἐγὼ γὰρ οὐ μόνον δεθῆναι  
 3 ἀλλὰ καὶ ἀποθανεῖν εἰς Ἱερουσαλήμ Incorp ἐτοιμῶς ἔχω ὑπὲρ τοῦ ὀνόματος τοῦ  
 κυρίου Ἰησοῦ.  
**14** μὴ πειθομένου δὲ αὐτοῦ  
 2 ἠσυχάσαμεν  
 3 εἰπόντες,  
 Emb Τοῦ κυρίου Emb τὸ θέλημα γινέσθω.  
**15** Sit Μετὰ δὲ Sit Th+ τὰς ἡμέρας ταύτας Sit Th+ ἐπισκευασάμενοι  
 2 ἀνεβαίνομεν εἰς Ἱεροσόλυμα·  
 2 **16** συνήλθον δὲ καὶ τῶν μαθητῶν ἀπὸ Καισαρείας σὺν ἡμῖν,  
 3 ἄγοντες παρ' ᾧ ξενισθῶμεν  
 4 | R-Dis Μνάσωνί τινι Κυπρίῳ, Emb ἀρχαίῳ μαθητῇ. R-Dis |  
**17** Γενομένων δὲ ἡμῶν εἰς Ἱεροσόλυμα  
 ἀσμένως ἀπεδέξαντο ἡμᾶς οἱ ἀδελφοί.  
**18** Sit τῇ δὲ Sit ἐπιούσῃ εἰσῆει ὁ Παῦλος σὺν ἡμῖν πρὸς Ἰάκωβον,  
 πάντες τε παρεγένοντο Split οἱ πρεσβύτεροι. Split  
**19** καὶ ἀσπασάμενος αὐτοὺς  
 2 ἐξηγήειτο καθ' ἓν ἕκαστον,  
 3 ὧν ἐποίησεν ὁ θεὸς ἐν τοῖς ἔθνεσιν διὰ τῆς διακονίας αὐτοῦ.  
**20** Art οἱ δὲ ἀκούσαντες  
 2 ἐδόξαζον τὸν θεὸν  
 2 εἰπόν τε αὐτῷ,  
 2 Θεωρεῖς, ἀδελφέ,  
 3 πόσαι μυριάδες εἰσὶν ἐν τοῖς Ἰουδαίοις Split τῶν πεπιστευκότων Split  
 2 καὶ Top+ πάντες ζηλωταὶ τοῦ νόμου ὑπάρχουσιν·  
 2 **21** κατηχήθησαν δὲ περὶ σοῦ  
 3 ὅτι ἀποστασίαν διδάσκεις Split ἀπὸ Μωϋσέως Split τοὺς Emb κατὰ τὰ ἔθνη Emb πάντας  
 Ἰουδαίους  
 4 λέγων  
 5 μὴ περιτέμνειν αὐτοὺς τὰ τέκνα  
 5 μηδὲ τοῖς ἔθεσιν περιπατεῖν.  
**22** τί οὖν ἐστίν;  
 πάντως ἀκούσονται  
 3 ὅτι ἐλήλυθας.  
**23** Cata τοῦτο οὖν ποιήσον Split ὅ σοι Emb λέγομεν· Split  
 2 εἰσὶν ἡμῖν ἄνδρες τέσσαρες  
 3 εὐχὴν ἔχοντες ἐφ' ἑαυτῶν.  
**24** Top+ τούτους παραλαβὼν  
 2 ἀγνίσθητι σὺν αὐτοῖς  
 2 καὶ δαπάνησον ἐπ' αὐτοῖς  
 3 ἵνα ξυρήσονται τὴν κεφαλὴν,  
 2 καὶ γνώσονται πάντες  
 3 ὅτι Top ὧν κατήχηγται περὶ σοῦ Top Constit οὐδέν ἐστίν  
 4 ἀλλὰ στοιχεῖς καὶ αὐτὸς  
 5 φυλάσσω τὸν νόμον.  
**25** Top περὶ δὲ Top τῶν πεπιστευκότων ἔθνῶν Top  
 Top ἡμεῖς ἐπεστείλαμεν  
 4 κρίναντες  
 3 φυλάσσεσθαι αὐτοὺς τό τε εἰδωλόθυτον καὶ αἷμα καὶ πνικτὸν καὶ πορνείαν.  
**26** τότε Top ὁ Παῦλος Top παραλαβὼν τοὺς ἄνδρας τῇ ἐχομένῃ ἡμέρᾳ  
 σὺν αὐτοῖς ἀγνισθεῖς,



2 εἰσῆει εἰς τὸ ἱερόν  
 3 διαγγέλλων τὴν ἐκπλήρωσιν τῶν ἡμερῶν τοῦ ἀγνισμοῦ  
 4 ἕως οὗ προσηνέχθη ὑπὲρ ἑνὸς ἐκάστου αὐτῶν ἢ προσφροά.

**27** Sit Ὡς δὲ Sit ἔμελλον αἱ ἑπτὰ ἡμέραι συντελεῖσθαι, Sit  
Top οἱ Emb ἀπὸ τῆς Ἀσίας Emb Ἰουδαῖοι Top θεασάμενοι αὐτὸν ἐν τῷ ἱερῷ  
 2 συνέχεον πάντα τὸν ὄχλον  
 2 καὶ ἐπέβαλον ἐπ' αὐτὸν τὰς χεῖρας  
 3 **28** κράζοντες,  
 Ἄνδρες Ἰσραηλίται, βοηθεῖτε·  
Top+ οὗτός ἐστιν ὁ ἄνθρωπος  
 3 ὁ κατὰ τοῦ λαοῦ καὶ τοῦ νόμου καὶ τοῦ τόπου τούτου πάντας πανταχῆ διδάσκων,  
 ἔτι τε καὶ Ἕλληνας εἰσήγαγεν εἰς τὸ ἱερόν  
 2 καὶ κεκοίνωκεν τὸν ἅγιον τόπον τούτον.  
 2 **29** ἦσαν γὰρ προεωρακότες Τρόφιμον τὸν Ἐφέσιον ἐν τῇ πόλει σὺν αὐτῷ.  
 2 ὃν ἐνόμιζον  
 3 ὅτι εἰς τὸ ἱερόν εἰσήγαγεν ὁ Παῦλος.  
 2 **30** ἐκινήθη τε ἡ πόλις ἅλη  
 2 καὶ ἐγένετο συνδρομὴ τοῦ λαοῦ,  
 καὶ ἐπιλαβόμενοι τοῦ Παύλου  
 2 εἵλκον αὐτὸν ἔξω τοῦ ἱεροῦ  
 καὶ εὐθέως ἐκλείσθησαν αἱ θύραι.  
**31** ζητούντων τε  
 3 αὐτὸν ἀποκτείνειν.  
 2 ἀνέβη φάσις τῷ χιλιάρχῳ τῆς σπείρης  
 3 ὅτι ἅλη συγχύννεται Ἰερουσαλήμ.

**32** ὃς ἔξαυτῆς παραλαβὼν στρατιώτας καὶ ἑκατοντάρχας  
 2 κατέδραμεν ἐπ' αὐτούς,  
Art οἱ δὲ ἰδόντες τὸν χιλιάρχον καὶ τοὺς στρατιώτας  
 2 ἐπαύσαντο τύπτοντες τὸν Παῦλον.  
**33** τότε ἐγγίσας ὁ χιλιάρχος  
 2 ἐπελάβετο αὐτοῦ  
 2 καὶ ἐκέλευσεν δεθῆναι ἀλύσει δυοί,  
 2 καὶ ἐπυνθάνετο  
 3 τίς εἶη  
 3 καὶ τί ἐστὶν πεποιηκώς.

**34** Top ἄλλοι δὲ ἄλλο τι ἐπεφώνουν ἐν τῷ ὄχλῳ.  
 μὴ δυναμένου δὲ αὐτοῦ  
 3 γνῶναι τὸ ἀσφαλὲς διὰ τὸν θόρυβον  
 2 ἐκέλευσεν ἄγεσθαι αὐτὸν εἰς τὴν παρεμβολήν.

**35** Sit ὅτε δὲ Sit ἐγένετο ἐπὶ τοὺς ἀναβαθμούς, Sit  
 2 συνέβη  
 3 βαστάζεσθαι αὐτὸν ὑπὸ τῶν στρατιωτῶν διὰ τὴν βίαν τοῦ ὄχλου.  
 2 **36** ἠκολούθει γὰρ τὸ πλῆθος τοῦ λαοῦ  
 3 κράζοντες,  
 2 Αἶρε αὐτόν.  
**37** Μέλλων τε εἰσάγεσθαι εἰς τὴν παρεμβολήν ThS+ ὁ Παῦλος ThS+  
 2 λέγει τῷ χιλιάρχῳ,  
 Εἰ ἔξεστίν μοι  
 2 εἰπεῖν τι πρὸς σέ;  
Art ὁ δὲ ἔφη,  
Ἐλληνιστὶ γινώσκεις;  
**38** οὐκ ἄρα Top σὺ εἶ ὁ Αἰγύπτιος  
 3 ὁ Top πρὸ τούτων τῶν ἡμερῶν Top ἀναστατώσας  
 4 καὶ ἔξαγαγὼν εἰς τὴν ἔρημον τοὺς τετρακισχιλίους ἄνδρας τῶν σικαρίων;

|             |     |  |
|-------------|-----|--|
| 2           | 39  | εἶπεν δὲ ὁ Παῦλος,   |
| Top         | 2   | Ἐγὼ ἄνθρωπος μὲν εἰμι Ἰουδαῖος, Ταρσεὺς τῆς Κιλικίας, Split                |
|             | 3   | Emb οὐκ ἀσήμου πόλεως Emb πολίτης·   |
| 2           |     | δέομαι δέ σου,   |
| 2           |     | ἐπίτρεψόν μοι  |
| 3           |     | λαλήσαι πρὸς τὸν λαόν.   |
| 40          |     | ἐπιτρέψαντος δὲ αὐτοῦ  |
| Top         | 2   | ὁ Παῦλος ἐστῶς ἐπὶ τῶν ἀναβαθμῶν   |
| 2           |     | κατέσεισεν τῇ χειρὶ τῷ λαῷ.  |
| πολλῆς      | 2   | δὲ σιγῆς γενομένης   |
| 2           |     | προσεφώνησεν τῇ Ἑβραΐδι διαλέκτῳ   |
| 3           |     | λέγων,   |
| 22          |     | Ἄνδρες ἀδελφοὶ καὶ πατέρες, ἀκούσατέ μου τῆς πρὸς ὑμᾶς νυνὶ Emb ἀπολογίας. |
| 2           |     | ἀκούσαντες δὲ  |
| 3           |     | ὅτι τῇ Ἑβραΐδι διαλέκτῳ προσεφώνει αὐτοῖς,                                 |
| μᾶλλον      | 2   | παρέσχον ἡσυχίαν. Split  |
| 2           |     | καὶ φησίν,   |
| 3           | Top | Ἐγὼ εἰμι ἀνὴρ Ἰουδαῖος,  |
| 3           |     | γεγεννημένος ἐν Ταρσῷ τῆς Κιλικίας,  |
| 3           |     | ἀνατεθραμμένος δὲ ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, παρὰ τοὺς πόδας Γαμαλιήλ·             |
| 3           |     | πεπαιδευμένος κατὰ ἀκρίβειαν τοῦ πατρῶου νόμου, Emb                        |
| 3           |     | ζηλωτῆς ὑπάρχων τοῦ θεοῦ Split Split                                       |
| 4           |     | καθὼς πάντες ὑμεῖς ἐστε σήμερον·   |
| 4           |     | ὅς ταύτην τὴν ὁδὸν ἐδίωξα ἄχρι θανάτου                                     |
| 3           |     | δεσμεύων καὶ παραδιδούς εἰς φυλακὰς ἀνδρας τε καὶ γυναῖκας,                |
| 4           |     | 5 ὡς καὶ ὁ ἀρχιερεὺς μαρτυρεῖ μοι Split καὶ πᾶν τὸ πρεσβυτέριον, Split     |
| παρ' ὧν     | 2   | καὶ ἐπιστολὰς δεξιόμενος πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς εἰς Δαμασκὸν                   |
| 2           |     | ἐπορευόμην,  |
| 3           |     | ἄξων καὶ τοὺς ἐκεῖσε ὄντας Emb   |
| 4           |     | δεδεμένους εἰς Ἱερουσαλήμ  |
| 5           |     | ἵνα τιμωρηθῶσιν.   |
| 2           | 6   | Ἐγένετο δέ μοι   |
| πορευομένων | 3   | καὶ ἐγγίζοντι τῇ Δαμασκῷ περὶ μεσημβρίαν                                   |
| 3           |     | ἐξαίφνης ἐκ τοῦ οὐρανοῦ περιεστράψαι φῶς ἰκανὸν περὶ ἐμέ, Sit Sit          |
| 2           | 7   | ἔπεσά τε εἰς τὸ ἔδαφος   |
| 2           |     | καὶ ἤκουσα φωνῆς   |
| 3           |     | λεγούσης μοι,  |
| Σαοὺλ       | 2   | Σαοὺλ, τί με διώκεις; Emb  |
| 8           | Top | ἐγὼ δὲ ἀπεκρίθην,  |
| Τίς         | 2   | εἶ, κύριε;   |
| 2           |     | εἰπέν τε πρὸς με,  |
| Top         | 2   | Ἐγὼ εἰμι Ἰησοῦς ὁ Ναζωραῖος,   |
| 3           |     | ὃν σὺ διώκεις. *   |
| 9           | Top | οἱ δὲ ἐμὲ ὄντες τὸ μὲν φῶς ἐθεάσαντο Emb Top                               |
| τὴν         | 2   | δὲ φωνὴν οὐκ ἤκουσαν Split τοῦ λαλοῦντός μοι. Split                        |
| 2           | 10  | εἶπον δέ,  |
| Τί          | 2   | ποιήσω, κύριε;   |
| Top         | 2   | ὁ δὲ κύριος εἶπεν πρὸς με, Top   |
| Ἄναστās     | 2   | πορεύου εἰς Δαμασκὸν   |
| Top         | 2   | κακεῖ σοι λαληθήσεται περὶ πάντων Top                                      |
| 3           |     | ὧν τέτακταί σοι  |
| 4           |     | ποιήσαι.   |
| 11          | Sit | ὡς δὲ οὐκ ἐνέβλεπον ἀπὸ τῆς δόξης τοῦ φωτὸς ἐκείνου, Sit                   |



Εἰ ἄνθρωπον Ῥωμαῖον καὶ ἀκατάκριτον ἔξεστιν ὑμῖν μαστίζειν;

**26** ἀκούσας δὲ ὁ ἑκατοντάρχης

προσελθὼν τῷ χιλιάρχῳ

<sup>2</sup> ἀπήγγειλεν

<sup>3</sup> λέγων,

Τί μέλλεις ποιεῖν;

<sup>Top+</sup> ὁ γὰρ <sup>Top+</sup> ἄνθρωπος οὗτος <sup>Top+</sup> Ῥωμαῖός ἐστιν.

**27** προσελθὼν δὲ ὁ χιλιάρχος

<sup>2</sup> εἶπεν αὐτῷ,

<sup>2</sup> Λέγε μοι,

<sup>Top</sup> σὺ Ῥωμαῖός εἶ;

<sup>Art</sup> ὁ δὲ ἔφη,

<sup>2</sup> Ναί.

**28** ἀπεκρίθη δὲ ὁ χιλιάρχος,

<sup>Top</sup> Ἐγὼ πολλοῦ κεφαλαίου <sup>Th+</sup> τὴν πολιτείαν ταύτην <sup>Th+</sup> ἐκτησάμην.

<sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Παῦλος ἔφη,

<sup>Top</sup> Ἐγὼ δὲ καὶ γεγέννημαι.

**29** εὐθέως οὖν ἀπέστησαν ἀπ' αὐτοῦ οἱ μέλλοντες αὐτὸν <sup>Emb</sup> ἀνετάζειν,

καὶ <sup>Top</sup> ὁ χιλιάρχος <sup>Top</sup> δὲ ἐφοβήθη

<sup>3</sup> ἐπιγνοὺς

<sup>4</sup> ὅτι Ῥωμαῖός ἐστιν

<sup>4</sup> καὶ ὅτι <sup>Top</sup> αὐτὸν ἦν δεδεκώς.

**30** <sup>Sit</sup> Τῆ δὲ <sup>Sit</sup> ἐπαύριον βουλόμενος γνῶναι τὸ ἀσφαλές,

<sup>3</sup> τὸ τί κατηγορεῖται ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων,

<sup>2</sup> ἔλυσεν αὐτὸν

<sup>2</sup> καὶ ἐκέλευσεν συνελθεῖν τοὺς ἀρχιερεῖς καὶ πᾶν τὸ συνέδριον,

καὶ καταγαγὼν τὸν Παῦλον

<sup>2</sup> ἔστησεν εἰς αὐτούς.

**23** ἀτενίσας δὲ ὁ Παῦλος τῷ συνεδρίῳ

<sup>2</sup> εἶπεν,

Ἄνδρες ἀδελφοί, <sup>Top</sup> ἐγὼ πάσῃ συνειδήσει ἀγαθῇ πεπολίτευμαι τῷ θεῷ ἄχρι ταύτης τῆς ἡμέρας.

**2** <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> ἀρχιερεὺς Ἀνανίας <sup>Top</sup> ἐπέταξεν τοῖς παρεστώσιν αὐτῷ

<sup>3</sup> τύπτειν <sup>TopGen</sup> αὐτοῦ τὸ στόμα.

**3** τότε <sup>Top</sup> ὁ Παῦλος <sup>Top</sup> \* πρὸς αὐτὸν \* εἶπεν,

Τύπτειν σε μέλλει ὁ θεός, τοῖχε κεκονιαμένε·

καὶ <sup>Top</sup> σὺ κάθη κρίνων με κατὰ τὸν νόμον

καὶ <sup>Top</sup> παρανομῶν κελεύεις

<sup>3</sup> με τύπτεσθαι;

**4** <sup>Top</sup> οἱ δὲ <sup>Top</sup> παρεστώτες εἶπαν,

Τὸν ἀρχιερέα τοῦ θεοῦ λοιδορεῖς;

<sup>2</sup> **5** ἔφη τε ὁ Παῦλος,

<sup>2</sup> Οὐκ ἤδειν, ἀδελφοί,

<sup>3</sup> ὅτι ἐστὶν ἀρχιερεὺς·

<sup>2</sup> γέγραπται γὰρ

<sup>3</sup> ὅτι Ἄρχοντα τοῦ λαοῦ σου οὐκ ἐρεῖς κακῶς.

**6** Γνοὺς δὲ ὁ Παῦλος

<sup>3</sup> ὅτι <sup>Top</sup> τὸ ἐν μέρος <sup>Top</sup> ἐστὶν Σαδδουκαίων

<sup>4</sup> <sup>Top</sup> τὸ δὲ <sup>Top</sup> ἕτερον Φαρισαίων

<sup>2</sup> ἔκραζεν ἐν τῷ συνεδρίῳ,

Ἄνδρες ἀδελφοί, <sup>Top</sup> ἐγὼ Φαρισαῖός εἰμι, <sup>R-Dis</sup> υἱὸς Φαρισαίων, <sup>R-Dis</sup>

περὶ ἐλπίδος καὶ ἀναστάσεως νεκρῶν [ἐγὼ] κρίνομαι.

**7** <sup>Top+ T-H</sup> τοῦτο δὲ <sup>T-H</sup> αὐτοῦ <sup>Emb</sup> εἰπόντος <sup>T-H</sup>

<sup>2</sup> ἐγένετο στάσις τῶν Φαρισαίων καὶ Σαδδουκαίων

2 καὶ ἐσχίσθη τὸ πλῆθος.  
**8** <sup>Top</sup> Σαδδουκαῖοι μὲν γὰρ λέγουσιν  
 3 μὴ εἶναι ἀνάστασιν μήτε ἄγγελον μήτε πνεῦμα,  
<sup>Top</sup> Φαρισαῖοι δὲ ὁμολογοῦσιν τὰ ἀμφότερα.  
 2 **9** ἐγένετο δὲ κραυγὴ μεγάλη,  
 καὶ ἀναστάντες τινὲς τῶν γραμματέων τοῦ μέρους τῶν Φαρισαίων  
 2 διεμάχοντο  
 3 λέγοντες,  
 Constit **Οὐδὲν κακὸν** Constit εὐρίσκομεν <sup>Th+</sup> ἐν τῷ ἀνθρώπῳ τούτῳ· <sup>Th+</sup>  
 εἰ δὲ **πνεῦμα** ἐλάλησεν αὐτῷ <sup>Split</sup> ἢ ἄγγελος; <sup>Split</sup>  
**10** **Πολλῆς** δὲ γινομένης <sup>Split</sup> στάσεως  
 φοβηθεὶς ὁ χιλιάρχος  
 3 μὴ διασπασθῆ ὁ Παῦλος ὑπ' αὐτῶν  
 2 ἐκέλευσεν τὸ σπράτευμα  
 3 καταβὰν  
 4 ἄρπάσαι αὐτὸν ἐκ μέσου αὐτῶν  
 4 ἄγειν τε εἰς τὴν παρεμβολήν.  
**11** <sup>Sit</sup> Τῇ δὲ <sup>Sit</sup> ἐπιούσῃ νυκτὶ <sup>Sit</sup> ἐπιστάς αὐτῷ ὁ κύριος  
 2 εἶπεν,  
 2 **Θάρσει·**  
 L-Dis <sup>Sit</sup> ὡς γὰρ L-Dis <sup>Sit</sup> διεμαρτύρω τὰ περὶ ἐμοῦ εἰς Ἱερουσαλήμ, L-Dis <sup>Sit</sup>  
<sup>Sit</sup> οὕτω <sup>Top</sup> σε δεῖ **καὶ εἰς Ῥώμην** <sup>Emb</sup> μαρτυρῆσαι.  
**12** Γενομένης δὲ ἡμέρας  
 ποιήσαντες συστροφὴν <sup>ThS+</sup> οἱ Ἰουδαῖοι <sup>ThS+</sup>  
 2 ἀνεθεμάτισαν ἑαυτοὺς  
 3 λέγοντες  
 4 μήτε φαγεῖν μήτε πιεῖν  
 5 ἕως οὗ ἀποκτείνωσιν τὸν Παῦλον.  
 2 **13** ἦσαν δὲ πλείους τεσσαεράκοντα <sup>ThS+</sup> οἱ <sup>Th+</sup> ταύτην τὴν συνωμοσίαν <sup>Th+</sup> ποιησάμενοι, <sup>ThS+</sup>  
**14** οἵτινες προσελθόντες τοῖς ἀρχιερεῦσιν καὶ τοῖς πρεσβυτέροις  
 2 εἶπαν,  
**Ἀναθέματι ἀνεθεματίσαμεν** ἑαυτοὺς  
 3 **μηδενὸς** γεύσασθαι  
 4 ἕως οὗ ἀποκτείνωμεν τὸν Παῦλον.  
**15** <sup>Sit</sup> νῦν οὖν <sup>Top</sup> ὑμεῖς ἐμφανίσατε τῷ χιλιάρχῳ σὺν τῷ συνεδρίῳ  
 3 ὅπως καταγάγῃ αὐτὸν εἰς ὑμᾶς  
 4 ὡς μέλλοντας διαγιγνώσκειν ἀκριβέστερον τὰ περὶ αὐτοῦ·  
<sup>Top</sup> ἡμεῖς δὲ **πρὸ τοῦ ἐγγίσει αὐτὸν** **ἔτοιμοί** ἔσμεν  
 3 τοῦ ἀνελεῖν αὐτόν.  
**16** Ἀκούσας δὲ ὁ υἱὸς τῆς ἀδελφῆς Παύλου τὴν ἐνέδραν,  
 παραγενόμενος  
 καὶ εἰσελθὼν εἰς τὴν παρεμβολήν  
 2 ἀπήγγειλεν τῷ Παύλῳ.  
**17** προσκαλεσάμενος δὲ ὁ Παῦλος ἓνα τῶν ἑκατονταρχῶν  
 2 ἔφη,  
**Τὸν νεανίαν τούτον** ἀπάγαγε πρὸς τὸν χιλιάρχον,  
 2 ἔχει γὰρ ἀπαγγεῖλαί τι αὐτῷ.  
**18** <sup>Art</sup> ὁ μὲν οὖν παραλαβὼν αὐτὸν  
 2 ἤγαγεν πρὸς τὸν χιλιάρχον  
 2 καὶ **φησίν,**  
<sup>Top</sup> Ὁ δέσμιος Παῦλος <sup>Top</sup> προσκαλεσάμενός με  
 2 ἠρώτησεν  
 3 **τούτον τὸν νεανίσκον** ἀγαγεῖν πρὸς σέ  
 4 ἔχοντά τι

- 5 λαλήσαι σοι.  
**19** ἐπιλαβόμενος δὲ τῆς χειρὸς αὐτοῦ <sup>ThS+</sup> ὁ χιλιάρχος <sup>ThS+</sup>  
καὶ ἀναχωρήσας κατ' ἰδίαν  
2 ἐπυνθάνετο,  
**Τί ἐστίν**  
3 ὃ ἔχεις ἀπαγγεῖλαί μοι;  
2 **20** εἶπεν δὲ  
ὅτι <sup>Top</sup> **Οἱ Ἰουδαῖοι** <sup>Top</sup> συνέθεντο  
3 τοῦ ἐρωτήσαι σε  
4 ὅπως <sup>Sit</sup> αὐρίον **τὸν Παῦλον** καταγάγῃς εἰς τὸ συνέδριον  
5 ὡς μέλλον **τι ἀκριβέστερον** <sup>Emb</sup> πυνθάνεσθαι περὶ αὐτοῦ.  
**21** <sup>Top</sup> σὺ οὖν μὴ πεισθῆς αὐτοῖς·  
2 ἐνεδρεύουσιν γὰρ αὐτὸν ἐξ αὐτῶν **ἄνδρες πλείους τεσσεράκοντα,** <sup>Emb</sup>  
3 οἵτινες ἀνεθεμάτισαν ἑαυτοὺς  
4 μῆτε φαγεῖν μῆτε πιεῖν  
5 ἕως οὗ ἀνέλωσιν αὐτόν,  
καὶ <sup>Sit</sup> **νῦν** εἰσιν ἔτοιμοι  
3 προσδεχόμενοι τὴν ἀπὸ σοῦ ἐπαγγελίαν.  
**22** <sup>Top</sup> **ὁ** μὲν οὖν <sup>Top</sup> **χιλιάρχος** ἀπέλυσε τὸν νεανίσκον  
3 παραγγείλας  
4 <sup>Constit</sup> μηδενὶ ἐκλαλῆσαι  
5 ὅτι <sup>Top+</sup> **ταῦτα** ἐνεφάνισας πρὸς με.  
**23** Καὶ προσκαλεσάμενος δύο [τινάς] τῶν ἑκατονταρχῶν  
2 εἶπεν,  
2 Ἔτοιμάσατε στρατιώτας διακοσίους,  
4 ὅπως πορευθῶσιν ἕως Καισαρείας,  
3 καὶ ἵππεις ἑβδομήκοντα καὶ δεξιολάβους διακοσίους  
4 ἀπὸ τρίτης ὥρας τῆς νυκτός,  
3 **24** **κτῆνη** τε παραστήσαι  
4 ἵνα ἐπιβιβάσαντες τὸν Παῦλον  
5 διασώσωσι πρὸς Φήλικα τὸν ἡγεμόνα,  
3 **25** γράψας ἐπιστολὴν  
4 ἔχουσαν <sup>Cata</sup> **τὸν τύπον τοῦτον·** <sup>Cata</sup>  
**26** Κλαύδιος Λυσίας τῷ κρατίστῳ ἡγεμόνι Φήλικι χαίρειν.  
**27** <sup>Top+</sup> **Τὸν ἄνδρα τοῦτον** <sup>Top+</sup> συλλημφθέντα ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων  
καὶ μέλλοντα ἀναιρεῖσθαι ὑπ' αὐτῶν  
ἐπιστὰς σὺν τῷ στρατεύματι  
2 ἐξειλάμην  
3 μαθὼν  
4 ὅτι **Ῥωμαῖός** ἐστίν.  
**28** βουλόμενός τε ἐπιγνῶναι τὴν αἰτίαν  
3 δι' ἣν ἐνεκάλουν αὐτῷ,  
2 κατήγαγον εἰς τὸ συνέδριον αὐτῶν  
2 **29** ὃν εὔρον ἐγκαλούμενον περὶ ζητημάτων τοῦ νόμου αὐτῶν,  
**μηδὲν** δὲ **ἄξιον θανάτου ἢ δεσμῶν** ἔχοντα <sup>Split</sup> **ἔγκλημα.**  
**30** μηνυθείσης δέ μοι  
3 **ἐπιβουλῆς** εἰς τὸν **ἄνδρα** ἔσεσθαι  
ἐξαυτῆς ἔπεμψα πρὸς σέ  
3 παραγγείλας καὶ τοῖς κατηγοροῖς  
4 λέγειν [τά] πρὸς αὐτὸν ἐπὶ σοῦ.  
**31** <sup>Top</sup> **Οἱ** μὲν οὖν <sup>Top</sup> στρατιῶται <sup>\*Sit</sup> κατὰ τὸ διατεταγμένον αὐτοῖς <sup>\*Sit</sup> ἀναλαβόντες τὸν  
**Παῦλον**  
2 ἤγαγον διὰ νυκτός **εἰς τὴν Ἀντιπατρίδα,**  
**32** <sup>Sit</sup> τῇ δὲ <sup>Sit</sup> ἐπαύριον ἔασαντες τοὺς ἵππεις

3 ἀπέρχεσθαι σὺν αὐτῷ  
 2 ὑπέστρεψαν εἰς τὴν παρεμβολήν·  
**33** οἵτινες εἰσελθόντες εἰς τὴν Καισάρειαν  
 καὶ ἀναδόντες τὴν ἐπιστολὴν τῷ ἡγεμόνι·  
 2 παρέστησαν καὶ τὸν Παῦλον <sup>Th+</sup> αὐτῷ.  
**34** ἀναγνοὺς δὲ  
 καὶ ἐπερωτήσας  
 3 ἐκ ποίας ἐπαρχείας ἐστίν,  
 καὶ πυθόμενος  
 3 ὅτι ἀπὸ Κιλικίας,  
 2 **35** Διακούσομαί σου,  
 2 ἔφη,  
 3 ὅταν \* Emb καὶ οἱ κατήγοροί σου Emb παραγένωνται· \*  
 3 κελεύσας  
 4 ἐν τῷ πραιτωρίῳ τοῦ Ἡρώδου φυλάσσεσθαι αὐτόν.  
**24** <sup>Sit</sup> Μετὰ δὲ <sup>Sit</sup> πέντε ἡμέρας <sup>Sit</sup> κατέβη ὁ ἀρχιερεὺς Ἀνανίας μετὰ πρεσβυτέρων τινῶν καὶ  
 ῥήτορος Τερτύλλου τινός,  
 2 οἵτινες ἐνεφάνισαν τῷ ἡγεμόνι κατὰ τοῦ Παύλου.  
**2** κληθέντος δὲ αὐτοῦ  
 2 ἤρξατο κατηγορεῖν <sup>ThS+</sup> ὁ Τέρτυλλος <sup>ThS+</sup>  
 3 λέγων,  
 Πολλῆς εἰρήνης τυγχάνοντες διὰ σοῦ  
 καὶ διορθωμάτων γινομένων <sup>Th+</sup> τῷ ἔθνει τούτῳ <sup>Th+</sup> διὰ τῆς σῆς προνοίας,  
**3** πάντη τε καὶ πανταχοῦ ἀποδεχόμεθα, κράτιστε Φῆλιξ, μετὰ πάσης εὐχαριστίας.  
**4** <sup>Sit</sup> ἵνα δὲ <sup>Sit</sup> μὴ Emb ἐπὶ πλείον Emb σε ἐγκόπτω, <sup>Sit</sup>  
 2 παρακαλῶ ἀκοῦσαί σε ἡμῶν συντόμως τῇ σῇ ἐπιεικειᾷ.  
**5** εὐρόντες γὰρ <sup>Th+</sup> τὸν ἄνδρα τοῦτον <sup>Th+</sup> λοιμὸν  
 3 καὶ κινούντα στάσεις πᾶσιν τοῖς Ἰουδαίοις τοῖς κατὰ τὴν οἰκουμένην  
 3 πρωτοστάτην τε τῆς Emb τῶν Ναζωραίων Emb αἰρέσεως,  
**6** ὅς καὶ τὸ ἱερὸν ἐπέειρασεν βεβηλῶσαι  
 2 ὃν καὶ ἐκρατήσαμεν,  
 2 **8** παρ' οὗ δυνήσῃ αὐτὸς  
 3 ἀνακρίνας <sup>Th+</sup> περὶ πάντων τούτων <sup>Th+</sup>  
 4 ἐπιγνῶναι  
 5 ὧν <sup>Top</sup> ἡμεῖς κατηγοροῦμεν αὐτοῦ.  
 2 **9** συνεπέθεντο δὲ καὶ οἱ Ἰουδαῖοι  
 3 φάσκοντες  
 4 <sup>Top+</sup> ταῦτα οὕτως ἔχειν.  
 2 **10** Ἀπεκρίθη τε ὁ Παῦλος  
 3 νεύσαντος αὐτῷ τοῦ ἡγεμόνος  
 4 λέγειν,  
 Emb Ἐκ πολλῶν ἐτῶν Emb ὄντα σε κριτὴν <sup>Th+</sup> τῷ ἔθνει τούτῳ <sup>Th+</sup> ἐπιστάμενος  
 εὐθύμως τὰ περὶ ἑμαυτοῦ ἀπολογοῦμαι,  
 3 **11** δυναμένου σου  
 4 ἐπιγνῶναι  
 5 ὅτι οὐ πλείους εἰσὶν μοι <sup>Split</sup> ἡμέραι δώδεκα <sup>Split</sup>  
 6 ἀφ' ἧς ἀνέβην προσκυνήσων εἰς Ἱερουσαλήμ.  
**12** καὶ οὔτε ἐν τῷ ἱερῷ εὐρόν με  
 4 πρὸς τινα διαλεγόμενον  
 4 ἢ ἐπίστασιν ποιούντα ὄχλου <sup>Split</sup> οὔτε ἐν ταῖς συναγωγαῖς οὔτε κατὰ τὴν  
 πόλιν, <sup>Split</sup>  
**13** οὐδὲ παραστήσαι δύνανταί σοι  
 3 περὶ ὧν <sup>Sit</sup> νυνὶ κατηγοροῦσίν μου.  
 2 **14** ὁμολογῶ δὲ <sup>Cata</sup> τοῦτό σοι



|     |         |       |   |         |                                  |                                      |
|-----|---------|-------|---|---------|----------------------------------|--------------------------------------|
| 3   | ὅτι     | L-Dis | κατὰ τὴν ὁδὸν ἦν λέγουσιν αἴρεσιν,  | L-Dis   | οὕτως                            | λατρεύω τῷ πατρώῳ θεῷ                |
| 4   |         |       | πιστεύων πᾶσι τοῖς κατὰ τὸν νόμον   |         |                                  |                                      |
| 5   |         |       | καὶ τοῖς  | Emb     | ἐν τοῖς προφήταις                | Emb                                  |
| 4   | 15      |       | ἐλπίδα  |         | ἔχων εἰς τὸν θεὸν                |                                      |
| 6   |         |       | ἦν καὶ αὐτοὶ οὗτοι  |         | προσδέχονται,                    |                                      |
| 5   |         |       | ἀνάστασιν   |         | μέλλειν ἔσεσθαι                  | Split                                |
|     |         |       |   |         | δικαίων τε καὶ ἀδίκων.           | Split                                |
| 16  | Sit Th+ |       | ἐν τούτῳ  | Sit Th+ | Top                              | καὶ αὐτὸς                            |
|     |         |       |   |         | Top                              | ἀσκῶ                                 |
| 3   |         |       | ἀπρόσκοπον συνείδησιν   |         | ἔχειν                            | Split                                |
|     |         |       |   |         | πρὸς τὸν θεὸν καὶ τοὺς ἀνθρώπους | Split                                |
|     |         |       | παντός.   |         |                                  |                                      |
| 17  | Sit     |       | δι' ἐτῶν  | Sit     | πλειόνων                         | Emb                                  |
|     |         |       |   |         | ἐλεημοσύνας                      | Emb                                  |
|     |         |       |   |         | ποιήσων εἰς τὸ ἔθνος μου         | Emb                                  |
|     |         |       |   |         | παρεγενόμενη                     | Emb                                  |
| 3   |         |       | καὶ προσφοράς,  | Emb     |                                  | Split                                |
| 2   | 18      |       | ἐν αἷς εὐρόν με   |         |                                  |                                      |
| 3   |         |       | ἡγνισμένον ἐν τῷ ἱερῷ   |         | οὐ μετὰ ὄχλου οὐδὲ μετὰ θορύβου, |                                      |
| 19  | Top     |       | τινὲς δὲ  | Emb     | Top                              | ἀπὸ τῆς Ἀσίας                        |
|     |         |       |   | Emb     | Top                              | Ἰουδαίῳ,                             |
| 3   |         |       | οὓς ἔδει  | Emb     | ἐπὶ σοῦ                          | Emb                                  |
|     |         |       |   |         | παρεῖναι καὶ κατηγορεῖν          |                                      |
| 4   |         |       | εἴ τι   | Split   | ἔχοιεν                           | Split                                |
|     |         |       |   |         | πρὸς ἐμέ.                        | Split                                |
| 20  | ἢ       |       | αὐτοὶ οὗτοι   |         | εἰπάτωσαν                        |                                      |
| 3   |         |       | τί  | Split   | εὐρόν                            | Split                                |
|     |         |       |   |         | ἀδίκημα                          |                                      |
| 5   |         |       | στάντος μου ἐπὶ τοῦ συνεδρίου,  |         |                                  |                                      |
| 4   | 21      |       | ἢ   | Cata    | περὶ μιᾶς ταύτης φωνῆς           | Cata                                 |
|     |         |       |   |         | ἣς ἐκέκραξα                      |                                      |
| 5   |         |       | ἐν αὐτοῖς ἑστῶς   |         |                                  |                                      |
| 3   |         |       | ὅτι   |         | Περὶ ἀναστάσεως νεκρῶν           |                                      |
|     |         |       |   |         | ἐγὼ κρίνομαι σήμερον ἐφ' ὑμῶν.   |                                      |
| 2   | 22      |       | Ἀνεβάλετο δὲ αὐτοὺς ὁ Φῆλιξ,  |         |                                  |                                      |
| 3   |         |       | ἀκριβέστερον  |         | εἰδὼς τὰ περὶ τῆς ὁδοῦ           |                                      |
| 3   |         |       | εἴπας,  |         |                                  |                                      |
|     | Ἵ       | Emb   | Ὅταν  | Emb     | Λυσίας ὁ χιλιάρχος               | Emb                                  |
|     |         |       |   |         | καταβῆ,                          | Emb                                  |
|     |         |       |   |         | διαγνώσομαι τὰ καθ' ὑμᾶς·        |                                      |
| 3   | 23      |       | διαταξάμενος τῷ ἑκατοντάρχη   |         |                                  |                                      |
| 4   |         |       | τηρεῖσθαι αὐτὸν   |         |                                  |                                      |
| 4   |         |       | ἔχειν τε ἄνεσιν   |         |                                  |                                      |
| 4   |         |       | καὶ μηδένα  | Split   | κωλύειν                          | Split                                |
|     |         |       |   |         | τῶν ἰδίων αὐτοῦ                  | Split                                |
| 5   |         |       | ὑπηρετεῖν αὐτῷ.   |         |                                  |                                      |
| 24  | Sit     | Μετὰ  | δὲ  | Sit     | ἡμέρας                           | τινάς                                |
|     |         |       |   | Sit     |                                  |                                      |
|     |         |       | παραγενόμενος ὁ Φῆλιξ σὺν Δρουσίλλῃ τῇ ἰδίᾳ γυναικί                                   |         |                                  |                                      |
| 3   |         |       | οὔσῃ Ἰουδαίᾳ  |         |                                  |                                      |
| 2   |         |       | μετεπέμψατο τὸν Παῦλον  |         |                                  |                                      |
| 2   |         |       | καὶ ἤκουσεν αὐτοῦ περὶ τῆς  | Emb     | εἰς Χριστὸν Ἰησοῦν               | Emb                                  |
|     |         |       |   |         | πίστεως.                         |                                      |
| 25  |         |       | διαλεγομένου δὲ αὐτοῦ περὶ δικαιοσύνης καὶ ἐγκρατείας καὶ τοῦ κρίματος τοῦ μέλλοντος, |         |                                  |                                      |
|     |         |       | ἔμφοβος   |         | γενόμενος ὁ Φῆλιξ                |                                      |
| 2   |         |       | ἀπεκρίθη,   |         |                                  |                                      |
|     |         |       | Τὸ νῦν ἔχον   |         | πορεύου,                         |                                      |
|     |         |       | καιρὸν  |         | δὲ μεταλαβῶν                     |                                      |
| 2   |         |       | μετακαλέσομαί σε,   |         |                                  |                                      |
| 3   | 26      |       | ἅμα καὶ ἐλπίζων   |         |                                  |                                      |
| 4   |         |       | ὅτι   |         | χρήματα                          |                                      |
|     |         |       |   |         | δοθήσεται αὐτῷ ὑπὸ τοῦ Παύλου·   |                                      |
|     |         |       | διὸ καὶ   |         | πυκνότερον                       |                                      |
|     |         |       |   |         | αὐτὸν μεταπεμπόμενος             |                                      |
| 2   |         |       | ὠμίλει αὐτῷ.  |         |                                  |                                      |
| 27  |         |       | Διετίας   |         | δὲ πληρωθείσης                   |                                      |
| 2   |         |       | ἔλαβεν διάδοχον ὁ Φῆλιξ Πόρκιον Φῆστον,   |         |                                  |                                      |
|     |         |       | θέλων τε  | Emb     | χάρिता                           | Emb                                  |
|     |         |       |   |         | καταθέσθαι τοῖς Ἰουδαίοις        | ThS+                                 |
|     |         |       |   |         | ὁ Φῆλιξ                          | ThS+                                 |
| 2   |         |       | κατέλιπε τὸν Παῦλον δεδεμένον.  |         |                                  |                                      |
| 25  | Top+    |       | Φῆστος οὖν ἐπιβὰς τῇ ἐπαρχείᾳ   |         |                                  |                                      |
| Sit |         |       | μετὰ τρεῖς ἡμέρας   | Sit     |                                  | ἀνέβη εἰς Ἱεροσόλυμα ἀπὸ Καισαρείας, |
| 2   | 2       |       | ἐνεφάνισάν τε αὐτῷ οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρῶτοι τῶν Ἰουδαίων κατὰ τοῦ Παύλου            |         |                                  |                                      |
| 2   |         |       | καὶ παρεκάλουν αὐτὸν  |         |                                  |                                      |

3 **3** αἰτούμενοι χάριν κατ' αὐτοῦ  
 4 ὅπως μεταπέμψῃται αὐτὸν εἰς Ἱερουσαλήμ,  
 3 ἐνέδραν ποιούντες  
 4 ἀνελεῖν αὐτὸν κατὰ τὴν ὁδόν.  
**4** Top **ὁ** μὲν οὖν Top **Φῆστος** ἀπεκρίθη  
 3 τηρεῖσθαι τὸν Παῦλον εἰς Καισάρειαν,  
 3 Top **ἑαυτὸν** δὲ μέλλειν Emb **ἐν τάχει** Emb ἐκπορεύεσθαι·  
**5** Top **Οἱ οὖν** Top **ἐν ὑμῖν**, Top **φησίν**, Top **δυνατοὶ** συγκαταβάντες  
 Sit **εἴ τί** ἐστὶν ἐν τῷ ἀνδρὶ Split **ἄτοπον** Sit  
 2 κατηγορεῖτωσαν αὐτοῦ.  
**6** Διατρίψας δὲ ἐν αὐτοῖς ἡμέρας οὐ πλείους ὀκτῶ ἢ δέκα,  
 καταβὰς εἰς Καισάρειαν,  
 Sit **τῇ ἐπαύριον** Sit καθίσας ἐπὶ τοῦ βήματος  
 2 ἐκέλευσεν  
 3 τὸν Παῦλον **ἀχθῆναι**.  
**7** παραγενομένου δὲ αὐτοῦ  
 2 περιέστησαν αὐτὸν οἱ Emb **ἀπὸ Ἱεροσολύμων καταβεβηκότες** Emb Ἰουδαῖοι  
 3 **πολλὰ καὶ βαρέα αἰτιώματα** καταφέροντες  
 4 ἃ οὐκ ἴσχυον ἀποδείξαι,  
 3 **8** Top τοῦ Παύλου Top ἀπολογουμένου  
 ὅτι **Οὔτε εἰς τὸν νόμον τῶν Ἰουδαίων οὔτε εἰς τὸ ἱερόν οὔτε εἰς Καίσαρά** τι ἥμαρτον.  
**9** Top **ὁ Φῆστος** Top δὲ θέλων Emb **τοῖς Ἰουδαίοις χάριν** Emb καταθέσθαι  
 ἀποκριθεὶς τῷ Παύλῳ  
 2 εἶπεν,  
 2 **Θέλεις**  
 3 **εἰς Ἱεροσόλυμα** ἀναβὰς  
 4 **ἐκεῖ** Th+ **περὶ τούτων** Th+ κριθῆναι ἐπ' ἐμοῦ;  
 2 **10** εἶπεν δὲ **ὁ Παῦλος**,  
 Emb **Ἐπὶ τοῦ βήματος Καίσαρος** Emb **ἑστῶς** εἰμι,  
 οὐ με δεῖ κρίνεσθαι.  
 Top Ἰουδαίους Constit **οὐδὲν** ἠδίκησα  
 3 **ὡς** Top **καὶ σὺ** Top **κάλλιον** ἐπιγινώσκεις.  
**11** Sit **εἰ μὲν οὖν** Sit **ἀδικῶ καὶ** Emb **ἄξιον θανάτου** Emb **πέπραχά τι**, Sit  
 2 οὐ παραιτοῦμαι τὸ ἀποθανεῖν·  
 Sit **εἰ δὲ** Sit **οὐδὲν ἐστίν** Constit Split **ὦν** Top+ **οὔτοι κατηγοροῦσίν μου**, Constit Sit Split  
 Constit **οὐδεὶς** με δύναται  
 3 **αὐτοῖς** **χαρίσασθαι**.  
 2 **Καίσαρα** ἐπικαλοῦμαι.  
**12** τότε Top **ὁ Φῆστος** Top συλλαλήσας μετὰ τοῦ συμβουλίου  
 2 ἀπεκρίθη,  
**Καίσαρα** ἐπικέκλησαι,  
**ἐπὶ Καίσαρα** πορεύσῃ.  
**13** Ἡμερῶν δὲ διαγενομένων Split **τινῶν**  
 Ἀγρίππας ὁ βασιλεὺς καὶ Βερνίκη κατήντησαν εἰς Καισάρειαν  
 3 ἀσπασάμενοι τὸν Φῆστον.  
**14** Sit **ὡς** δὲ Emb Sit **πλείους ἡμέρας** Emb **διέτριβον ἐκεῖ**, Sit  
 Top **ὁ Φῆστος** Top Top τῷ βασιλεῖ Top **ἀνέθετο** τὰ κατὰ τὸν Παῦλον  
 3 λέγων,  
**Ἄνῃ τις** ἐστὶν καταλειμμένος ὑπὸ Φήλικος | R-Dis **δέσμιος**, |  
**15** περὶ οὗ γενομένου μου εἰς Ἱεροσόλυμα  
 2 ἐνεφάνισαν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι τῶν Ἰουδαίων  
 3 αἰτούμενοι κατ' αὐτοῦ καταδίκην.  
 2 **16** πρὸς οὓς ἀπεκρίθη  
 2 **ὅτι οὐκ ἔστιν ἔθος Ῥωμαίοις**

|                 |                 |  |
|-----------------|-----------------|--|
|                 | 3               | χαρίζεσθαι τινά ἄνθρωπον   |
|                 | 4               | πρὶν ἢ <sup>Top</sup> ὁ κατηγορούμενος <sup>Top</sup> κατὰ πρόσωπον ἔχοι τοὺς κατηγοροὺς               |
|                 | 5               | τόπον τε ἀπολογίας λάβοι περὶ τοῦ ἐγκλήματος.  |
| <b>17</b>       |                 | συνελθόντων οὖν [αὐτῶν] ἐνθάδε   |
|                 |                 | ἀναβολὴν μηδεμίαν ποιησάμενος  |
|                 | Sit             | τῇ ἐξῆς Sit καθίσας ἐπὶ τοῦ βήματος  |
|                 | 2               | ἐκέλευσα ἀχθῆναι τὸν ἄνδρα·  |
| <b>18</b>       |                 | περὶ οὗ σταθέντες οἱ κατήγοροι   |
|                 | Constit         | οὐδεμίαν αἰτίαν Constit ἔφερον   |
|                 | 3               | <sup>Split</sup> ὧν <sup>Top</sup> ἐγὼ ὑπενόουν <sup>Split</sup> πονηρῶν,                              |
| <b>19</b>       |                 | ζητήματα δέ τινά περὶ τῆς ἰδίας δεισιδαιμονίας εἶχον πρὸς αὐτὸν  |
|                 | 3               | <sup>Split</sup> καὶ περὶ τινος Ἰησοῦ τεθηκότος <sup>Split</sup>                                       |
|                 | 2               | ὃν ἔφασκεν ὁ Παῦλος  |
|                 | 3               | ζῆν.   |
| <b>20</b>       |                 | ἀπορούμενος δὲ ἐγὼ τὴν <sup>Th+</sup> περὶ τούτων <sup>Th+</sup> ζήτησιν                               |
|                 | 2               | ἔλεγον   |
|                 | 3               | εἰ βούλοιο πορεύεσθαι εἰς Ἱεροσόλυμα   |
|                 | 4               | <sup>Sit</sup> κάκει κρίνεσθαι <sup>Th+</sup> περὶ τούτων. <sup>Th+</sup>                              |
| <b>21</b>       | <sup>Top</sup>  | τοῦ δὲ <sup>Top</sup> Παύλου ἐπικαλεσαμένου  |
|                 | 3               | τηρηθῆναι αὐτὸν εἰς τὴν <sup>Emb</sup> τοῦ Σεβαστοῦ <sup>Emb</sup> διάγνωσιν,                          |
|                 | 2               | ἐκέλευσα τηρεῖσθαι αὐτὸν   |
|                 | 3               | ἕως οὗ ἀναπέμψω αὐτὸν πρὸς Καίσαρα.  |
| <b>22</b>       | <sup>Top+</sup> | Ἀγρίππας δὲ πρὸς τὸν Φῆστον,   |
|                 | 2               | ἔβουλόμην καὶ αὐτὸς  |
|                 | 3               | τοῦ ἀνθρώπου ἀκοῦσαι.  |
|                 |                 | Αὔριον, φησίν, ἀκούσῃ αὐτοῦ.   |
| <b>23</b>       | Sit             | Τῇ οὖν Sit ἐπαύριον  |
|                 |                 | ἐλθόντος τοῦ Ἀγρίππα καὶ τῆς Βερνίκης μετὰ πολλῆς φαντασίας  |
|                 |                 | καὶ εἰσελθόντων εἰς τὸ ἀκροατήριον σὺν τε χιλιάρχοις καὶ ἀνδράσιν τοῖς κατ' ἐξοχὴν τῆς                 |
|                 |                 | πόλεως   |
|                 |                 | καὶ κελεύσαντος τοῦ Φῆστου   |
|                 | 2               | ἦχθη ὁ Παῦλος.   |
|                 | 2               | <b>24</b> καὶ φησιν ὁ Φῆστος,  |
|                 |                 | Ἀγρίππα βασιλεῦ καὶ πάντες οἱ συμπαρόντες ἡμῖν ἄνδρες,   |
|                 | 2               | θεωρεῖτε τοῦτον  |
|                 | 3               | περὶ οὗ <sup>Top</sup> ἅπαν τὸ πλῆθος τῶν Ἰουδαίων <sup>Top</sup> ἐνέντυχόν μοι ἔν τε Ἱεροσολύμοις καὶ |
|                 |                 | ἐνθάδε   |
|                 | 4               | βοῶντες  |
|                 | 5               | μὴ δεῖν αὐτὸν ζῆν μηκέτι.  |
| <b>25</b>       | <sup>Top</sup>  | ἐγὼ δὲ κατελαβόμην   |
|                 | 3               | μηδὲν ἄξιον αὐτὸν <sup>Split</sup> θανάτου <sup>Split</sup> πεπραχέναι,                                |
| <sup>Top+</sup> |                 | αὐτοῦ δὲ <sup>Top+</sup> τούτου ἐπικαλεσαμένου τὸν Σεβαστὸν  |
|                 | 2               | ἔκρινα πέμπειν.  |
| <b>26</b>       |                 | περὶ οὗ <sup>Emb</sup> ἀσφαλές τι <sup>Emb</sup> γράψαι τῷ κυρίῳ οὐκ ἔχω,                              |
|                 | 2               | διὸ προήγαγον αὐτὸν ἐφ' ὑμῶν   |
|                 | 4               | καὶ μάλιστα ἐπὶ σοῦ, βασιλεῦ Ἀγρίππα,  |
|                 | 3               | ὅπως τῆς ἀνακρίσεως γενομένης  |
|                 | 4               | σχῶ  |
|                 | 5               | τί γράψω·  |
| <b>27</b>       |                 | ἄλογον γάρ μοι δοκεῖ   |
|                 | 3               | πέμποντα δέσμιον   |
|                 | 4               | μὴ καὶ τὰς κατ' αὐτοῦ αἰτίας σημαίνει.   |
| <b>26</b>       | <sup>Top+</sup> | Ἀγρίππας δὲ <sup>Top</sup> πρὸς τὸν Παῦλον <sup>Top</sup> ἔφη,   |
|                 | 2               | Ἐπιτρέπεται σοι  |

3 **περὶ σεαυτοῦ** λέγειν.  
 τότε <sup>Top</sup> **ὁ Παῦλος** <sup>Top</sup> ἐκτείνας τὴν χεῖρα  
 2 ἄπελογεῖτο,  
 2 **Sit** **Περὶ πάντων ὧν ἐγκαλοῦμαι ὑπὸ Ἰουδαίων,** <sup>Sit</sup> βασιλεῦ Ἀγρίππα,  
 2 ἦγμαι ἑμαυτὸν μακάριον  
 3 **Emb** ἐπὶ σου **Emb** μέλλων σήμερον ἀπολογεῖσθαι  
 4 **3** μάλιστα γνώστην ὄντα σε **Split** πάντων τῶν κατὰ Ἰουδαίους ἔθων τε καὶ  
 ζητημάτων, **Split**  
 2 διὸ δέομαι  
 3 **μακροθύμως** ἀκοῦσαί μου.  
 4 <sup>Top</sup> **Τὴν μὲν οὖν** <sup>Top</sup> βίωσίν μου [τὴν] ἐκ νεότητος  
 3 τὴν **Emb** ἀπ' ἀρχῆς **Emb** γενομένην ἐν τῷ ἔθνει μου ἐν τε Ἱεροσολύμοις <sup>Top</sup>  
 2 ἴσασι πάντες [οἱ] Ἰουδαῖοι  
 3 **5** προγινώσκοντές με ἄνωθεν,  
 5 ἐὰν θέλωσι μαρτυρεῖν,  
 4 ὅτι κατὰ τὴν ἀκριβεστάτην αἴρεσιν τῆς ἡμετέρας θρησκείας ἔζησα Φαρισαῖος.  
 6 **καὶ** <sup>Sit</sup> νῦν ἐπ' ἐλπίδι τῆς εἰς τοὺς πατέρας ἡμῶν ἐπαγγελίας γενομένης ὑπὸ τοῦ θεοῦ  
 ἔσθηκα κρινόμενος,  
 3 **7** εἰς ἣν <sup>Top</sup> τὸ δωδεκάφυλον ἡμῶν <sup>Top</sup> ἐν ἐκτενεῖα νύκτα καὶ ἡμέραν λατρεῦον  
 4 ἐλπίζει καταντῆσαι,  
 3 περὶ ἧς ἐλπίδος ἐγκαλοῦμαι ὑπὸ Ἰουδαίων, βασιλεῦ.  
 8 **τί** **Emb** ἄπιστον κρίνεται παρ' ὑμῖν  
 3 εἰ <sup>Top</sup> ὁ θεὸς <sup>Top</sup> νεκροὺς ἐγείρει;  
 9 <sup>Top</sup> ἐγὼ μὲν οὖν ἔδοξα ἑμαυτῷ  
 3 **πρὸς τὸ ὄνομα Ἰησοῦ τοῦ Ναζωραίου** δεῖν **Split** πολλὰ ἐναντία **Split** πράξει,  
 2 **10** ὃ καὶ ἐποίησα ἐν Ἱεροσολύμοις,  
**καὶ** <sup>Top</sup> πολλοὺς τε τῶν ἁγίων <sup>Top</sup> <sup>Top</sup> ἐγὼ ἐν φυλακαῖς κατέκλεισα  
 3 τὴν **Emb** παρὰ τῶν ἀρχιερέων **Emb** ἔξουσίαν λαβὼν  
 ἀναιρουμένων τε αὐτῶν  
 2 κατήνεγκα ψῆφον.  
 11 **καὶ** <sup>Sit</sup> κατὰ πάσας τὰς συναγωγὰς <sup>Sit</sup> πολλάκις τιμωρῶν αὐτοὺς  
 2 ἠνάγκαζον βλασφημεῖν  
**περισσῶς** τε ἐμμαινόμενος αὐτοῖς  
 2 ἐδίωκον ἕως καὶ εἰς τὰς **Emb** ἔξω πόλεις.  
 12 Ἐν οἷς πορευόμενος εἰς τὴν Δαμασκὸν μετ' ἔξουσίας καὶ ἐπιτροπῆς τῆς τῶν ἀρχιερέων  
 13 <sup>Sit</sup> ἡμέρας μέσης <sup>Sit</sup> <sup>Sit</sup> κατὰ τὴν ὁδὸν <sup>Sit</sup> εἶδον, βασιλεῦ,  
 3 οὐρανόθεν ὑπὲρ τὴν λαμπρότητα τοῦ ἡλίου περιλάμπαν με **Split** φῶς  
 4 | **R-Dis** καὶ τοὺς σὺν ἐμοὶ πορευομένους. **R-Dis** |  
 14 πάντων τε καταπεσόντων ἡμῶν εἰς τὴν γῆν  
 2 ἤκουσα φωνὴν  
 3 λέγουσαν πρὸς με τῇ Ἑβραϊδὶ διαλέκτῳ,  
**Σαοὺλ Σαοὺλ, τί με** **Emb** διώκεις;  
 2 σκληρόν σοι  
 3 **πρὸς κέντρα** λακτίζειν.  
 15 <sup>Top</sup> ἐγὼ δὲ εἶπα,  
**Τίς εἶ, κύριε;**  
<sup>Top</sup> **ὁ** δὲ <sup>Top</sup> κύριος εἶπεν,  
<sup>Top</sup> **Ἐγὼ** εἰμι Ἰησοῦς  
 3 ὃν <sup>Top</sup> σὺ διώκεις.  
 2 **16** ἀλλὰ ἀνάστηθι καὶ στήθι ἐπὶ τοὺς πόδας σου  
**Cata** εἰς τοῦτο **Cata** γὰρ ὤφθην σοι,  
 3 **CataRef** προχειρίσασθαί σε ὑπηρετήν καὶ μάρτυρα  
 5 ὧν τε εἰδές [με]  
 5 ὧν τε ὀφθήσομαί σοι.

|    |   |    |   |
|----|---|----|---|
|    | 4 | 17 | ἔξαιρούμενός σε ἐκ τοῦ λαοῦ καὶ ἐκ τῶν ἐθνῶν  |
|    | 5 |    | εἰς οὓς <sup>Top</sup> ἐγὼ ἀποστέλλω σε   |
| 3  |   | 18 | ἀνοίξαι ὀφθαλμοὺς αὐτῶν,  |
|    | 4 |    | τοῦ ἐπιστρέψαι ἀπὸ σκοτούς εἰς φῶς  |
|    | 5 |    | καὶ τῆς ἐξουσίας τοῦ Σατανᾶ ἐπὶ τὸν θεόν,   |
|    | 4 |    | τοῦ λαβεῖν αὐτοὺς ἄφεσιν ἁμαρτιῶν καὶ κληρὸν  |
|    | 5 |    | ἐν τοῖς ἡγιασμένοις πίστει τῇ εἰς ἐμέ. <sup>CataRef</sup>   |
| 19 |   |    | Ὅθεν, βασιλεῦ Ἀγρίππα, οὐκ ἐγενόμην ἀπειθῆς τῇ οὐρανίῳ ὄπτασίᾳ  |
| 20 |   |    | ἀλλὰ <sup>* Sit</sup> τοῖς ἐν Δαμασκῶ πρώτῳν τε καὶ Ἱεροσολύμοις,   |
|    | 4 |    | πᾶσάν τε τὴν χώραν τῆς Ἰουδαίας καὶ τοῖς ἔθνεσιν <sup>* Sit</sup> ἀπήγγελλον  |
|    | 3 |    | μετανοεῖν καὶ ἐπιστρέφειν ἐπὶ τὸν θεόν,   |
|    | 4 |    | <sup>Emb</sup> ἄξια τῆς μετανοίας <sup>Emb</sup> ἔργα πράσσοντας.   |
| 21 |   |    | <sup>Sit Th+</sup> ἕνεκα τούτων <sup>Sit Th+</sup> με <sup>Top</sup> Ἰουδαῖοι συλλαβόμενοι [ὄντα] ἐν τῷ ἱερῷ  |
|    | 2 |    | ἐπειρώντο διαχειρίσασθαι.   |
| 22 |   |    | ἐπικουρίας οὖν τυχῶν <sup>Split</sup> τῆς ἀπὸ τοῦ θεοῦ <sup>Split</sup> ἄχρι τῆς ἡμέρας ταύτης  |
|    | 2 |    | ἔστηκα  |
|    | 3 |    | μαρτυρόμενος μικρῷ τε καὶ μεγάλῳ  |
|    | 3 |    | <sup>Constit</sup> οὐδὲν ἐκτὸς λέγων <sup>Split</sup> ὧν τε <sup>Emb</sup> οἱ προφήται <sup>Emb</sup> ἐλάλησαν μελλόντων γίνεσθαι                                 |
|    | 5 |    | καὶ Μωϋσῆς, <sup>Split</sup>  |
|    | 4 | 23 | εἰ παθητὸς ὁ Χριστός,   |
|    | 4 |    | εἰ πρώτος ἐξ ἀναστάσεως νεκρῶν  |
|    | 5 |    | φῶς μέλλει καταγγέλλειν τῷ τε λαῷ καὶ τοῖς ἔθνεσιν.   |
| 24 |   |    | <sup>Top+ T-H</sup> Ταῦτα δὲ <sup>T-H</sup> αὐτοῦ ἀπολογουμένου <sup>T-H</sup>  |
|    |   |    | <sup>Top</sup> ὁ Φῆστος <sup>Top</sup> <sup>Emb</sup> μεγάλη τῇ φωνῇ <sup>Emb</sup> φησιν,  |
|    | 2 |    | Μαίνη, Παῦλε·   |
|    |   |    | τὰ πολλά σε <sup>Split</sup> γράμματα εἰς μανίαν περιτρέπει.  |
| 25 |   |    | <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Παῦλος,  |
|    | 2 |    | Οὐ μαίνομαι, φησίν, κράτιστε Φῆστε,   |
|    |   |    | ἀλλὰ <sup>Emb</sup> ἀληθείας καὶ σωφροσύνης <sup>Emb</sup> ῥήματα ἀποφθέγγομαι.   |
|    | 2 | 26 | ἐπίσταται γὰρ <sup>Th+</sup> περὶ τούτων <sup>Th+</sup> ὁ βασιλεὺς  |
|    | 4 |    | πρὸς ὃν καὶ <sup>Emb</sup> παρρησιαζόμενος <sup>Emb</sup> λαλῶ,   |
|    |   |    | λανθάνειν γὰρ <sup>Emb</sup> αὐτόν [τι] <sup>Th+</sup> τούτων οὐ πείθομαι <sup>Split</sup> οὐθέν·   |
|    | 2 |    | οὐ γὰρ ἐστίν <sup>Emb</sup> ἐν γωνία <sup>Emb</sup> πεπραγμένον <sup>Th+</sup> τοῦτο.   |
|    | 2 | 27 | πιστεύεις, βασιλεῦ Ἀγρίππα, τοῖς προφήταις;   |
|    | 2 |    | οἶδα  |
|    | 3 |    | ὅτι πιστεύεις.  |
| 28 |   |    | <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Ἀγρίππας <sup>Top</sup> πρὸς τὸν Παῦλον,   |
|    |   |    | <sup>Sit</sup> Ἐν ὀλίγῳ <sup>Sit Top</sup> με πείθεις   |
|    | 2 |    | Χριστιανὸν ποιῆσαι.   |
| 29 |   |    | <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> Παῦλος,  |
|    | 2 |    | Εὐξαίμην ἂν τῷ θεῷ  |
|    | 3 |    | <sup>Sit</sup> καὶ ἐν ὀλίγῳ καὶ ἐν μεγάλῳ <sup>Sit</sup> οὐ μόνον σὲ  |
|    | 4 |    | ἀλλὰ καὶ πάντας τοὺς ἀκούοντάς μου σήμερον <sup>Th+</sup> γενέσθαι <sup>Th+</sup> τοιούτους   |
|    | 5 |    | ὅποιος <sup>Emb</sup> καὶ ἐγὼ <sup>Emb</sup> εἰμι   |
|    | 5 |    | παρεκτὸς τῶν δεσμῶν τούτων.   |
|    | 2 | 30 | Ἀνέστη τε ὁ βασιλεὺς καὶ ὁ ἡγεμὼν ἢ τε Βερνίκη καὶ οἱ συγκαθήμενοι αὐτοῖς,  |
| 31 |   |    | καὶ ἀναχωρήσαντες   |
|    | 2 |    | ἐλάλουν πρὸς ἀλλήλους   |
|    | 3 |    | λέγοντες  |
|    |   |    | ὅτι <sup>Constit</sup> Οὐδὲν <sup>Emb</sup> θανάτου ἢ δεσμῶν <sup>Emb</sup> ἄξιόν [τι] <sup>Constit</sup> πράσσει <sup>Th+</sup> ὁ ἄνθρωπος οὗτος. <sup>Th+</sup> |
| 32 |   |    | <sup>Top+</sup> Ἀγρίππας δὲ <sup>Top</sup> τῷ Φῆστῳ ἔφη,  |
|    |   |    | Ἀπολελύσθαι ἐδύνατο <sup>Th+</sup> ὁ ἄνθρωπος οὗτος <sup>Th+</sup>  |
|    | 3 |    | εἰ μὴ ἐπεκέκλητο Καίσαρα.   |
| 27 |   |    | <sup>Sit</sup> Ὡς δὲ <sup>Sit</sup> ἐκρίθη τοῦ ἀποπλεῖν ἡμᾶς εἰς τὴν Ἰταλίαν, <sup>Sit</sup>  |

- 2 παρεδίδουν τόν τε Παῦλον καί τινας ἑτέρους δεσμώτας ἑκατοντάρχη ὀνόματι Ἰουλίῳ σπείρης Σεβαστῆς.
- 2 ἐπιβάντες δὲ πλοίῳ Ἀδραμυττηνῶ  
3 μέλλοντι πλεῖν εἰς τοὺς κατὰ τὴν Ἀσίαν τόπους  
2 ἀνήχθημεν  
3 ὄντος σὺν ἡμῖν Ἀριστάρχου Μακεδόνοιο Θεσσαλονικέως.
- 3 <sup>Sit</sup> τῇ τε <sup>Sit</sup> ἑτέρα κατήχθημεν εἰς Σιδῶνα,  
φιλανθρώπως τε ὁ Ἰούλιος τῷ Παύλῳ χρησάμενος  
2 ἐπέτρεψεν  
3 πρὸς τοὺς φίλους πορευθέντι  
4 ἐπιμελείας τυχεῖν.
- 4 <sup>Sit</sup> κάκειθεν ἀναχθέντες  
2 ὑπεπλεύσαμεν τὴν Κύπρον  
3 διὰ τὸ <sup>Top</sup> τοὺς ἀνέμους <sup>Top</sup> εἶναι ἐναντίους,
- 5 τό τε πέλαγος τὸ κατὰ τὴν Κιλικίαν καὶ Παμφυλίαν διαπλεύσαντες  
2 κατήλθομεν εἰς Μύρα τῆς Λυκίας.
- 6 <sup>Sit</sup> κάκει εὐρών ὁ ἑκατοντάρχης πλοῖον Ἀλεξανδρίνον  
3 πλεόν εἰς τὴν Ἰταλίαν  
2 ἐνεβίβασεν ἡμᾶς εἰς αὐτό.
- 7 ἐν ἱκαναῖς δὲ ἡμέραις βραδυπλοοῦντες  
καὶ μόλις γινόμενοι κατὰ τὴν Κνίδον,  
μὴ προσεώντος ἡμᾶς τοῦ ἀνέμου  
2 ὑπεπλεύσαμεν τὴν Κρήτην κατὰ Σαλμώνην,
- 8 μόλις τε παραλεγόμενοι αὐτὴν  
2 ἦλθομεν εἰς τόπον τινὰ καλούμενον Καλοὺς Λιμένας  
3 ὃ ἐγγὺς πόλις ἦν <sup>Split</sup> Λασαία.
- 9 Ἰκανοῦ δὲ χρόνου διαγενομένου  
καὶ ὄντος ἤδη ἐπισηφαλοῦς τοῦ πλοῦς  
3 διὰ τὸ καὶ τὴν νηστείαν ἤδη παρεληλυθέναι  
2 παρήνει ὁ Παῦλος  
3 10 λέγων αὐτοῖς,
- Ἄνδρες, θεωρῶ  
3 ὅτι μετὰ ὕβρεως καὶ πολλῆς ζημίας οὐ μόνον τοῦ φορτίου καὶ τοῦ πλοίου  
4 ἀλλὰ καὶ τῶν ψυχῶν ἡμῶν μέλλειν ἔσεσθαι <sup>ThS+</sup> τὸν πλοῦν. <sup>ThS+</sup>
- 11 <sup>Top</sup> ὁ δὲ <sup>Top</sup> ἑκατοντάρχης τῷ κυβερνήτῃ καὶ τῷ ναυκλήρῳ μᾶλλον ἐπέειπετο  
3 ἢ τοῖς <sup>Emb</sup> ὑπὸ Παύλου <sup>Emb</sup> λεγομένοις.
- 12 ἀνευθέτου δὲ τοῦ λιμένος ὑπάρχοντος <sup>Split</sup> πρὸς παραχειμασίαν <sup>Split</sup>  
<sup>Top</sup> οἱ πλείονες <sup>Top</sup> ἔθεντο βουλήν  
3 ἀναχθῆναι ἐκεῖθεν,  
4 εἴ πως δύναιτο  
5 καταστήσαντες εἰς Φοίνικα  
6 παραχειμάσαι λιμένα τῆς Κρήτης  
7 βλέποντα κατὰ λίβα καὶ κατὰ χάρον.
- 13 Ὑποπνεύσαντος δὲ νότου  
δόξαντες  
3 τῆς προθέσεως κεκρατηκέναι,  
ἄραντες  
2 ἄσσον παρελέγοντο τὴν Κρήτην.
- 14 <sup>Sit</sup> μετ' οὐ πολὺ <sup>Sit</sup> δὲ ἔβαλεν κατ' αὐτῆς ἄνεμος τυφωνικὸς  
3 ὁ καλούμενος Εὐρακύλων·
- 15 συναρπασθέντος δὲ τοῦ πλοίου  
καὶ μὴ δυναμένου ἀντοφθαλμεῖν τῷ ἀνέμῳ  
ἐπιδόντες  
2 ἐφερόμεθα.

**16** νησίον δέ τι ὑποδραμόντες <sup>Split</sup> καλούμενον Καῦδα <sup>Split</sup>  
 2 ἰσχύσαμεν μόλις  
 3 περικρατεῖς γενέσθαι τῆς σκάφης,  
**17** ἦν ἄραντες  
 βοηθείαις ἐχρώντο  
 3 ὑποζωννύντες τὸ πλοῖον,  
 φοβούμενοί τε  
 3 μὴ εἰς τὴν Σύρτιν ἐκπέσωσιν,  
 χαλάσαντες τὸ σκεῦος,  
<sup>Sit</sup> οὕτως ἐφέροντο.  
**18** σφοδρῶς δὲ χειμαζομένων ἡμῶν  
<sup>Sit</sup> τῇ ἐξῆς <sup>Sit</sup> ἐκβολὴν ἐποιοῦντο  
**19** καὶ <sup>Sit</sup> τῇ τρίτῃ <sup>Sit</sup> \* αὐτόχειρες τὴν σκευὴν τοῦ πλοίου ἔρριψαν.  
**20** μήτε δὲ ἡλίου μήτε ἄστρων ἐπιφαινόντων ἐπὶ πλείονας ἡμέρας,  
 χειμῶνός τε οὐκ ὀλίγου ἐπικειμένου,  
<sup>Sit</sup> λοιπὸν περιηρεῖτο ἐλπὶς <sup>Emb</sup> πᾶσα  
 3 τοῦ σῶζεσθαι ἡμᾶς.  
**21** Πολλῆς τε ἀσιτίας ὑπαρχούσης  
 τότε σταθεὶς ὁ Παῦλος ἐν μέσῳ αὐτῶν  
 2 εἶπεν,  
 2 Ἔδει μὲν, ὦ ἄνδρες,  
 3 πειθαρχήσαντάς μοι  
 4 μὴ ἀνάγεσθαι ἀπὸ τῆς Κρήτης  
 5 κερδησαί <sup>Th+</sup> τε τὴν ὕβριν ταύτην καὶ τὴν ζημίαν. <sup>Th+</sup>  
**22** καὶ <sup>Sit</sup> τὰ νῦν <sup>Sit</sup> παραινῶ ὑμᾶς εὐθυμεῖν·  
 ἀποβολὴ γὰρ ψυχῆς οὐδεμία ἔσται <sup>Split</sup> ἐξ ὑμῶν πλὴν τοῦ πλοίου. <sup>Split</sup>  
 2 **23** παρέστη γάρ μοι ταύτῃ τῇ νυκτὶ <sup>Emb</sup> τοῦ θεοῦ,  
 4 οὐ εἰμι [ἐγώ]  
 4 ὧ καὶ λατρεύω, <sup>Emb</sup> ἄγγελος  
 3 **24** λέγων,  
 2 Μὴ φοβοῦ, Παῦλε,  
 Καίσαρί σε δεῖ παραστήναι,  
 καὶ <sup>Idou</sup> κεχάρισται σοι ὁ θεὸς πάντας τοὺς πλείονας μετὰ σοῦ.  
 2 **25** διὸ εὐθυμεῖτε, ἄνδρες·  
 2 πιστεύω γὰρ τῷ θεῷ  
 3 ὅτι οὕτως ἔσται  
 4 καθ' ὃν τρόπον λελάληταί μοι.  
**26** εἰς νῆσον δέ τινα δεῖ ἡμᾶς ἐκπεσεῖν.  
**27** <sup>Sit</sup> Ὡς δὲ <sup>Emb</sup> <sup>Sit</sup> τεσσαρεσκαίδεκάτῃ νυξὶ <sup>Emb</sup> ἐγένετο <sup>Sit</sup>  
 διαφορομένων ἡμῶν ἐν τῷ Ἀδρίᾳ,  
<sup>Sit</sup> κατὰ μέσον τῆς νυκτὸς <sup>Sit</sup> ὑπενόουν οἱ ναῦται  
 3 προσάγειν τινὰ αὐτοῖς <sup>Split</sup> χώραν.  
**28** καὶ βολίσαντες  
 2 εὐρον ὀργυιᾶς εἴκοσι,  
 βραχὺ δὲ διαστήσαντες  
 καὶ πάλιν βολίσαντες  
 2 εὐρον ὀργυιᾶς δεκαπέντε·  
**29** φοβούμενοί τε  
 3 μὴ που κατὰ τραχεῖς τόπους ἐκπέσωμεν,  
 ἐκ πρύμνης ῥίψαντες ἀγκύρας τέσσαρας  
 2 ἠῤῥοντο  
 3 ἡμέραν γενέσθαι.  
**30** <sup>Top</sup> τῶν δὲ <sup>Top</sup> ναυτῶν ζητούντων φυγεῖν ἐκ τοῦ πλοίου  
 καὶ χαλασάντων τὴν σκάφην εἰς τὴν θάλασσαν



προφάσει  
<sup>3</sup> ὡς ἐκ πρόωρης ἀγκύρας μελλόντων ἐκτείνειν,  
<sup>2</sup> **31** εἶπεν ὁ Παῦλος τῷ ἑκατοντάρχη καὶ τοῖς στρατιώταις,  
 Sit Ἐὰν μὴ <sup>Top+</sup> οὗτοι μείνωσιν ἐν τῷ πλοίῳ, <sup>Sit</sup>  
<sup>Top</sup> ὑμεῖς σωθῆναι οὐ δύνασθε.  
<sup>2</sup> **32** τότε ἀπέκοψαν οἱ στρατιῶται τὰ σχοινία τῆς σκάφης  
<sup>2</sup> καὶ εἶασαν αὐτὴν ἐκπεσεῖν.  
<sup>33</sup> Sit Ἀκρι δὲ <sup>Sit</sup> οὐ ἡμέρα ἤμελλεν γίνεσθαι, <sup>Sit</sup>  
<sup>2</sup> παρεκάλει ὁ Παῦλος ἅπαντας  
<sup>3</sup> μεταλαβεῖν τροφῆς  
<sup>4</sup> λέγων,  
 Emb Τεσσαρεσκαίδεκάτην <sup>Sit</sup> σήμερον <sup>Emb Split</sup> ἡμέραν <sup>Sit</sup> προσδοκῶντες ἅσιτοι διατελεῖτε  
<sup>3</sup> <sup>Constit</sup> μηθὲν <sup>Sit</sup> προσλαβόμενοι.  
<sup>2</sup> **34** διὸ παρακαλῶ ὑμᾶς  
<sup>3</sup> μεταλαβεῖν τροφῆς·  
<sup>Top+</sup> τοῦτο γὰρ πρὸς τῆς ὑμετέρας σωτηρίας ὑπάρχει,  
 Constit Emb οὐδενὸς γὰρ <sup>Constit Emb</sup> ὑμῶν <sup>Sit</sup> θριξὶ ἀπὸ τῆς κεφαλῆς ἀπολείται.  
<sup>35</sup> T-H εἴπας δὲ <sup>T-H Th+</sup> ταῦτα  
 καὶ λαβὼν ἄρτον  
<sup>2</sup> εὐχαρίστησεν τῷ θεῷ ἐνώπιον πάντων  
 καὶ κλάσας  
<sup>2</sup> ἤρξατο ἐσθίειν.  
<sup>36</sup> εὐθυμοὶ δὲ γενόμενοι πάντες  
 καὶ αὐτοὶ προσελάβοντο τροφῆς.  
<sup>2</sup> **37** ἡμεθα δὲ αἱ πᾶσαι ψυχαὶ ἐν τῷ πλοίῳ διακόσμαι ἐβδομήκοντα ἕξ.  
<sup>38</sup> κορεσθέντες δὲ τροφῆς  
<sup>2</sup> ἐκούφιζον τὸ πλοῖον  
<sup>3</sup> ἐκβαλλόμενοι τὸν σῆτον εἰς τὴν θάλασσαν.  
<sup>39</sup> Sit Ὅτε δὲ <sup>Sit</sup> ἡμέρα ἐγένετο, <sup>Sit</sup>  
 \* τὴν γῆν οὐκ ἐπεγίνωσκον, \*  
 κόλπῳ δὲ <sup>Sit</sup> τινα κατενόουν  
<sup>3</sup> ἔχοντα αἰγιαλὸν  
<sup>4</sup> εἰς ὃν ἐβουλεύοντο  
<sup>6</sup> εἰ δύναιντο  
<sup>5</sup> ἐξῶσαι τὸ πλοῖον.  
<sup>40</sup> καὶ τὰς ἀγκύρας <sup>Sit</sup> περιελόντες  
<sup>2</sup> εἶων εἰς τὴν θάλασσαν,  
 Sit ἅμα ἀνέντες τὰς ζευκτηρίας τῶν πηδαλίων  
 καὶ ἐπάραντες τὸν ἀρτέμωνά τῆ πνεοῦση  
<sup>2</sup> κατεῖχον εἰς τὸν αἰγιαλόν.  
<sup>41</sup> περιπεσόντες δὲ εἰς τόπον διθάλασσον  
<sup>2</sup> ἐπέκειλαν τὴν ναῦν  
 καὶ <sup>Top</sup> ἢ μὲν <sup>Top</sup> πρόωρα ἐρείασα  
<sup>2</sup> ἔμεινεν ἀσάλευτος,  
<sup>Top</sup> ἢ δὲ <sup>Top</sup> πρῶμα ἐλύετο ὑπὸ τῆς βίας [τῶν κυμάτων].  
<sup>42</sup> Emb Top τῶν δὲ <sup>Emb Top</sup> στρατιωτῶν <sup>Sit</sup> βουλή <sup>Top</sup> ἐγένετο  
<sup>3</sup> ἵνα τοὺς δεσμώτας <sup>Sit</sup> ἀποκτείνωσιν,  
<sup>4</sup> μὴ <sup>Top</sup> τις ἐκκολυμβήσας διαφύγῃ.  
<sup>43</sup> Top ὁ δὲ <sup>Top</sup> ἑκατοντάρχης βουλόμενος διασῶσαι τὸν Παῦλον  
<sup>2</sup> ἐκώλυσεν αὐτοὺς τοῦ βουλήματος,  
<sup>2</sup> ἐκέλευσέν τε τοὺς δυναμένους κολυμβᾶν  
<sup>3</sup> ἀπορίψαντας πρώτους  
<sup>4</sup> ἐπὶ τὴν γῆν ἐξιέναι  
<sup>3</sup> **44** καὶ τοὺς λοιποὺς <sup>Art</sup> οὓς μὲν ἐπὶ σανίσιν,

- 4 <sup>Top</sup> οὕς δὲ ἐπὶ τινων τῶν ἀπὸ τοῦ πλοίου.  
καὶ <sup>Sit</sup> οὕτως ἐγένετο
- 3 πάντας διασωθῆναι ἐπὶ τὴν γῆν.
- 28** Καὶ διασωθέντες  
2 τότε ἐπέγνωμεν  
3 ὅτι **Μελίτη** ἡ νῆσος καλεῖται.
- 2** <sup>Top</sup> οἱ τε <sup>Top</sup> βάρβαροι παρείχον οὐ τὴν τυχοῦσαν φιλανθρωπίαν ἡμῖν,  
ἄψαντες γὰρ πυρὰν  
2 προσελάβοντο πάντας ἡμᾶς διὰ τὸν ὑετὸν τὸν ἐφεστῶτα καὶ διὰ τὸ ψῦχος.  
**3** συστρέφαντος δὲ τοῦ Παύλου **Ἐμβ φρυγάνων** τι πλήθος  
καὶ ἐπιθέντος ἐπὶ τὴν πυρὰν,  
**ἔχιδνα** ἀπὸ τῆς θέρμης ἐξελθοῦσα  
2 καθήψεν τῆς χειρὸς αὐτοῦ.
- 4** <sup>Sit</sup> ὡς δὲ <sup>Sit</sup> εἶδον οἱ βάρβαροι **Ἐμβ κρεμάμενον** τὸ θηρίον **Ἐμβ Split** ἐκ τῆς χειρὸς  
αὐτοῦ, **Ἐμβ Sit Split**  
**πρὸς ἀλλήλους** ἔλεγον,  
**Πάντως φρονεὺς** ἐστὶν <sup>Th+</sup> ὁ ἄνθρωπος οὗτος <sup>Th+</sup>  
3 ὃν διασωθέντα ἐκ τῆς θαλάσσης  
4 <sup>Top</sup> ἡ δίκη <sup>Top</sup> ζῆν **οὐκ εἶασεν.**
- 5** <sup>Art</sup> ὁ μὲν οὖν ἀποτινάξας τὸ θηρίον εἰς τὸ πῦρ  
2 ἔπαθεν οὐδὲν κακόν,  
**6** <sup>Art</sup> οἱ δὲ προσεδόκων αὐτὸν  
2 μέλλειν πίμπρασθαι  
3 ἢ καταπίπτειν ἄφνω νεκρόν.  
**ἐπὶ πολὺ** δὲ αὐτῶν προσδοκόντων  
καὶ θεωρούντων  
3 **μηδὲν ἄτοπον** εἰς αὐτὸν γινόμενον  
μεταβαλόμενοι  
2 ἔλεγον  
3 <sup>Top</sup> αὐτὸν εἶναι θεόν.
- 7** <sup>Sit</sup> Ἐν δὲ <sup>Sit</sup> τοῖς περὶ τὸν τόπον ἐκεῖνον <sup>Sit</sup> ὑπῆρχεν χωρία  
3 τῷ πρώτῳ τῆς νήσου ὀνόματι Ποπλίῳ,  
ὃς ἀναδεξάμενος ἡμᾶς  
**Ἐμβ** τρεῖς ἡμέρας **Ἐμβ** φιλοφρόνως ἐξένισεν.  
2 **8** ἐγένετο δὲ τὸν πατέρα τοῦ Ποπλίου  
3 **Ἐμβ** πυρετοῖς καὶ δυσεντερίῳ **Ἐμβ** συνεχόμενον κατακεῖσθαι,  
πρὸς ὃν <sup>Top</sup> ὁ Παῦλος <sup>Top</sup> εἰσελθὼν καὶ προσευξάμενος  
ἐπιθεῖς τὰς χεῖρας αὐτῷ  
2 ἰάσατο αὐτόν.
- 9** <sup>Top+</sup> τούτου δὲ γενομένου  
καὶ οἱ λοιποὶ οἱ ἐν τῇ νήσῳ ἔχοντες ἀσθενείας προσήρχοντο καὶ ἐθεραπεύοντο,  
**10** οἱ καὶ **πολλαῖς τιμαῖς** ἐτίμησαν ἡμᾶς  
καὶ ἀναγομένοις  
2 ἐπέθεντο τὰ πρὸς τὰς χρείας.
- 11** <sup>Sit</sup> Μετὰ δὲ <sup>Sit</sup> τρεῖς μῆνας <sup>Sit</sup> ἀνήχθημεν ἐν πλοίῳ  
3 παρακεχειμακότι ἐν τῇ νήσῳ,  
3 Ἀλεξανδρίῳ, παρασήμῳ Διοσκοῦροις.
- 12** καὶ καταθέντες εἰς Συρακούσας  
2 ἐπεμείναμεν ἡμέρας τρεῖς,  
**13** ὅθεν περιελόντες  
2 κατηντήσαμεν εἰς Ῥήγιον.  
καὶ <sup>Sit</sup> μετὰ μίαν ἡμέραν <sup>Sit</sup> ἐπιγενομένου νότου  
<sup>Sit</sup> δευτεραῖοι ἦλθομεν εἰς Ποτιόλους,  
**14** οὗ εὐρόντες ἀδελφοὺς

2 παρεκλήθημεν παρ' αὐτοῖς  
 3 ἐπιμεῖναι ἡμέρας ἑπτά·  
 καὶ οὕτως εἰς τὴν Ῥώμην ἦλθαμεν.  
**15** <sup>Sit</sup> κάκειθεν <sup>Top</sup> οἱ ἀδελφοὶ <sup>Top</sup> ἀκούσαντες τὰ περὶ ἡμῶν  
 2 ἦλθαν εἰς ἀπάντησιν ἡμῖν ἄχρι Ἀπλίου Φόρου καὶ Τριῶν Ταβερνῶν,  
 οὓς ἰδὼν ὁ Παῦλος  
 εὐχαριστήσας τῷ θεῷ  
 2 ἔλαβε θάρσος.  
**16** <sup>Sit</sup> Ὄτε δὲ <sup>Sit</sup> εἰσήλθομεν εἰς Ῥώμην, <sup>Sit</sup>  
 2 ἐπετρόπη τῷ Παύλῳ  
 3 μένειν καθ' ἑαυτὸν σὺν τῷ <sup>Emb</sup> φυλάσσοντι αὐτὸν <sup>Emb</sup> στρατιώτῃ.  
 2 **17** <sup>Emb</sup> Ἐγένετο δὲ  
 3 <sup>Sit</sup> μετὰ ἡμέρας τρεῖς <sup>Sit</sup> συγκαλέσασθαι αὐτὸν τοὺς ὄντας τῶν Ἰουδαίων  
<sup>Emb</sup> πρώτους·  
 συνελθόντων δὲ αὐτῶν  
 2 ἔλεγεν πρὸς αὐτούς,  
<sup>Top</sup> Ἐγώ, ἄνδρες ἀδελφοί, <sup>Constit</sup> οὐδὲν ἐναντίον <sup>Constit</sup> ποιήσας τῷ λαῷ ἢ τοῖς ἔθεσι τοῖς  
 πατρώοις  
<sup>Emb</sup> δέσμιος ἐξ Ἱεροσολύμων <sup>Emb</sup> παρεδόθην εἰς τὰς χεῖρας τῶν Ῥωμαίων,  
**18** οἵτινες ἀνακρίναντές με  
 2 ἐβούλοντο ἀπολῦσαι  
 3 διὰ τὸ <sup>Emb</sup> μηδεμίαν αἰτίαν θανάτου <sup>Emb</sup> ὑπάρχειν ἐν ἐμοί.  
**19** ἀντιλεγόντων δὲ τῶν Ἰουδαίων  
 2 ἠναγκάσθην ἐπικαλέσασθαι Καίσαρα  
 3 οὐχ ὡς <sup>Emb</sup> τοῦ ἔθνους μου <sup>Emb</sup> ἔχων τι κατηγορεῖν.  
**20** διὰ ταύτην οὖν τὴν αἰτίαν παρεκάλεσα ὑμᾶς  
 3 ἰδεῖν καὶ προσλαλήσαι,  
<sup>Emb</sup> ἕνεκεν γὰρ τῆς ἐλπίδος τοῦ Ἰσραὴλ <sup>Th+</sup> τὴν ἄλυσιν ταύτην <sup>Th+</sup> περικείμεαι.  
**21** <sup>Art</sup> οἱ δὲ <sup>Top</sup> πρὸς αὐτὸν <sup>Top</sup> εἶπαν,  
<sup>Top</sup> Ἡμεῖς οὐτε γράμματα περὶ σοῦ ἐδεξάμεθα ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας  
 οὐτε παραγενόμενός τις τῶν ἀδελφῶν  
 2 ἀπήγγειλεν ἢ ἐλάλησέν τι περὶ σοῦ <sup>Emb</sup> πονηρόν·  
 2 **22** ἀξιούμεν δὲ  
 3 <sup>Top</sup> παρὰ σοῦ <sup>Top</sup> ἀκοῦσαι ἃ φρονεῖς,  
<sup>Top+</sup> περὶ μὲν γὰρ <sup>Top+</sup> τῆς αἰρέσεως ταύτης <sup>Top+</sup> γνωστὸν ἡμῖν ἐστίν  
 3 ὅτι πανταχοῦ ἀντιλέγεται.  
**23** Ταξάμενοι δὲ αὐτῷ ἡμέραν  
 2 ἦλθον πρὸς αὐτὸν εἰς τὴν ξενίαν <sup>Emb</sup> πλείονες·  
 2 οἷς ἐξετίθετο  
 3 διαμαρτυρόμενος τὴν βασιλείαν τοῦ θεοῦ,  
 3 πείθων τε αὐτούς περὶ τοῦ Ἰησοῦ ἀπὸ τε τοῦ νόμου Μωϋσέως καὶ τῶν προφητῶν,  
 ἀπὸ πρωῒ ἕως ἑσπέρας.  
**24** καὶ <sup>Art</sup> οἱ μὲν ἐπέειπον τοῖς λεγομένοις,  
<sup>Art</sup> οἱ δὲ ἠπίστουν·  
**25** ἀσύμφωνοι δὲ ὄντες πρὸς ἀλλήλους  
 2 ἀπελύοντο  
 3 εἰπόντος τοῦ Παύλου ῥῆμα ἓν,  
 ὅτι <sup>Emb</sup> Καλῶς τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐλάλησεν διὰ Ἡσαΐου τοῦ προφήτου πρὸς τοὺς πατέρας  
 ὑμῶν  
 3 **26** λέγων,  
 2 <sup>Th+</sup> Πορεύθητι <sup>Th+</sup> πρὸς τὸν λαὸν τοῦτον <sup>Th+</sup>  
 2 καὶ εἰπὸν·  
<sup>Emb</sup> Ἄκουστέ με·  
 2 καὶ οὐ μὴ συνήτε

|   |     |  |
|---|-----|--|
|   |     | καὶ βλέποντες βλέπετε.   |
| 2 |     | καὶ οὐ μὴ ἴδητε.   |
| 2 | 27  | επιζύνθη γὰρ ἡ καρδία Th+ τοῦ λαοῦ τούτου Th+                                |
|   | Top | τοῖς ὦσιν Top βαρέως ἤκουσαν   |
|   | Top | τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν Top ἐσάμψαν·  |
|   | 3   | μήποτε ἴδωσιν τοὺς ὀφθαλμοὺς   |
|   | 4   | καὶ Top τοῖς ὦσιν Top ἀκούσωσιν  |
|   | 4   | καὶ Top τῇ καρδίᾳ Top συνῶσιν  |
|   | 4   | καὶ ἐπιστρέψωσιν,  |
|   | 4   | καὶ ἴασμαι αὐτούς.   |
|   | 28  | γνωστὸν οὖν ἔστω ὑμῖν  |
|   | 3   | ὅτι τοῖς ἔθνεσιν ἀπεστάλη Th+ τοῦτο τὸ σωτήριον τοῦ θεοῦ· Th+                |
|   |     | αὐτοῖ καὶ ἀκούσονται.  |
| 2 | 30  | Ἐνέμεινεν δὲ διετίαν ὅλην ἐν ἰδίῳ μισθώματι                                  |
| 2 |     | καὶ ἀπεδέχετο πάντας τοὺς εἰσπορευομένους πρὸς αὐτόν,                        |
| 3 | 31  | κηρύσσων τὴν βασιλείαν τοῦ θεοῦ  |
| 3 |     | καὶ διδάσκων τὰ περὶ τοῦ κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ μετὰ πάσης παρρησίας ἀκωλύτως. |